प्रतिदर्श प्रश्न पत्र—2025 (हल सहित)

(Issued by Central Board of Secondary Education, New Delhi)

विषय—हिंदी (आधार) | **विषय कोड : 302**

कक्षा—बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **[अधिकतम अंक : 80 अंक**

सामान्य निर्देश—

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।

1. यह प्रश्न-पत्र तीन खंडों में विभाजित है।
2. खंड-क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. खंड-ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
4. खंड-ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
5. तीनों खंडों में प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
6. यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड—क

अपठित बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **10**

अच्छी बात करने वाला सभी का मान-सम्मान हासिल करता है, जबकि अनावश्यक रूप से तिक्त बात करने वाला अपने गुणों के बावजूद समाज में समुचित सम्मान नहीं प्राप्त कर पाता। बात व्यक्तिगत संबंधों की करें या राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की, हर जगह बातों की जादूगरी का बोलबाला है। बातों ने बड़े-से-बड़े युद्ध को रोका है तो बड़ा-से-बड़ा युद्ध करवाया भी है।

बातों की महत्ता इससे साबित होती है कि वह सकारात्मक भाव से कही जा रही हैं या नकारात्मक भाव से। बातें किसी के दिल से निकली हों, वे राग या विराग होती हैं। इसका असर बोलने और सुनने वाले दोनों पर होता है। कबीर कहते हैं ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए, औरन को शीतल करे, आपहूं शीतल होए।

किसी व्यक्ति की सफलता इन्हीं राहों से होकर गुज़रती है। व्यक्ति की बातें उसके व्यक्तित्व का आइना होती हैं। पहले धैर्य के साथ सुनना, समझना, मनन करना, फिर बोलना, यह कला जिस व्यक्ति में होती है वह जीवन की हर बाजी को जीतने की क्षमता रखता है। कोई नौकरीपेशा हो, व्यापारी हो, कलाकार हो या अन्य कार्य करता हो, सभी की सफलता और स्थायित्व के लिए वाकपटुता आवश्यक है। बातों के संदर्भ में एक आवश्यक बात यह भी है कि व्यक्ति की कथनी और करनी में सामंजस्य आवश्यक है। 'कहना कुछ, करना कुछ' जैसी चीज़ें पूरे समाज को चोटिल करती हैं। आजीवन वास्तविक साधुत्व को जीते राष्ट्रपिता गांधी के विवेकपूर्ण और ओजस्वी वक्तृत्व क्षमता के आगे शक्तिशाली फिरंगी और तमाम लोग नतमस्तक हो जाते थे।

(साभार - संगीता सहाय - जनसत्ता - 23 अप्रैल, 2024)

(क) बात का महत्व किस पर आधारित होता है ? **1**

(*i*) माहौल पर
(*ii*) सकारात्मक या नकारात्मक होने पर
(*iii*) संवेदनशीलता पर
(*iv*) बोलने-सुनने वालों पर।

उत्तर—(*ii*) सकारात्मक या नकारात्मक होने पर।

(ख) बापू के आचरण में हमें क्या नहीं मिलेगा ? **1**

(*i*) कथनी-करनी में समानता
(*ii*) साधुत्व
(*iii*) जीतने की इच्छा
(*iv*) वाकपटुता।

उत्तर—(*iv*) वाकपटुता।

(ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए— **1**

कथन (*i*) : बात में सकारात्मक-नकारात्मक ऊर्जा होती है।
कथन (*ii*) : बात सम्मान-अपमान का आधार हो सकती है।
कथन (*iii*) : विवाद का समाधान बात पर आधारित होता है।
कथन (*iv*) : तिक्त बात करने वाले गुणी होते हैं।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं ?

(*i*) केवल कथन (*i*) और (*ii*) सही हैं।
(*ii*) केवल कथन (*ii*) सही है।
(*iii*) केवल कथन (*i*), (*ii*) और (*iii*) सही हैं।
(*iv*) केवल कथन (*iii*) और (*iv*) सही हैं।

उत्तर—(*iii*) केवल कथन (*i*), (*ii*) और (*iii*) सही है।

(घ) व्यक्ति की सफलता का मार्ग क्या है ? **1**

उत्तर—किसी व्यक्ति की सफलता उसकी वाणी पर निर्भर करती है। जो व्यक्ति धर्मभीरू है तथा मीठा व दिल जीतने वाली वाणी बोलता है वह हर बाजी जीतता है।

FOLI FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(ङ) युद्ध करवाने और रोकने की जादूगरी का आधार बातें कैसे हो सकती हैं ? 2

उत्तर—बातों से बड़े-से-बड़ा युद्ध रोका तथा करवाया जा सकता है। सकारात्मक भाव से कही गई बात किसी का दिल जीत सकती है तथा युद्ध को रोक सकती है। हर जगह बातों की जादूगरी का बोल-बाला है।

(च) कबीर के दोहे में वाणी अर्थात बातों की शीतलता से क्या आशय है ? 2

उत्तर—कबीर जी कहते हैं कि हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए कि दूसरे का मन आपके काबू में आ जाए तथा वह वाणी आपको भी तथा दूसरों को भी आनन्द प्रदान करे। कबीर जी का मानना है कि वाणी के माध्यम से हम कठिन-से-कठिन कार्य भी कर सकते हैं तथा किसी के भी दिल को जीत सकते हैं।

(छ) कथनी और करनी का भेद समाज को कैसे चोट पहुँचाता है ? 2

उत्तर—जिस व्यक्ति की कथनी अर्थात् कहने में तथा करनी अर्थात् करने में अन्तर होता है वह व्यक्ति समाज तथा देश के लिए घातक होता है। जो व्यक्ति कहता तो अच्छी-अच्छी बातें है, लेकिन कार्य करते समय दूसरों को हानि पहुँचाता है वह समाज का दुश्मन होता है। वह समाज को चोट पहुँचा कर भाई-चारे को भी ठेस पहुँचाता है तथा भविष्य के लिए गलत उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 2. दिए गए पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 8

एक बार मुझे आँकड़ों की उल्टियाँ होने लगीं
गिनते गिनते जब संख्या
करोड़ों को पार करने लगी
मैं बेहोश हो गया

होश आया तो मैं अस्पताल में था
खून चढ़ाया जा रहा था
ऑक्सीजन दी जा रही थी
कि में चिल्लाया
डाक्टर मुझे बुरी तरह हँसी आ रही
यह हँसाने वाली गैस है शायद
प्राण बचाने वाली नहीं

तुम मुझे हँसने पर मजबूर नहीं कर सकते
इस देश में हर एक को अफ़सोस के साथ जीने का
पैदाइशी हक़ है वरना
कोई माने नहीं रखते हमारी आज़ादी और प्रजातंत्र
बोलिए नहीं-नर्स ने कहा-बेहद कमज़ोर हैं आप
बड़ी मुश्किल से क़ाबू में आया है रक्तचाप

डाक्टर ने समझाया-आँकड़ों का वाइरस
बुरी तरह फैल रहा आजकल
सीधे दिमाग़ पर असर करता
भाग्यवान हैं आप कि बच गए
कुछ भी हो सकता था आपको

—(कवि-कुंवर नारायण)

(क) कवि के अनुसार आँकड़ों से क्या किया जा सकता है ? निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—

कथन (*i*) : आँकड़ों से सच छिपाया जा सकता है। 1

कथन (*ii*) : आँकड़ों से आज़ादी में बाधा उत्पन्न की जा सकती है।

कथन (*iii*) : आँकड़ों से अफ़सोस उत्पन्न होता है।

कथन (*iv*) : आँकड़ों से हँसाया जा सकता है।

निम्नलिखित विकल्पों पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए।

विकल्प—

(*i*) केवल कथन (*i*) सही है।

(*ii*) केवल कथन (*iii*) सही है।

(*iii*) केवल कथन (*ii*) और (*iii*) सही हैं।

(*iv*) केवल कथन (*i*) और (*iv*) सही हैं।

उत्तर—(*iv*) केवल कथन (*i*) और (*iv*) सही हैं।

(ख) कवि की हँसी का संभावित कारण था— 1

(*i*) खून तथा ऑक्सीजन चढ़ाया जाना

(*ii*) हँसाने वाले गैस

(*iii*) गलत और झूठे आँकड़े

(*iv*) आँकड़ों की उल्टियाँ।

उत्तर—(*iii*) गलत और झूठे आँकड़े।

(ग) कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

	कॉलम-1		कॉलम-2
I	आज़ादी और प्रजातंत्र हथियार	(1)	गुमराह रखने का
II	आँकड़ों का वाइरस	(2)	यथार्थ में रहना
III	अफ़सोस के साथ जीना	(3)	सच जानने का अधिकार

(*i*) I-(2), II-(1), III-(3)

(*ii*) I-(1), II-(3), III-(2)

(*iii*) I-(1), II-(2), III-(3)

(*iv*) I-(3), II-(1), III-(2)

उत्तर—(*iv*) I-(3), II-(1), III-(2).

(घ) ''आंकड़ों की उल्टियाँ'' से कवि का क्या तात्पर्य है ? 1

उत्तर—कई बार किसी बात को छुपाने या बढ़ाने के लिए गलत तथा अत्याधिक आंकड़े बता दिए जाते हैं, जिससे इसे समझने वाला व्यक्ति भ्रमित हो जाता है तथा विश्वास नहीं करता। इसी को कवि ने आंकड़ों की उल्टियाँ कहा है।

(ङ) आँकड़ों का वाइरस सीधे दिमाग़ पर कैसे असर करता है ? 2

उत्तर—आंकड़ों का चक्रव्यूह हमेशा व्यक्ति के दिमाग पर सीधा असर करता है। इसकी सच्चाई को जानने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कई बार गलत अथवा अत्यधिक आंकड़े बड़े-बड़े विद्वानों के दिमाग पर गलत असर डालते हैं तथा इनसान भ्रमित हो जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(च) डॉक्टर के अनुसार कवि के साथ कुछ भी हो सकने से क्या तात्पर्य है ? 2

उत्तर—इस वक्तव्य के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जो व्यक्ति आंकड़ों के खेल में अधिक उलझता है तथा उसकी सच्चाई को जानने का प्रयास करता है वह दिमागी रूप से भ्रमित हो जाता है तथा बिना किसी निर्णय पर पहुँचे हताश हो जाता है तथा निराशा के अंधेरे में खो जाता है।

खंड—ख

(अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न)

प्रश्न 3. निम्नलिखित दिए गए प्रश्नों में से किसी *एक* विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : (1 × 6 = 6)

- **विद्यालय का वह खास दिन**
- **बारिश में बिन छतरी**
- **हवाई जहाज के बिना दुनिया**

उत्तर— विद्यालय का वह खास दिन

विद्यालय का प्रत्येक दिन कुछ खास होता है। प्रत्येक दिन विद्यार्थी वहाँ कुछ सीखता है तथा अपने जीवन को आगे बढ़ाता है। मेरे जीवन में भी विद्यालय पढ़ने के दौरान कई दिन ऐसे आए जिन्हें मैं खास दिन कह सकता हूँ उनमें से कुछ दिन ऐसे हैं जो मेरे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं तथा मुझे पूरा जीवन याद रहेंगे व प्रेरणा देते रहेंगे। मेरे लिए दसवीं कक्षा की परीक्षा का पहला दिन खास रहेगा क्योंकि दसवीं की परीक्षा बोर्ड द्वारा संचालित होती है तथा प्रत्येक विद्यार्थी यह चाहता है कि वह इस परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करे। मैं परीक्षा भवन जाते हुए घबरा रहा था। सारी रात पढ़ने के कारण मैं प्रसन्न था कि मेरा पेपर अच्छा होगा। कुछ विद्यार्थी वहाँ पढ़ रहे थे कुछ बड़े खुश नजर आ रहे थे। कुछ विद्यार्थी अधिक गंभीर नजर आ रहे थे। तभी परीक्षा भवन की घंटी बजनी शुरू हुई तथा हमने धड़कते दिल के साथ परीक्षा भवन में प्रवेश किया। परीक्षा शुरू हो गई। मैंने भगवान का नाम लेकर प्रश्न-पत्र पढ़ना शुरू किया। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि सभी प्रश्न मेरे पढ़े हुए थे। मैंने उत्तर लिखना शुरू कर दिया। तीन घंटे मैं लिखता रहा तथा अपना पेपर पूरा किया। मैं बहुत प्रसन्न था क्योंकि मेरा पेपर बहुत उत्कृष्ट हुआ था।

बारिश में बिना छतरी

भारत विभिन्न ऋतुओं का देश है। यहां के लोग प्रत्येक मौसम का भरपूर आनंद लेते हैं। यहां गर्मी भी भरपूर पड़ती है तथा सर्दी भी। इन के साथ यहां वर्षा ऋतु का भी विशेष महत्व है। भारत क्योंकि एक कृषि प्रधान देश है इसलिए वर्षा यहां की अर्थ व्यवस्था में विशेष भूमिका अदा करती है। भारत में वर्षा ऋतु के दौरान मौसम बहुत जल्दी परिवर्तित होता है। सुबह धूप होती है लेकिन बाद में वर्षा का मौसम बन जाता है। जब हम सुबह बिना छाते के निकलते हैं तथा वर्षा आने के कारण भीग जाते हैं तो यहां के लोग इसका भी भरपूर आनंद लेते हैं। वर्षा ऋतु को मिलन की ऋतु भी कहा जाता है। वर्षा पर कई गीत भी बनाए गए हैं। मैं भी बिना छाते के कई बार भीगते हुए इस मौसम का आनंद ले चुका हूँ। गर्मी के दौरान वर्षा में भीगना एक विशेष आनंद प्रदान करता है।

हवाई जहाज के बिना दुनिया

हवाई जहाज मानव की एक ऐसी खोज है जिसने उसके जीवन को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। ऐसा माना जाता है कि इसकी खोज भारत में भगवान राम तथा कृष्ण के समय में हो चुकी थी। इसे पुष्पक विमान आदि के नाम से पुकारा जाता था। वर्तमान समय में इसकी खोज तथा बढ़ते प्रयोग ने दुनियां को नजदीक ला दिया है। हम किसी भी देश में किसी भी समय जा सकते हैं तथा कार्य कर सकते हैं। अगर हवाई जहाज़ न होते तो इनसान जो अलग-अलग देश में रहते हैं वह एक दूसरे को न समझ पाते। आज हम इनके कारण चिकित्सा के क्षेत्र में व्यापार के क्षेत्र में तथा अन्य क्षेत्रों में पूरे संसार से जुड़े हुए हैं। किसी खतरनाक बीमारी का इलाज भी आज हम इनकी मदद से कहीं भी जाकर कर सकते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी भी इनके कारण चरम सीमा तक पहुँच गई है तथा हम इसका लाभ ले रहे हैं। वर्तमान समय में जब इनसान चाँद तक पहुँच गया है तथा उससे आगे भी जाने की सोच रहा है। तब हम हवाई जहाज के बिना जीवन की सुंदरता की कल्पना नहीं कर सकते।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं *चार* प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए : (4 × 2 = 8)

(क) कहानी और नाटक किन बिंदुओं पर समान होते हैं ? 2

(ख) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या अभिप्राय है ? 2

(ग) रेडियो संचार का कैसा माध्यम है ? इसकी कोई दो सीमाएँ लिखें। 2

(घ) फ्रीलांसर पत्रकार कौन होता है ? 2

(ङ) नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कोई दो लाभ बताएँ। 2

उत्तर—(क) कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएं हैं। दोनों का उद्देश्य मनोरंजन करना तथा ज्ञान प्रदान करना है। दोनों में लेखक की सोच दिखाई देती है। कहानी तथा नाटक दोनों के तीन महत्वपूर्ण भाग होते हैं—आरंभ, मध्य और अंत।

(ख) अप्रत्याशित का अर्थ है कुछ भी अचानक हो जाना तथा अप्रत्याशित विषय का अर्थ है ऐसा विषय जो अचानक हमारे सामने आता है तथा हमें अपनी जानकारी के अनुसार कम समय में उससे संबंधित विचारों को संकलित करके सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करना होता है।

(ग) रेडियो जनसंचार का एक महत्वपूर्ण श्रव्य माध्यम है इसके द्वारा हम समाचार सुन सकते हैं। इसकी सीमाएं निम्नलिखित हैं। (1) इसके समाचार अपनी इच्छा अनुसार कभी भी नहीं प्राप्त किए जा सकते इनका उनके समय अनुसार इंतजार करना होता है। (2) रेडियो समाचारों में अगर आप कोई समाचार नहीं सुन पाए या समझ पाए तो उसे तुरंत नहीं सुना जा सकता।

(घ) समाचार पत्रों के लिए कई प्रकार के पत्रकार कार्य करते हैं। उन्हीं में से एक प्रकार फ्रीलांसर पत्रकार का है फ्रीलांसर पत्रकार किसी भी समाचार पत्र से संबंधित नहीं होता है। यह किसी भी समाचार पत्र में अपने लेख को भेज सकता है। इसे उसके लेख के आधार पर भुगतान किया जाता है।

(ङ) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के माध्यम से रटने की प्रवृत्ति समाप्त होती है तथा विद्यार्थी मौलिक लेखन की ओर अग्रसर होता है। जिससे उसके दिमाग का विकास होता है।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 80 शब्दों में उत्तर दीजिए : (2 × 4 = 8)

(क) प्रिंट या मुद्रित माध्यम से आप क्या समझते हैं ? इसकी किन्हीं तीन विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 4

(ख) उलटा पिरामिड शैली किस प्रकार के लेखन की बुनयादी शैली होती है ? इसके मुख्य तीन भागों को स्पष्ट करें। 4

(ग) खेल पत्रकारिता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए बताएँ कि खेल पत्रकार में क्या विशेषताएँ होनी आवश्यक हैं ? 4

उत्तर—(क) प्रिंट तथा मुद्रित माध्यम जनसंचार के वह माध्यम हैं जिन्हें केवल पढ़ा जा सकता है। इसके अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएं तथा पुस्तकें आदि आते हैं। यह जनसंचार का पहला और सबसे प्राचीन माध्यम है। इस माध्यम से प्राप्त सूचना तथा समाचारों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। इसके द्वारा प्राप्त समाचारों को कभी भी अपनी इच्छा अनुसार, पढ़ा तथा समझा जा सकता है। इसके पढ़ने वालों की लिखित भाषा शुद्ध हो जाती है। यह अन्य माध्यमों की अपेक्षा ज्यादा ज्ञान बढ़ाने वाला माध्यम है।

(ख) उलटा पिरामिड-शैली समाचार लेखन की शैलियों में से एक है। यह शैली समाचार लेखन की विशेष शैली है जो सबसे लोक प्रसिद्ध उपयोगी और बुनियादी है। यह शैली कहानी अथवा कथा लेखन की शैली के बिलकुल विपरीत है। इसमें क्लाइमेक्स अंत में आता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथा अथवा सूचना पिरामिड के नीचे के भाग में नहीं होते, अपितु इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है इसलिए इसे उलटा पिरामिड-शैली कहा जाता है।

उलटा पिरामिड-शैली को 19वीं शताब्दी के मध्य में प्रयोग में लाया गया था, परंतु इसका पूर्णतया विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के अंतर्गत हुआ। इस दौरान संवाददाता अपनी खबरें टेलीग्राफ़, संदेशों के माध्यम से भेजते थे, जिसकी सेवाएँ महँगी होने के साथ-साथ अनियमित तथा दुर्लभ थीं। कई बार तकनीकी कारणों के कारण संवाददाताओं को किसी घटना का समाचार कहानी की तरह विस्तार से न देकर संक्षेप में देना पड़ता था। इस प्रकार उलटा पिरामिड-शैली विकसित हुई। धीरे-धीरे यह शैली लेखन की स्टैंडर्ड शैली बन गई। इस प्रकार इस शैली से लेखन एवं संपादन कार्य सुविधापूर्वक होने लगा।

(ग) किसी भी समाचार-पत्र रेडियो टेलीविज़न तथा इंटरनेट के लिए समाचार तैयार करने वाले को पत्रकार कहा जाता है। प्राचीन समय में सभी क्षेत्र के समाचार एक ही पत्रकार तैयार करता था लेकिन वर्तमान में लोगों की उत्सुकता के कारण प्रत्येक क्षेत्र के जानकार उससे संबंधित पत्रकार होते हैं। इन क्षेत्रों में खेल भी महत्वपूर्ण क्षेत्र है। प्रत्येक समाचार पत्र में इसका अलग से पृष्ठ रखा जाता है। इसके पत्रकार में उसे खेलों की संपूर्ण जानकारी होना अनिवार्य है। उसके पास उस खेल से संबंधित आंकड़ों का ज्ञान भी होना चाहिए। उस क्षेत्र के महत्वपूर्ण खिलाड़ियों के बारे में भी वह जानकारी रखता हो। अलग-अलग देशों में भी उसे खेलों की स्थिति की जानकारी होनी चाहिए। इन सबसे बढ़कर वह खेलों में अत्यधिक रुचि भी रखता हो तभी वह एक स्पष्ट समाचार दे पाएगा।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (5 × 1 = 5)

फिर-फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा धीर।
हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार-
श्स्य अपार,
हिल-हिल
खिल-खिल,
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

(क) क्रांति का लाभकारी वर्ग होता है— 1

(*i*) पूँजीपति (*ii*) छोटे पौधे
(*iii*) बड़े पेड़ (*iv*) शोषित वर्ग।

उत्तर—(*iv*) शोषित वर्ग।

(ख) 'गगन-स्पर्शी स्पर्धा-पंक्ति के अनुसार दिए गए कथनों पर विचार करते हुए सही कथन को चयनित कर लिखिए। 1

(*i*) आसमान को छूने की कोशिश
(*ii*) बादलों को छूने की चाह
(*iii*) अत्यधिक महत्वाकांक्षी होना
(*iv*) चुनौतियों का सामना करना।

उत्तर—(*iii*) अत्यधिक महत्वाकांक्षी होना।

(ग) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—''क्रांति के ..... के जैसे वज्र गर्जना'' 1

(*i*) हथियारों (*ii*) बादलों
(*iii*) वीरों (*iv*) मूसलधार।

उत्तर—(*ii*) बादलों।

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1

कथन (A) : क्रांति से शोषकों के शोषण का अंत संभव है।
कारण (R) : क्रांति शोषितों के अधिकार सुनिश्चित करवा पाती है।

(*i*) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।
(*ii*) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।
(*iii*) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(*iv*) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर—(*iv*) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(ङ) तेज बरसात या क्रांति से कौन धराशायी हो जाते हैं ? 1

(*i*) गरीब और अमीर लोग
(*ii*) बड़े वृक्ष और छोटे पौधे
(*iii*) बड़े वृक्ष और पूँजीपति
(*iv*) बड़े वृक्ष और सर्वहारा।

उत्तर—(*iii*) बड़े वृक्ष और पूँजीपति।

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए : (2 × 3 = 6)

(क) दिन ढलने के बाद लौट रहे राही के कदम शिथिल क्यों हो जाते हैं ? पाठ 'एक गीत' के आधार पर उत्तर दीजिए। 3

(ख) पाठ कवितावली के आधार पर स्पष्ट करें कि क्या तुलसी युग की समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं ? 3

(ग) 'छोटा मेरा खेत' कविता में- कवि कागज़ को खेत का ही रूप क्यों मानता है ? 3

उत्तर—(क) कवि कहता है कि जब-जब पथिक के हृदय में यह प्रश्न उठता है कि कौन उसके लिए व्याकुल है अर्थात कौन उसकी प्रतीक्षा कर रहा है तो यह प्रश्न उसके पाँवों को कमज़ोर कर देता है और यह उसे सुस्त बना देता है और इससे राही के हृदय में अपार व्याकुलता भर जाती है क्योंकि उसे लगता है कि किसी को उसकी प्रतीक्षा नहीं है।

(ख) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है—तुलसी का यह काव्य-सत्य समकालीन युग में भी सत्य था और आज भी सत्य है। भक्त यदि भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से भक्ति और कर्म करे तो पेट की आग ही नहीं, वरन भक्त का उद्धार भी हो सकता है। इस सृष्टि में ईश्वर ही सत्य, वही जन्मदाता और पालनहार है फिर जिस प्रभु ने जन्म दिया हो क्या वह अपने बच्चों का पेट नहीं भरेगा। भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर जब ईश्वर भक्ति का मेघ बरसता है तो भक्त को संपूर्ण संसार की खुशियाँ मिल जाती हैं। इस प्रकार यदि भक्त भगवान के प्रति एकनिष्ठ भक्ति करता है और अपना कर्म भी निष्ठापूर्वक निभाता है तो ईश्वर उसकी पेट की आग को ही शांत नहीं करता, बल्कि उसके जीवन का भी उद्धार कर देता है।

(ग) छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में यह अर्थ निहित है कि जिस प्रकार कागज़ का पन्ना चौकोर होता है उसी प्रकार खेत भी चौकोर होता है। खेत में बीज बोया जाता है फिर उसमें रसायन तत्व, पानी आदि डाले जाते हैं। तत्पश्चात उसमें से बीज अंकुरित होते हैं। वे अंकुर पत्तों और फूलों के रूप में पल्लवित होकर एक दिन पूर्णत: फ़सल बन जाते हैं। फिर एक दिन उस फ़सल की कटाई कर दी जाती है। ठीक इसी प्रकार कागज़ के पन्ने पर किसी कल्पना के सहारे कवि द्वारा अभिव्यक्ति रूपी बीज बोया जाता है। फिर वह बीज मूल कल्पना से विकसित होकर इस प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है, उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: वह एक पूर्ण कृति का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। उसमें से एक ऐसी अमृत रस-धारा निकलती है जो अनंतकाल तक समाप्त नहीं होती है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए : (2 × 2 = 4)

(क) कविता 'बात सीधी थी पर'— में किसी बात को पेचीदा कैसे किया जाता है ? 2

(ख) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता—आज के मीडिया पर प्रासंगिक व्यंग्य है, कैसे ? 2

(ग) रुबाइयाँ पाठ में—''आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है, बालक तो हई चाँद पै ललचाया है''—में व्यक्त बालपन को रेखांकित करें। 2

उत्तर—(क) जब हम किसी को कोई बात कहना चाहते हैं तो उसके लिए हमें उन्हीं उचित शब्दों का चयन करना पड़ता है जिनसे हमारी बात उस व्यक्ति तक स्पष्ट रूप से पहुँच जाए और वह हमारी बात कहने का मतलब भी समझ जाए, नहीं तो कई बार सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। जैसे हमने किसी को मारना नहीं है और हम कहते हैं 'मारो, मत छोड़ो' तो सुनने वाला उसे मार देगा। हमें कहना चाहिए था 'मारो मत, छोड़ो'। इस प्रकार से सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।

(ख) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से ली गई है। इसमें कवि ने शारीरिक चुनौती को झेलते लोगों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि कैमरे के सामने अपने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु ऐसे लोगों से बेतुके सवाल पूछे जाते हैं। इसमें कवि ने एक तरह से पीड़ा के साथ दृश्य-संचार माध्यम के संबंध को रेखांकित किया है जो दिखाता है कि करुणा जगाने के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम किस तरह क्रूर बन जाता है। यह कविता ऐसे लोगों की तरफ़ संकेत करती है जो अपने दु:ख-दर्द, वेदना-यातना को बेचना चाहते हैं। इसी प्रकार की सोच आज के मीडिया में अभी भी विद्यमान है।

(ग) कवि कहता है कि बच्चा आँगन में सिसक रहा है। उसका दिल चाँद पर आ गया है और उसने चाँद पाने के लिए जिद पकड़ रखी है। वह तो बच्चा है, उसे क्या मालूम कि चाँद को पाना नामुमकिन है।

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (5 × 1 = 5)

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी—'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है! सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी उर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो काल देवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

(क) गद्यांश के अनुसार मूर्ख क्या समझते हैं ? 1

(*i*) जहाँ हैं, वहीं पर बने रहेंगे।
(*ii*) प्राण और कालाग्नि में संघर्ष निश्चित है।
(*iii*) कि वे बहुत भोले-भाले हैं।
(*iv*) बदलाव आवश्यक है।

उत्तर—(*i*) जहाँ हैं, वहीं पर बने रहेंगे।।

(ख) पुराने फूल-पत्तों को यह क्यों समझना आवश्यक है कि—''झड़ना निश्चित है'' ? 1

(*i*) क्योंकि तुलसीदास ने इसे ही सत्य माना है
(*ii*) महाकाल देवता के कोड़े चलने के कारण

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*iii*) जन्म और मृत्यु जगत का प्रामाणिक सत्य है

(*iv*) जन्म और मृत्यु के आपसी संघर्ष के कारण।

उत्तर—(*iii*) जन्म और मृत्यु जगत का प्रामाणिक सत्य है।

(ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए। 1

(*i*) अफ़सोस जीवन का सच है।

(*ii*) जो चीज़ फलती-फूलती है, उसका अंत निश्चित है।

(*iii*) न्याय का चक्र गतिमान है।

(*iv*) अधिकार प्राप्ति संघर्ष से ही संभव है।

उत्तर—(*ii*) जो चीज़ फलती-फूलती है, उसका अंत निश्चित है।

(घ) कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1

कॉलम-1		कॉलम-2	
I	जीवन का सत्य	(1)	अधिकार-लिप्सा
II	जीवन की स्थिरता	(2)	दुरंत प्राणधारा
III	जीवन की गतिशीलता	(3)	बुढ़ापा और मरणशीलता

(*i*) I-(3), II-(1), III-(2)

(*ii*) I-(1), II-(3), III-(2)

(*iii*) I-(1), II-(2), III-(3)

(*iv*) I-(2), II-(1), III-(3)

उत्तर—(*i*) I-(3), II-(1), III-(2).

(ङ) गद्यांश का केंद्रीय भाव हो सकता है— 1

(*i*) सभी को अपने प्राण प्रिय हैं

(*ii*) स्थिर रहना भोलापन है

(*iii*) स्थिरता संघर्ष से आती है

(*iv*) परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

उत्तर—(*iv*) परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

प्रश्न 10. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं *दो* प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए : (2 × 3 = 6)

(क) भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायत द्वारा किए गए अन्याय पर टिप्पणी कीजिए। 3

(ख) 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताएँ कि भगत जी का व्यक्तित्व बाज़ार को कैसे सार्थकता देता है ? 3

(ग) ''काले मेघा पानी दे'—विज्ञान के तथ्य पर सहज प्रेम की विजय है।''—आशय स्पष्ट करें। 3

उत्तर—(क) भक्तिन महादेवी वर्मा जी का एक प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो स्मृति की रेखाओं से संकलित है। इसमें महादेवी जी ने अपनी सेविका लक्ष्मी अर्थात भक्तिन के अतीत एवं वर्तमान का परिचय देते हुए उसका चरित्र चित्रण किया है। भक्तिन की बड़ी बेटी जब विधवा हो गई तब उसके जेठ के साले ने उससे जबरन शादी करनी चाही तथा बदनाम भी किया लेकिन गलती भक्तिन की बेटी की निकाल कर पंचायत ने उसका विवाह उस शराबी व्यक्ति से कर दिया। जिससे भक्तिन व उसकी बेटी को बहुत दुःख हुआ। यह पंचायत का एक अन्याय था।

(ख) बाज़ार में भगत जी का स्वाभिमानी, निश्चेष्ट, आत्मसंयमी, मितव्ययी, दृढ़-निश्चयी आदि विशेषताओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। भगत जी एक स्वाभिमानी और निश्चेष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं जिन्हें बाज़ार का आकर्षण, सौंदर्य, चहल-पहल, बड़ी-बड़ी दुकानें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकतीं और न ही उनके स्वाभिमान को डिगा सकती हैं। वे आत्मसंयमी और मितव्ययी पुरुष हैं। धन की कमी न होने के कारण भी वे बाज़ार में फिजूलखर्ची पर विश्वास नहीं करते। केवल उतनी ही वस्तुएँ खरीदते हैं जितनी उनकी आवश्यकता है और वे भी केवल अच्छे मूल्य में खरीदते हैं। बाज़ारू आकर्षण में फँसकर धन को नहीं लुटाते। हाँ हमारी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है। जिस प्रकार शांत, निश्चेष्ट, संयमी भगत जी का आचरण है और जैसे वह बाज़ार के आकर्षण और सौंदर्य को देखकर उससे ज़रा-सा भी मोहित नहीं होता इसी प्रकार यदि आज के उपभोक्तावाद और बाज़ारवाद के समाज में यदि प्रत्येक मनुष्य स्वाभिमान, संयम, मितव्यय और दृढ़ निश्चय से अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ खरीदे। बाज़ार के आकर्षण और सौंदर्य में फँसकर अनुपयोगी वस्तुओं को न ले तो वास्तव में उसका मन अशांत नहीं होगा। वह अपने मन में बेकार की इच्छाओं को वश में करके यदि फ़िजूलखर्ची पर काबू पा लेगा तो उसका जीवन भी शांत, स्वाभिमानी, मितव्ययी बन जाएगा। यदि समाज का प्रत्येक मनुष्य ऐसा करे तो निश्चय ही समाज में शांति स्थापित होगी।

(ग) 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण धर्मवीर भारती द्वारा लिखित है। इसमें लेखक ने लोक आस्था और विज्ञान के द्वंद्व का सुंदर चित्रण किया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास की अपनी सामर्थ्य है। लेखक ने किशोर जीवन के इस संस्मरण में दिखलाया है कि अनावृष्टि से मुक्ति पाने हेतु गाँव के बच्चों की इंदर सेना द्वार-द्वार पानी माँगने जाती है। लेखक का तर्कशील किशोर-मन भीषण सूखे में उसे पानी की निर्मम बरबादी समझता है। लेखक की जीजी इस कार्य को अंध-विश्वास न मानकर लोक आस्था के त्याग की भावना कहती है। लेखक बार-बार अपनी जीजी के तर्कों का खंडन करता हुआ इसे पाखंड और अंध-विश्वास कहता है। लेकिन जीजी की संतुष्टि और अपने सद्भाव को बचाए रखने के लिए वह तमाम रीति-रिवाज़ों को ऊपरी तौर पर सही मानता है लेकिन अंतर्मन से उनका खंडन करता चलता है। जीजी का मानना है कि परम आवश्यक वस्तु का त्याग ही सर्वोच्च दान है। पाठ के अंत में लेखक ने देशभक्ति का परिचय देते हुए देश में फैले भ्रष्टाचार के प्रति गहन चिंता व्यक्त की है तथा उन लोगों के प्रति कटाक्ष किया है जो आज भी पश्चिमी संस्कृति और भाषा के अधीन हैं तथा भ्रष्टाचार को अनदेखा कर रहे हैं या उसमें लिप्त हैं।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं *दो* प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए : (2 × 2 = 4)

(क) लुट्टन पहलवान की किन *दो* चारित्रिक विशेषताओं को आप अपने जीवन में समायोजित करना चाहेंगे ? 2

(ख) शिरीष के फूल पाठ के आधार पर स्पष्ट करें कि लेखक गाँधी जी और शिरीष को एक समान क्यों बताता है ? 2

(ग) बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के अनुसार दासता की व्यापक परिभाषा क्या है ? 2

उत्तर—(क) ***(i)* साहसी**—लुट्टन सिंह पहलवान अत्यंत साहसी था। वह सुडौल और हट्टा-कट्टा था। वह प्रत्येक परिस्थिति का डटकर सामना करता था। वह कभी घबराता नहीं था। अपने साहस के बल पर उसने प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को हरा दिया था। महामारी

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

फैलने के कारण जब रात्रि की विभीषिका से सारा गाँव शिशुओं की तरह थर-थर काँपता था, तब लुट्टन सिंह अकेला सारी रात ढोलक बजाया करता था। यह उसके साहस का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

***(ii)* निडर**—लुट्टन सिंह एक निडर पुरुष था। जब सारा गाँव महामारी के कारण भयभीत होकर अपनी झोंपड़ियों में गुम हो जाता था, तब अकेला लुट्टन सिंह रात्रि के सन्नाटे में निडरता से अपना ढोल बजाया करता था। श्यामनगर के दंगल में भी वह चाँद सिंह जैसे प्रसिद्ध पहलवान के साथ लड़ते हुए नहीं डरा। राजा के मना करने पर भी निडरता से चाँद सिंह के साथ कुश्ती की तथा अंत में उसे हराया। पहलवान को दंगल में हराना ही उसका निडरता का उदाहरण है।

सहयोगी—लुट्टन सिंह पहलवान होने के साथ-साथ एक संवेदनशील व्यक्ति भी था। वह दु:ख-सुख में सभी गाँव वालों का साथ देता था। महामारी में जब गाँव में कहर मचा हुआ था, तब वह लोगों में जीने की उमंग पैदा करने के लिए रात में ढोल बजाया करता था। दिन में वह घर-घर जाकर अपने पड़ोसियों और गाँववालों का हाल-चाल पूछकर उन्हें धैर्य देता था।

(ख) शिरीष विपरीत स्थितियों में भी डटकर कष्टों को झेलता है और सभी को छाया और सुगंध प्रदान करता है। प्रचंड लू भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। महात्मा गांधी भी ब्रिटिश शासनकाल की खून-खच्चर भरी राजनीति में अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार से अहिंसा और उदारता का पाठ देशवासियों को पढ़ाते रहे जिसके परिणामस्वरूप देश ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी। इसी कारण लेखक ने दोनों की तुलना की है।

(ग) लेखक के अनुसार 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता से नहीं हैं, बल्कि दासता में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं *दो* प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए : (2 × 5 = 10)

(क) कहानी 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर उन भारतीय जीवन-मूल्यों को समझाएँ जो समय के साथ बदल रहे हैं। 5

(ख) कविता के प्रति लगाव के बाद लेखक की अकेलेपन को लेकर धारणा क्यों बदल गई ? 'जूझ' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 5

(ग) यदि आप पर्यटक के रूप में मोहनजोदड़ो जाएँ तो आप क्या-क्या देख सकते हैं ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर लिखें। 5

उत्तर—(क) आधुनिक युग परिवर्तनशील एवं अधिक सुविधासंपन्न है। आज के युवा अपने अनुसार सोचते हैं। वे तत्काल नई जानकारियाँ चाहते हैं जिसके लिए उसके पास कंप्यूटर, इंटरनेट एवं मोबाइल जैसी आधुनिक तकनीक है। इसके माध्यम से वे कम समय में ज़्यादा जानकारी एकत्र कर लेते हैं। घर से विद्यालय जाने के लिए अब उनके पास बढ़िया साइकिलें एवं मोटर-साइकिलें हैं। इनके माध्यम से उनका समय बच जाता है और वे समय पर विद्यालय और विद्यालय से घर पहुँच जाते हैं। आज युवा लड़कों और लड़कियों के बीच का अंतर काफ़ी कम हो गया है। पुराने ज़माने में लड़कियाँ लड़कों के साथ इतना घुल-मिलकर नहीं रहती थीं जैसे आज के पार्टियाँ कर लेते हैं। नशीले द्रव्यों और पदार्थों का सेवन कर लेते हैं। इंटरनेट के माध्यम से अश्लील चित्र और असभ्य जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। ये सारी बातें उन्हें आधुनिक एवं सुविधाजनक लगती हैं।

दूसरी ओर ये सभी बातें बुजुर्गों को अच्छी नहीं लगतीं। क्योंकि जब वे अपने समय में युवा थे, उस समय संचार के साधनों की कमी थी। पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण युवा अपनी भावनाओं को काबू में रखते थे। अपने से बड़ों के सामने अदब से बात करते थे और बड़ों की तरह ही सोचते थे। आज वे बड़ों की तरह नहीं सोचते। वे अपनी मर्ज़ी के मालिक हैं। भारतीय संस्कारों और मर्यादाओं को वे बीते ज़माने की बातें कहते हैं। उनकी इसी सोच को बुजुर्ग बुरा समझते हैं। आधुनिक परिवेश के युवा बड़े-बढ़ों के साथ बहुत कम समय व्यतीत करते हैं, इसलिए सोच एवं दृष्टिकोण में अधिक अंतर आ जाता है। इसी अंतर को 'पीढ़ी-अंतराल' कहते हैं। इस प्रकार युवा पीढ़ी की यही नई सोच बुजुर्गों को अच्छी नहीं लगती।

(ख) मास्टर सौंदलगेकर लेखक को पाँचवी कक्षा में मराठी पढ़ाते थे। कविता पढ़ाते समय वे स्वयं भी उसमें डूब जाते थे। उनके पास सुरीला गला और छंद की बढ़िया चाल भी थी। उन्हें मराठी के साथ-साथ अंग्रेज़ी की भी कुछ कविताएँ कंठस्थ थीं। जब वे कविता सुनाते थे तब साथ-साथ अभिनय भी किया करते थे। लेखक उनकी कविताएँ पूरी तल्लीनता से सुनते थे। वे अपनी आँखों और कानों की पूरी शक्ति लगाकर दम रोककर मास्टर जी के हाव-भाव, ध्वनि, यति, गति, चाल और रसों का आनंद लिया करते थे।

लेखक खेतों में पानी लगाते समय खुले गले से मास्टर जी के हाव-भाव और आरोह-अवरोह के अनुसार कविताएँ गाया करते थे। जिस प्रकार मास्टर जी अभिनय करते थे उसी प्रकार लेखक भी अभिनय करते थे। इस प्रकार लेखक भी कविताओं के साथ खेलने लगे। इन कविताओं के माध्यम से लेखक में नई रुचियाँ पैदा होने लगीं। पहले जब वे खेतों में पानी लगाते थे उस समय उन्हें अकेलापन खटकता था। अगर काम करते समय कोई साथ नहीं हैं तो उन्हें बोरियत होती थी, इसलिए कोई-न-कोई साथ होना चाहिए। लेकिन कविता के प्रति लगाव होने के पश्चात उन्हें अकेलापन नहीं खटकता था। बल्कि अब उन्हें अकेलापन अच्छा लगता था क्योंकि अकेलेपन में कविता ऊँची आवाज़ में गाई जा सकती थी। कविता के भाव के अनुसार अभिनय भी किया जा सकता था। लेखक अब कविता गाते-गाते नाचने लगते थे। इस प्रकार कविता के प्रति लगाव ने लेखक की अकेलेपन की धारणा को बदल दिया।

(ग) अतीत में दबे पांव, ओम थानवी जी का एक यात्रा वृतांत है। जिसमें सिंधु घाटी की सभ्यता के दो महानगरों मुअहन-दड़ों तथा हड़प्पा की संस्कृति का वर्णन किया है। अगर मैं वहां घूमने जाऊँ तो मैं उस समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थिति के बारे में जानना चाहूंगा। वे लोग कैसे रहते थे उनके मकान कैसे थे वह क्या खाते थे तथा पहनते थे खेती किस प्रकार करते थे युद्ध करते थे या नहीं आदि जानना चाहूंगा। वहाँ उपलब्ध सभी चीज़ों को देखकर अनुमान लगाना चाहूंगा तथा स्वयं को तत्कालीन परिस्थितियों में अनुभव करूंगा।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–1

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं

विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश—

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :—

(*i*) यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।

(*ii*) **खंड–क** में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(*iii*) **खंड–ख** में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

(*iv*) **खंड–ग** में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

(*v*) तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(*vi*) यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (ख) भारत
(2) (घ) भविष्य
(3) (घ) केवल कथन (III) और (IV) सही हैं।
(4) हिंदी पत्रकारिता को
(5) पत्रकारिता
(6) हिन्दी
(7) जहाँ हर सूचना शीघ्रता से पहुंच जाती है।

उत्तर—2. (1) (ग) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।
(2) (ग) आज़ादी के समर्थक हैं।
(3) (ख) नीर, कनक, आवास और सुरक्षा।
(4) वह आज़ाद जीवन जीना पसंद करती है।
(5) भयावह स्थिति उत्पन्न करना।
(6) तन और मन की स्वतन्त्रता।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) **पकी फसल से लहलहाता खेत–** मौसम की मेहरबानी से धान की फसलें लहलहा उठी हैं। अपने खेत में लहलहाते धान की फसल देखकर किसानों के चेहरे पर खुशी साफ झलक रही है। किसानों को पिछले दस वर्ष के बाद अच्छे से पकी फसल को देखने का मौका मिला। कृषि विभाग की कृपा से किसान शत-प्रतिशत धान की बेहतर फसल लेने में सक्षम दिख रहे हैं। अच्छी फसल होने की उम्मीद से किसान की खुशी का ठिकाना नहीं है। धान के निकल रहे कल्लों से खेत भर गए थे। मानो मौसम के बदलाव ने किसानों की किस्मत बदल दी हो। रोपनी से ऊबर चुके किसान पहली निराई को अंतिम रूप दे चुके थे। अब बारिश ने खेतों को नमी दी। तदन्तर परिपक्वावस्था का समय गुजरा। अब फसल स्वर्ण रंग से लहलहाती हुई दिखाई दे रही हैं। सुनहरी धान की बालियाँ झूम-झूमकर मानो किसानों के मधुरिम संगीत के साथ नर्तन का संकेत दे रही हैं। किसानों के साथ बल खाती नाजुक बालियाँ उनके साथ अठखेलियाँ कर रही हैं। फसल के घर आते ही किसान समष्टद्धि के पल भोगने की उम्मीद कर रहा है। उसका भरा-पूरा परिवार आनंदमय होने वाला है।

(*ii*) **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**

मानव-शरीर यदि रथ के समान है तो यह मन उसका चालक है। मनुष्य के शरीर की असली शक्ति उसका मन है। मन के अभाव में शरीर का कोई अस्तित्व ही नहीं। मन ही वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य से बड़े-से-बड़े काम करवा लेती है। यदि मन में दुर्बलता का भाव आ जाए तो शक्तिशाली शरीर और विभिन्न प्रकार के साधन व्यर्थ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए एक सैनिक को लिया जा सकता है। यदि उसने अपने मन को जीत लिया है तो वह अपनी शारीरिक शक्ति एवं अनुमान से कहीं अधिक सफलता दिखा सकता है। यदि उसका मन हार गया तो उसके द्वारा प्रयोग किए गए बड़े-बड़े मारक अस्त्र-शस्त्र भी अपना प्रभाव नहीं दिखा सकते। मन की शक्ति के बल पर ही मनुष्य ने अनेक आविष्कार किए हैं। मन की शक्ति मनुष्य को अनवरत साधना की प्रेरणा देती है और विजयश्री उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती है। जब तक मन में संकल्प एवं प्रेरणा का भाव नहीं जागता तब तक हम किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। एक ही काम में एक व्यक्ति सफलता प्राप्त कर लेता है और दूसरा असफल हो जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

इसका कारण दोनों के मन की शक्ति की भिन्नता है। जब तक हमारा मन शिथिल है तब तक हम कुछ भी नहीं कर सकते। अत: ठीक ही कहा गया है—''**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**''

(*iii*) आवश्यकता आविष्कार की जननी है

आवश्यकता अनेक आविष्कारों को जन्म देती है। शारीरिक तथा बौद्धिक दोनों प्रकार के बल का उपयोग करके मनुष्य ने अपने लिए अनेक सुविधाएँ जुटाई हैं। इन्हीं आविष्कारों के बल पर मनुष्य आज सुख-सुविधा के झूले में झूल रहा है। जब उसने अनुभव किया कि बैलगाड़ी की यात्रा सुविधाजनक नहीं है और न ही इससे समय की बचत होती है। तो उसने तेज़ गति से चलने वाले वाहनों का आविष्कार किया। रेल, कार तथा वायुयान आदि उसकी आवश्यकता की पूर्ति करने वाले साधन हैं। बिजली के अनेक चमत्कार, टेलीफ़ोन आदि भी मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति करने वाले साधन हैं। इन आविष्कारों की कोई सीमा नहीं। जैसे-जैसे मानव-जाति की आवश्यकता बढ़ती है वैसे-वैसे नए आविष्कार हमारे सामने आते हैं। मनुष्य की बौद्धिक के विकास के साथ ही आविष्कारों की भी संख्या बढ़ती जाती है। अत: यह ठीक ही कहा है कि 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है।'

4. (*i*) 1. भाषा शुद्ध होनी चाहिए

2. व्याकरणिक कमियाँ नहीं होनी चाहिए।

3. सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(*ii*) कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें निम्नलिखित असमानताएँ हैं, जो इस प्रकार है–

कहानी–

1. कहानी में जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन-पूर्ण चित्रण किया जाता है।

2. कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।

3. कहानी सुनी अथवा पढ़ी जाती है।

4. कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर विभाजित किया जाता है।

5. कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा रोशनी की उपयोगिता नहीं है।

नाटक–

1. नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

2. इसका संबंध लेखक, निर्देशाक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।

3. नाटक का मंच पर पात्रों द्वारा अभिनय किया जाता है।

4. इसको दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

5. इसमें मंच सज्जा, संगीत और रोशनी की व्यवस्था का विशेष महत्व होता है।

(*iii*) रेडियो श्रव्य माध्यम है। ध्वनि, स्वर और श8दों के मेल के कारण रेडियो को श्रोताओं द्वारा संचालित माध्यम माना जाता है। इस कारण रेडियो पत्रकारों को अपने श्रोताओं का पूरा ध्यान रखना पड़ता है योंकि समाचार-पत्रों के पाठकों को अपनी पसंद और अपनी इच्छा से कभी भी और कहीं भी समाचार पढ़ने को मिल सकते हैं। लेकिन रेडियो के श्रोता को यह सुविधा प्राह्मश्वत नहीं होती। वह समाचार-पत्रों की तरह रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुन सकता। उसे बुलेटिन के प्रसारण समय का इंतज़ार करने के पश्चात शुरू से लेकर अंत तक सभी समाचारों को सुनना पड़ेगा। इस दौरान न तो वह इधर-उधर आ-जा सकता है और न ही वह श8दकोश में अर्थ ढूँढ़ सकता है योंकि ऐसा करने पर बुलेटिन आगे निकल जाएगा।

अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रेडियो में समाचार-पत्रों की तरह पिछले समाचार को द्वारा सुनने की सुविधा नहीं होती। रेडियो एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। रेडियो की तरह दूरदर्शन भी एक रेखीय माध्यम है, जिसमें शब्दों और ध्वनियों की तुलना में दृश्यों एवं तस्वीरों का अधिक महत्व है।

(*iv*) किसी भी समाचार को लिखने के लिए छह प्रश्नों का उत्तर आवश्यक माना जाता है। या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ? इन्हीं छह प्रश्नों का दूसरा नाम ककार है। इन्हीं छह ककारों को ध्यान में रखकर ही किसी घटना, समस्या और विचार आदि से संबंधित खबर लिखी जाती है। समाचार के आरंभ में जब पैराग्राफ़ लिखना शुरू किया जाता है तब शुरू की दो-तीन पंक्तियों में 'या', 'कौन', 'कब' और 'कहाँ'? इन तीन या चार ककारों को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। उसके पश्चात समाचार के मध्य में और समापन से पूर्व 'कैसे' और 'यों' जैसे ककारों का उत्तर दिया जाता है। इस तरह इन छह ककारों को ध्यान में रखकर समाचार लिखा जाता है। पहले चार ककारों का प्रयोग सूचना और तथ्यों के लिए किया जाता है। परंतु 'कैसे' और 'यों' ककारों द्वारा विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलुओं पर बल दिया जाता है। इस प्रकार समाचार लेखन की पूरी प्रक्रिया में इन छह ककारों का विशेष महत्व है।

(*v*) कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में निम्न प्रकार से परिवर्तित किए जा सकते हैं—

1. नाट्य-रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता का नाटक के पात्रों से मेल होना चाहिए।

2. पात्रों की भाव-भंगिमाओं तथा उनके व्यवहार का भी उचित ध्यान रखना चाहिए।

3. पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।

4. पात्र अभिनय के अनुरूप होने चाहिए।

5. पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए।

5. (*i*) इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता आदि नामों से भी जाना जाता है। जिन लोगों को चौबीसों घंटे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है या जो लोग इंटरनेट के अयस्त हैं उन्हें अब कागज़ पर छपे हुए अखबार ताज़े नहीं लगते।

भारत में कंम्पयूटर साक्षरता की दर दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रत्येक वर्ष 50-55 +फीसदी की रफ्तार से इंटरनेट कनेशनों की संख्या बढ़ती जा रही है। इंटरनेट पर एक ही क्षण में हम एक साथ कई खबरें पढ़ सकते हैं।

इंटरनेट एक प्रकार का औज़ार है। इसे हम सूचना, मनोरंजन, ज्ञान, व्यक्तिगत और सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए प्रयोग कर सकते हैं। इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का साधन है वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी माध्यम है।

इंटरनेट पत्रकारिता का रूप प्रचलित हो चुका है। यह रूप औज़ार के तौर पर इस्तेमाल होता है अर्थात खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग होता है। रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह ई-मेल

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

के ज़रिए भेजता है। वह इसका प्रयोग समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण के लिए भी करता है। इंटरनेट के माध्यम से चंद मिनटों में विश्वव्यापी जाल के भीतर से कोई भी पिछली पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है। समय के साथ-साथ इसके शब्दकोश में वृद्धि होती जा रही है। पहले एक मिनट में 80 शब्द एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा सकते थे, परंतु आज एक सेकिंड में 56 किलोबाइट अर्थात लगभग 70 हज़ार शब्द भेजे जा सकते हैं।

(*ii*) स्वच्छता स्वास्थ्य का प्रतीक है। जहाँ स्वच्छता होती है वहाँ स्वास्थ्य भी अच्छा होता है। स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत की परिकल्पना आधुनिक युग की सोच है। यदि भारत स्वच्छ रहेगा तभी भारत स्वस्थ बन पाएगा। इसके विपरीत यदि देष्ठा में चारों तर.फ गंदगी, कूड़े के ढेर होंगे तो हम स्वस्थ होने की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह अभियान देष्ठा के कोने-कोने में चलाया जा रहा है कि हमने भारत को स्वच्छ बनाना है। बुज़ुर्ग ही नहीं युवा वर्ग भी इस अभियान में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। जहाँ भी गली-मोहल्ले, गाँव, शहर, पार्क में कूड़ा-कर्कट, गंदगी मिले वहाँ स्वच्छता अभियान चलाया जाना चाहिए। जब देश का प्रत्येक आदमी आत्मिक रूप से इस अभियान से जुड़ जाएगा तब वास्तव में यह अभियान सफल हो जाएगा। यदि हमें अपने स्वास्थ्य को ठीक रखना है तो अपने चारों तरफ के वातावरण को स्वच्छ रखना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए। जब प्रत्येक देशवासी अपने चारों ओर का वातावरण स्वच्छ बनाने में अपनी कर्मनिष्ठा से और ईमानदारी से कर्म करेगा तब भारत अवश्य ही स्वस्थ होगा। अत: यह सत्य है कि स्वच्छ भारत तो स्वस्थ भारत।

(*iii*) कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
2. नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।
3. नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
4. कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।
5. संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावपूर्ण शैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।
6. संवाद अधिक लंबे और उबाऊ नहीं होने चाहिए।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (घ) दूरदर्शन वालों को
(2) (ख) अभिनेता व अभिनेत्री को
(3) (क) अपाहिज को
(4) (क) व्यवस्था पर
(5) (क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।

उत्तर—7. (*i*) **प्रेम और सौंदर्य—**हरिवंश राय बच्चन हालावाद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं जिसमें प्रेम और सौंदर्य का अनूठा संगम है। इन्होंने साहित्य में प्रेम और मस्ती की एक नई धारा प्रवाहित थी। इन्होंने प्रेम और सौंदर्य को जीवन का अभिन्न अंग मानकर उनका चित्रण किया है। ये प्रेम-रस में डूबकर रस की ऐसी पिचकारियाँ छोड़ते हैं जिससे संपूर्ण जग मोहित हो उठता है। वे कहते हैं—

इस पार प्रिये, मधु है तुम हो
उस पार न जाने क्या होगा ?

बच्चन जी ने अपने काव्य में ही नहीं बल्कि गद्य साहित्य में भी प्रेम और सौंदर्य की सुंदर अभिव्यति की है। वे तो इस संवेदनहीन और स्वार्थी दुनिया को ही प्रेम-रस में डुबो देना चाहते हैं। वे प्रेम का ऐसा ही संदेश देते हुए कहते हैं—

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता नि:शेष लिए फिरता हूँ,
जिसको सुनकर जग झूम झुके लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ।

***(ii)* मानवतावाद—**मानवतावाद एक ऐसी विराट भावना है जिसमें संपूर्ण जगत के प्राणियों का हित-चिंतन किया जाता है। बच्चन जी केवल प्रेम और मस्ती में डूबे कवि नहीं थे बल्कि उनके साहित्य में ऐसी विराट भावना के भी दर्शन होते हैं। उनके साहित्य में मानव के प्रति प्रेम-भावना अभिव्यत हुई है। इन्होंने निरंतर स्वार्थी मनुष्यों पर कटु व्यंग्य किए हैं।

***(iii)* वैयक्तिकता—**हरिवंश राय बच्चन के साहित्य में व्यतिगत भावना सर्वत्र झलकती है। उनकी इस व्यतिगत भावना में सामाजिक भावना मिली हुई है। एक कवि की निजी अनुभूति भी अर्थात सुख-दुख का चित्रण भी समाज का ही चित्रण होता है। बच्चन जी ने व्यतिगत अनुभवों के आधार पर ही जीवन और संसार को समझा और परखा है। वे कहते हैं—

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।।

(*ii*) श्री कुँवर नारायण 'कविता के बहाने' कविता की रचनात्मकता और उसमें छिपी अपार ऊर्जा को प्रतिपादित करने में सक्षम है। कविता के लिए शब्दों का संबंध सारे जड़-चेतन से है। यह अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ी हुई है। इसकी व्यापकता अपार है। इसकी कोई सीमा नहीं है। यह किसी प्रकार के बंधन में नहीं बँधती। इसके लिए न तो भाषा का कोई बंधन है और न ही समय का। 'कविता के बहाने' नामक कविता आकार में छोटी है, पर भाव में बहुत बड़ी है। आज का समय मशीनीकरण और यांत्रिकता का है जिसमें सर्वत्र भाग-दौड़ है। मनुष्य का मन इस बात से आशंकित रहता है कि या कविता रहेगी या मिट जाएगी? या कविता अस्तित्वहीन हो जाएगी ? कवि ने इसे एक यात्रा माना है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक है। चिड़िया की उड़ान सीमित है, पर कविता की उड़ान तो असीमित है। भला चिड़िया की उड़ान कविता जैसी कैसे हो सकती है, कविता के पंख तो सब जगह उसे ले जा सकते हैं, पर चिड़िया के पंखों में ऐसा बल कहाँ है! कविता का खिलना फूल के खिलने का बहाना तो हो सकता है, पर फूल का खिलना कविता जैसा नहीं हो सकता। फूल तो खिलता है और फिर कुछ ही देर बाद मुरझा जाता है लेकिन कविता तो भावों की महक लेकर बिना मुरझाए सदैव प्रभाव डालती रहती है। कविता तो बच्चों के खेल के समान है जिसकी कोई सीमा ही नहीं है। जैसे बच्चों के सपनों की कोई सीमा नहीं, वे भविष्य की ओर उड़ान भरते हैं वैसे ही

HOLI PATH INTERNATIONAL (P) LTD.

कविता भी शब्दों का ऐसा अनूठा खेल है जिस पर किसी का कोई बंधन नहीं है। कविता का क्षेत्र सीमा-रहित है। वह किसी भी सीमा से पार निकलती हुई राह में आने वाले सभी बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ जाती है।

(*iii*) प्रयोगवादी कवि शमशेर बहादुर सिंह ने गतिशील बिंब-योजना का प्रयोग करते हुए गाँव की सुबह का सुंदर शब्द-चित्र प्रस्तुत किया है। बहुत सुबह पूर्व दिशा में सूर्य दिखाई देने से पहले वह नीले शंख के समान प्रतीत हो रहा था। उसका रंग ऐसा लग रहा था जैसे किसी गाँव की महिला ने चूल्हा जलाने से पहले राख से चौका पोत दिया हो। उसका रंग गहरा था। कुछ देर बाद हलकी-सी लाली दिखाई दी जिसे देखकर ऐसा लगा जैसे काली सिल पर ज़रा-सा लाल केसर डाला हो और फिर उसे धो दिया हो या किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी हो। आकाश के नीलेपन में सूर्य ऐसे प्रकट हुआ जैसे नीले जल में किसी का गोरा सुंदर शरीर झिलमिलाता हुआ प्रकट हो रहा हो। लेकिन सूर्य के दिखाई देते ही यह सारा प्राकृतिक सौंदर्य मिट गया। कवि के द्वारा प्रस्तुत बिंब-योजना गतिशील है और उससे पल-पल बदलते गाँव के प्राकृतिक दृश्यों की सुंदरता प्रकट हो पाई है।

उत्तर—8. (*i*) शीतल वाणी में आग—के होने का अभिप्राय यह है कि कवि अपनी वाणी की शीतलता में वियोग की आग लिए जीवन जी रहा है। यहाँ आग से अभिप्राय कवि की आंतरिक पीड़ा से है। कवि प्रिया से वियोग होने पर उस विरह-वेदना को अपने हृदय में दबाए फिर रहा है। अत: जहाँ उनकी संवेदनाओं में शीतलता का भाव है तो वहीं विराग और क्रोध का भाव भी निहित है। यही वियोग उसके हृदय को निरंतर जलाता रहता है जिससे उनके हृदय में आग पैदा होती है।

(*ii*) पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं का प्रतीक है, इसलिए पतंग के साथ बच्चों का अटूट संबंध है। असीम आकाश में उड़ती हुई पतंग जैसे-जैसे हिलोरें लेती है, वैसे-वैसे बच्चों का मन भी हिलोरें लेता हुआ प्रतीत होता है। बच्चे पतंग के साथ तन-मन से जुड़ जाते हैं। वे पतंगों को उड़ाते हुए उनमें इतना डूब जाते हैं कि स्वयं को ही भूल जाते हैं। इस प्रकार बच्चों का उड़ान से गहन संबंध है।

(*iii*) 'बादल राग' कविता में कवि बादल को क्रांति के दूत कहकर बुलाते हैं। उनके अनुसार बादल शोषित वर्ग के प्रतीक हैं जो पूजीपतियों के नीचे दबे हुए हैं। वही शोषित वर्ग बादल की तरह गरजना करके शोषकों का विरोध करने वाले हैं।

उत्तर—9. (1) (ग) कहीं हम भी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे।

(2) (घ) उपर्युक्त सभी।

(3) (घ) अरबों-खरबों की योजनाएँ बनती हैं, परंतु सारी राशि भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है।

(4) (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(5) (ख) दूसरों के भ्रष्टाचार की

उत्तर—10. (*i*) भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था जो समृद्धि और ऐश्वर्य का प्रतीक होता है। भक्तिन एक गरीब महिला थी जबकि उसका नाम लक्ष्मी था। वह धनहीन थी लेकिन इसके साथ वह बहुत समझदार भी थी। लोग उसके इस नाम को सुनकर उसकी हँसी न उड़ाएँ इसलिए वह अपना वास्तविक नाम छिपाती थी।

भक्तिन को यह नाम लेखिका ने दिया था। लेखिका ने यह नाम शायद भक्तिन की सेवा-भावना और कर्तव्यपरायणता को देखकर दिया होगा योंकि भक्तिन में एक सच्ची सेविका के संपूर्ण गुण विद्यमान थे जिस पर कोई भी स्वामी गर्व कर सकता है।

(*ii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देश में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

(*iii*) गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है योंकि अनावृष्टि के कारण चारों तरफ सूखा पड़ जाता है। कुएँ, तालाब सूख जाते हैं। कहीं भी पानी का नामो-निशान नहीं रहता। पीने का पानी बिलकुल नहीं रहता, जिससे पशु-पक्षी प्यास के कारण व्याकुल होकर मरने लगते हैं।

उत्तर—11. (*i*) लेखिका ने भक्तिन के सेवक-धर्म की तुलना हनुमान जी से की है। यह इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार हनुमान अपने प्रभु राम की तन-मन और पूर्ण निष्ठा से सेवा किया करते थे। ठीक उसी प्रकार भक्तिन अपनी मालकिन लेखिका की सेवा करती है। वह उनके प्रति पूर्ण समर्पण भाव से सेवा भाव रखती है।

(*ii*) बौद्ध धर्म की सरलता के कारण तथा उनकी नीतियों के कारण मानवता के प्रति उनके दृष्टिकोण के कारण।

(*iii*) बाज़ार में भगत जी का स्वाभिमानी, निश्चेष्ट, आत्मसंयमी, मितव्ययी, दृढ़-निश्चयी आदि विशेषताओं से परिपूर्ण व्यतित्व उभरकर सामने आता है। भगत जी एक स्वाभिमानी और निश्चेष्ट प्रवृत्ति के व्यति हैं जिन्हें बाज़ार का आकर्षण, सौंदर्य, चहल-पहल, बड़ी-बड़ी दुकानें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकतीं और न ही उसके स्वाभिमान को डिगा सकती हैं। वे आत्मसंयमी और मितव्ययी पुरुष हैं। धन की कमी न होने के कारण भी वे बाज़ार में फिज़ूलखर्ची पर विश्वास नहीं करते। केवल उतनी ही वस्तुएँ खरीदते हैं जितनी उनकी आवश्यकता है और वे भी केवल अच्छे मूल्य में खरीदते हैं। बाज़ारू आकर्षण में फँसकर धन को नहीं लुटाते। हाँ हमारी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है। जिस प्रकार शांत, निश्चेष्ट, संयमी भगत जी का आचरण है और जैसे वह बाज़ार के आकर्षण और सौंदर्य को देखकर उससे ज़रा-सा भी मोहित नहीं होता इसी प्रकार यदि आज के उपभोतावाद और बाज़ारवाद के समाज में यदि प्रत्येक मनुष्य स्वाभिमान, संयम, मितव्यय और दृढ़ निश्चय से अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ खरीदे। बाज़ार के आकर्षण और सौंदर्य में फँसकर अनुपयोगी वस्तुओं को न ले तो वास्तव में उसका मन अशांत नहीं होगा। वह अपने मन में बेकार की इच्छाओं को वश में करके यदि फ़िज़ूलखर्ची पर काबू पा लेगा तो उसका जीवन भी शांत, स्वाभिमानी, मितव्ययी बन जाएगा। यदि समाज का प्रत्येक मनुष्य ऐसा करे तो निश्चय ही समाज में शांति स्थापित होगी।

उत्तर—12. (*i*) यशोधर बाबू को अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से शिकायतें हैं। उनका बड़ा बेटा एक विज्ञापन संस्था में नौकरी करता है। यशोधर बाबू को यही समझ नहीं आता कि उसका साधारण बेटा यह असाधारण नौकरी कैसे पा गया है। वे सोचते हैं कि डेढ़ हज़ार की नौकरी हमें अब रिटायरमेंट के पास पहुँच कर मिली है, शुरू में ही डेढ़ हज़ार

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

रुपया देने वाली नौकरी में ज़रूर कुछ पेंच होगा। उनका दूसरा बेटा दूसरी बार आई०ए०एस० की परीक्षा देने की तैयारी कर रहा है। यशोधर बाबू को शिकायत है कि जब यह पिछले वर्ष 'एलाइड सर्विसेज' की सूची में, माना इसका स्थान काफ़ी नीचे था, तब इसने उस नौकरी को ज्वाइन यों नहीं किया था? यशोधर बाबू का तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया है। उन्हें बेटे का अमेरिका चला जाना भी समझ में नहीं आ रहा था। उनकी एक ही बेटी है जो अभी शादी नहीं करना चाहती। यशोधर बाबू बेटी की इसी बात से दुखी हैं कि यों वह सभी प्रस्तावित वर अस्वीकार करती चली जाती है? बेटी प्राय: यशोधर बाबू को यह धमकी देती रहती है कि अगर आपने मेरी शादी की बात शुरू की तो वह डॉटरी की उच्चतम शिक्षा के लिए अमेरिका चली जाएगी। वे अपने बच्चों की तरकी से खुश तो हैं परंतु वे अनुभव भी करते हैं कि वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे। यशोधर बाबू को अपनी पत्नी से भी शिकायत है योंकि वह अपने बच्चों की नई दुनिया में पूरी तरह रच-बस गई है। पत्नी की यह बात बुरी लगती है कि वह बिना बाजू की ब्लाउज़ पहनती है, रसोई से बाहर भात-दाल खाती है, ऊँची हील वाली सैंडल पहनती है तथा होंठों पर लिपस्टिक लगाती है। पत्नी की बुढ़ापे में यह आदतें यशोधर बाबू को बुरी लगती हैं, इसीलिए वे अपने घर में होकर भी उसे अपना घर नहीं मान पाते।

(*ii*) मास्टर सौंदलगेकर लेखक को पाँचवीं कक्षा में मराठी पढ़ाते थे। कविता पढ़ाते समय वे स्वयं भी उसमें डूब जाते थे। उनके पास सुरीला गला और छंद की बढ़िया चाल भी थी। उन्हें मराठी के साथ-साथ अंग्रेज़ी की भी कुछ कविताएँ कंठस्थ थीं। जब वे कविता सुनाते थे तब साथ-साथ अभिनय भी किया करते थे। लेखक उनकी कविताएँ पूरी तल्लीनता से सुनते थे। वे अपनी आँखों और कानों की पूरी शति लगाकर दम रोककर मास्टर जी के हाव-भाव, ध्वनि, यति, गति, चाल और रसों का आनंद लिया करते थे।

लेखक खेतों में पानी लगाते समय खुले गले से मास्टर जी के हाव-भाव और आरोह-अवरोह के अनुसार कविताएँ गाया करते थे। जिस प्रकार मास्टर जी अभिनय करते थे उसी प्रकार लेखक भी अभिनय करते थे। इस प्रकार लेखक भी कविताओं के साथ खेलने लगे। इन कविताओं के माध्यम से लेखक में नई रुचियाँ पैदा होने लगीं। पहले जब वे खेतों में पानी लगाते थे उस समय उन्हें अकेलापन खटकता था। अगर काम करते समय कोई साथ नहीं है तो उन्हें बोरियत होती थी, इसलिए कोई-न-कोई साथ होना चाहिए। लेकिन कविता के प्रति लगाव होने के पश्चात उन्हें अकेलापन नहीं खटकता था। बल्कि अब उन्हें अकेलापन अच्छा लगता था योंकि अकेलेपन में कविता ऊँची आवाज़ में गाई जा सकती थी। कविता के भाव के अनुसार अभिनय भी किया जा सकता था। लेखक अब कविता गाते-गाते नाचने भी लगते थे। इस प्रकार कविता के प्रति लगाव ने लेखक की अकेलेपन की धारणा को बदल दिया।

(*iii*) लेखक ओम थानवी जब मुअनजो-दड़ो की यात्रा पर गए तो उनके गाइड ने एक छोटा अजायबघर भी दिखाया था। लेखक के अनुसार— ''यह अजायबघर छोटा है जैसे किसी कस्बाई स्कूल की इमारत हो, सामान भी ज़्यादा नहीं है।'' इस अजायबघर में रखी चीज़ों की संख्या पचास हज़ार से अधिक रही होगी। मुअनजो-दड़ो की खुदाई से मिली अहम चीज़ें अब कराची, दिल्ली और लंदन के अजायबघरों में रखी हुई हैं। इस अजायबघर में जो चीज़ें रखी गई हैं वे सिंधु सयता के साक्षात दर्शन करवा देती हैं। काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बरतन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद-भांड, उनपर काले-भूरे चित्र, दो ताँबे के आइने, कंघी, मिट्टी के बरतन, दो पाटन की चकी, मिट्टी की बैलगाड़ी और दूसरे खिलौने। रंग-बिरंगे पत्थरों के मनकों वाले हार, चौपड़ की गोटियाँ, कंगन और सोने के कंगन। सोने के कंगन अब शायद चोरी हो गए हैं। इस प्रकार सय समाज का जो साजो-सामान होता है वह सब सिंधु घाटी की सयता में देखने को मिलता है। इस प्रकार सिंधु सयता दुनिया की प्राचीनतम सयताओं में सबसे अनूठी एवं संस्कृति प्रधान सयता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P.) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–2

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं

विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (क) बढ़ती खाद्य समस्या

(2) (क) मछली

(3) (घ) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

(4) जल से पैदा होने वाले खाद्य-पदार्थों को जलीय खाद्य पदार्थ कहते हैं।

(5) हमारी खाद्य-आपूर्ति की योजनाओं में जल से पैदा होने वाले उत्पादों पर विचार नहीं किया जाता।

(6) जलवायु परिवर्तन

(7) जलीय खाद्य पदार्थ शामिल करके।

उत्तर—2. (1) (घ) कथन (I) तथा (IV) सही हैं।

(2) (क) झुकना

(3) (क) झुकना नहीं होता

(4) मां-बाप, पत्नी, बच्चे, मौसी, मामा आदि।

(5) खड़े होना झुकना

(6) दूसरों का सम्मान तथा आत्मसम्मान।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) आज यदि हम भारत की विभिन्न समस्याओं पर विचार करें तो हमें लगता है कि हमारा देश अनेक समस्याओं के चक्रव्यूह में घिरा हुआ है। एक ओर भूखमरी, दूसरी ओर बेरोज़गारी, कहीं अकाल तो कहीं बाढ़ का प्रकोप है। इन सबसे भयानक समस्या आतंकवाद की समस्या है जो देश रूपी वट वृक्ष को दीमक के समान चाट-चाट कर खोखला कर रही है। कुछ अलगाववादी शक्तियां तथा पथ-भ्रष्ट नवयुवक हिंसात्मक रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों में दंगा-फसाद करा कर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं।

आतंकवाद से तात्पर्य है—''देश में आतंक की स्थिति उत्पन्न करना'' इसके लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर हिंसात्मक उत्पात मचाये जाते हैं जिससे सरकार उनमें उलझ कर सामाजिक जीवन के विकास के लिए कोई कार्य न कर सके। कुछ विदेशी शक्तियाँ भारत की विकास दर को देख कर जलने लगी थीं। वे भी भारत के कुछ स्वार्थी लोगों को धन-दौलत का लालच देकर उन में उपद्रव कराती हैं जिससे भारत विकसित न हो सके। आतंकवादी रेल पटरियां उखाड़ कर, बस यात्रियों को मार कर, बैंकों को लूट कर, सार्वजनिक स्थलों पर बम फेंक कर आदि कार्यों द्वारा आतंक फैलाने में सफल होते हैं।

भारत में आतंकवाद के विकसित होने के अनेक कारण हैं जिनमें से प्रमुख गरीबी, बेरोज़गारी, भुखमरी तथा धार्मिक उन्माद हैं। इनमें से धार्मिक कट्टरता आतंकवादी गतिविधियों को अधिक प्रोत्साहित कर रही है। लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे का गला काटने के लिए तैयार हो जाते हैं। धार्मिक उन्माद अपने विरोधी धर्मावलंबी को सहन नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप हिंदू-मुस्लिम, हिंदू-सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्म के नाम पर अनेक दंगे भड़क उठते हैं। इतना ही नहीं धर्म के नाम पर अलगाववादी अलग राष्ट्र की माँग भी करने लगते हैं। इससे देश की एकता भी खतरे में पड़ जाती है।

यदि आतंकवाद की समस्या का गंभीरता से समाधान न किया गया तो देश का अस्तित्व खतरे में पड़ा जायेगा। सभी लड़ कर समाप्त हो जायेंगे। जिस आज़ादी को हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर प्राप्त किया उसे हम आपसी वैर-भाव से समाप्त कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेंगे। देश पुन: परतंत्रता के बंधनों से जकड़ जाएगा। आतंकवादी हिंसा के बल से हमारा मनोबल तोड़ रहे हैं। हमें संगठित होकर उसकी ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। जिससे उनका मनोबल समाप्त हो जाए तथा वे जान सकें कि उन्होंने गलत मार्ग अपनाया है। वे आत्मग्लानि के वशीभूत होकर जब अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे तभी उन्हें देश की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सकता है। अत: आतंकवाद की समस्या का समाधान जनता एवं सरकार दोनों के मिले-जुले प्रयासों से ही संभव हो सकता है।

(*ii*) प्रकृति ने संसार को अनेक अनूठे उपहार भेंट किए हैं। पेड़-पौधे प्रकृति का अनूठा वरदान है। पेड़-पौधे संपूर्ण जीव-जगत के जीवन का मूलाधार हैं। ये पर्यावरण को साफ, स्वच्छ एवं सुंदर बनाते हैं। ये कार्बन डाइ-ऑसाइड को ग्रहण करते हैं और ऑसीजन दूसरों को देते हैं। इस ऑसीजन से सaपूर्ण प्राणी जगत साँस लेता है। पेड़-पौधे स्वयं सूर्य की तपन को सहन कर दूसरों को छाया प्रदान करते हैं। वे अपना फल स्वयं कभी नहीं खाते बल्कि उन्हें भी हमें ही दे देते हैं। वे इतने विनम्र होते हैं कि फल आने पर स्वयं ही नीचे की तर.फ झुक जाते हैं। पेड़-पौधे वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। धरा की उपजाऊ शति को बढ़ाते हैं। भूमि को पानी के कटाव से रोकते हैं। पेड़-पौधों से हमें लकड़ियाँ, औषधियाँ,

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

छाल आदि अनेक अमूल्य उपहार प्राह्वश्वत होते हैं। संभवत: पेड़-पौधे प्रकृति का अनूठा वरदान हैं। हमें भी पेड़-पौधों का संरक्षण करना चाहिए। अधिक-से-अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए।

(*iii*) विद्यार्थी और अनुशासन एक-दूसरे के पूरक हैं। यूँ कहें कि अनुशासन ही विद्यार्थी जीवन की नींव है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है। अनुशासित विद्यार्थी ही सफलता की ऊँचाई को छूने में सफल होता है जो विद्यार्थी अपने जीवन में अनुशासन को नहीं अपनाता वह कभी भी सफल नहीं होता बल्कि अपने जीवन को ही बरबाद कर लेता है। बिना अनुशासन के विद्यार्थी जीवन कटी पतंग के समान होता है जिसका कोई लक्ष्य नहीं होता। जो विद्यार्थी अपने विद्यालय के प्रांगण में रहकर प्रति क्षण अनुशासन का पालन करता है; अपने शिक्षकों का आदर करता है और इतना ही नहीं जीवन में हर पल नियमों-अनुशासन में बँधकर चलता है; वह कदापि निष्फल नहीं हो सकता। सफलता उसके कदम अवश्य चूमती है। इसलिए विद्यार्थी को कभी भी अनुशासन भंग नहीं करना चाहिए बल्कि सदैव अनुशासन का पालन करना चाहिए। एक अनुशासित विद्यार्थी ही राष्ट्र का आदर्श नागरिक बनता है और देश के चहुँमुखी विकास में अपना योगदान देता है।

4. (*i*) किसी भी समाचार को लिखने के लिए छह प्रश्नों का उत्तर आवश्यक माना जाता है। या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और यों हुआ? इन्हीं छह प्रश्नों का दूसरा नाम ककार है। इन्हीं छह ककारों को ध्यान में रखकर ही किसी घटना, समस्या और विचार आदि से संबंधित खबर लिखी जाती है। समाचार के आरंभ में जब पैराग्राफ़ लिखना शुरू किया जाता है तब शुरू की दो-तीन पंतियों में 'या', 'कौन', 'कब' और 'कहाँ'? इन तीन या चार ककारों को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। उसके पश्चात समाचार के मध्य में और समापन से पूर्व 'कैसे' और 'यों' जैसे ककारों का उत्तर दिया जाता है। इस तरह इन छह ककारों को ध्यान में रखकर समाचार लिखा जाता है। पहले चार ककारों का प्रयोग सूचना और तथ्यों के लिए किया जाता है। परंतु 'कैसे' और 'यों' ककारों द्वारा विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलुओं पर बल दिया जाता है। इस प्रकार समाचार लेखन की पूरी प्रक्रिया में इन छह ककारों का विशेष महत्व है।

(*ii*) कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है—

(1) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

(2) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

(3) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

(4) ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

(5) कथावस्तु के अनुरूप मंच-सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

(6) पात्रों के द्वद्वं को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

(7) संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(8) कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(*iii*) रेडियो श्रव्य माध्यम है। ध्वनि, स्वर और शब्दों के मेल के कारण रेडियो को श्रोताओं द्वारा संचालित माध्यम माना जाता है। इस कारण रेडियो पत्रकारों को अपने श्रोताओं का पूरा ध्यान रखना पड़ता है योंकि समाचार-पत्रों के पाठकों को अपनी पसंद और अपनी इच्छा से कभी भी और कहीं भी समाचार पढ़ने को मिल सकते हैं। लेकिन रेडियो के श्रोता को यह सुविधा प्राह्वश्वत नहीं होती। वह समाचार-पत्रों की तरह रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुन सकता। उसे बुलेटिन के प्रसारण समय का इंतज़ार करने के पश्चात शुरू से लेकर अंत तक सभी समाचारों को सुनना पड़ेगा। इस दौरान न तो वह इधर-उधर आ-जा सकता है और न ही वह शब्दकोश में अर्थ ढूँढ़ सकता है योंकि ऐसा करने पर बुलेटिन आगे निकल जाएगा। अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रेडियो में समाचार-पत्रों की तरह पिछले समाचार को द्वारा सुनने की सुविधा नहीं होती। रेडियो एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। रेडियो की तरह दूरदर्शन भी एक रेखीय माध्यम है, जिसमें श8दों और ध्वनियों की तुलना में दृश्यों एवं तश्वीरों का अधिक महत्व है।

(*iv*) हम अपनी अवश्यकता के अनुसार जनसंचार चुनते हैं तथा अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने में इसका इस्तेमाल करते हैं अपनी स्थिति के अनुसार जनसंचार माध्यम चुनना और उसका लाभ प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है।

(*v*) कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें जहाँ कुछ समानताएँ हैं वहाँ कुछ असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार हैं—

कहानी—

(1) कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजनपूर्ण चित्रण किया जाता है।

(2) कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।

(3) कहानी कही अथवा पढ़ी जाती है।

(4) कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बाँटा जाता है।

(5) कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का महत्व नहीं है।

नाटक—

(1) नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है।

(2) नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।

(3) नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

(4) नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

(5) नाटक में मंच-सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्व होता है।

5. (*i*) उत्तर प्रिंट अर्थात मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे प्राचीन है। वास्तव में आधुनिक युग का आरंभ ही मुद्रण अर्थात छपाई के आविष्कार से हुआ। वैसे तो मुद्रण का आरंभ चीन से हुआ लेकिन इसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है। छापाखाना अर्थात प्रेस के आविष्कार से जनता को काफ़ी लाभ हुआ। यूरोप में पुनर्जागरण के 'रेनेसाँ' के आरंभ में छापेखाने की महत्वपूर्ण भूमिका थी। भारत में प्रथम छापाखाना सन 1556 में गोवा में स्थापित हुआ। इसकी स्थापना मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए की थी। इसके पश्चात मुद्रण तकनीक में ज़्यादा बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का विस्तार व्यापक रूप से हुआ है। मुद्रित माध्यमों के अंतर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि आते हैं, जिनका हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्व है। मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता

उसमें छपे हुए श8दों के स्थायित्व में है, जिसे आराम से धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं। समझ में न आने पर उसे दुबारा तब तक पढ़ सकते हैं, जब तक वह हमारी समझ में न आ जाए। समाचार-पत्र अथवा पत्रिका पढ़ते समय यह आवश्यक नहीं कि उसे पहले पृष्ठ और पहली खबर से ही पढ़ना शुरू किया जाए। मुद्रित माध्यमों के स्थायित्व का एक लाभ यह है कि इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। मुद्रित माध्यमों की दूसरी बड़ी विशेषता लिखित भाषा का विस्तार है। लिखित समाचार में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और श8दों का उपयुत प्रयोग किया जाता है। लिखे हुए को प्रकाशित करने तथा ज़्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए प्रचलित लिखित भाषा का होना आवश्यक है, जिससे उसे अधिक लोग समझ सकें। मुद्रित माध्यम की तीसरी विशेषता यह है कि यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है, जिसके द्वारा गूढ़ एवं गंभीर बातें लिखी जा सकती हैं। साक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम बहुत महत्वपूर्ण होते हैं किंतु निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम व्यर्थ हैं। मुद्रित माध्यमों के लेखकों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ शैक्षिक ज्ञान एवं योग्यता का ध्यान रखना पड़ता है। मुद्रित माध्यम रेडियो, टेलीविज़न एवं इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। ये एक निश्चित समय पर प्रकाशित होती हैं जिस प्रकार समाचार-पत्र 24 घंटे में एक बार या साह्श्वताहिक पत्रिका सह्श्वताह में एक बार प्रकाशित होती है। कुछ अपवादों को छोड़कर समय-सीमा समाह्श्वत होने के पश्चात कोई भी सामग्री प्रकाशन के लिए स्वीकार नहीं की जाती। अत: मुद्रित माध्यमों के लेखकों एवं पत्रकारों को प्रकाशन की सीमा का ध्यान रखना पड़ता है। मुद्रित माध्यम के अंतर्गत छपने वाले आलेख में सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर करके प्रकाशित किया जाता है। समाचार-पत्र अथवा पत्रिका में यह प्रयास किया जाता है कि कोई गलती या अशुद्धि प्रकाशित न हो जाए। इसके लिए समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में संपादक के साथ एक पूरी संपादकीय टीम होती है, जिसका मुख्य उत्तरदायित्व प्रकाशन के लिए जा रही सामग्री को गलतियों और अशुद्धियों से रहित प्रकाशित करने योग्य बनाना है।

(*ii*) **महानगरों में आवास की समस्या—** भारत एक विशाल देश है और वर्तमान में इसकी जनसंख्या लगभग 140 करोड़ है प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी कपड़ा और मकान होती हैं। एक अच्छा मकान अर्थात् आवास हर व्यक्ति का सपना होता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण भारत में आवास की समस्या उत्पन्न हो गई है। महानगरों जैसे दिल्ली मुम्बई आदि में आवास प्राप्त करना एक स्वप्न जैसा हो गया है। जमीन के दाम तथा आवास को बनाने की वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे है। एक आम नागरिक यहाँ आवास प्राप्त नहीं कर सकता। अत: वर्तमान समय में महानगरों में आवास एक विकट समस्या बन गया है।

(*iii*) कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें मनोरंजन तथा शिक्षा शामिल रहते हैं। कहानी का समूह एक लेखक तथा पाठक दोनों से होता है। किसी भी कहानी में पात्र, घटनाएँ तथा कथा कथानक महत्त्वपूर्ण भाग होते हैं। इन सब में कथानक कहानी का केन्द्र बिन्दु होता है। कथानक किसी भी कहानी का वह भाग या विचार होता है जिसे ध्यान में रखकर कोई लेखक अपनी कहानी की रचना करता है अगर वह कहानी के माध्यम से कोई शिक्षा पाठकों तक पहुँचाना चाहता है तो शिक्षा का यही भाग कहानी का कथानक होता है कथानक के आस-पास कहानी की विशेष सभी चीजें घूमती हैं।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (ख) निर्मलता का

(2) (ख) गौरवर्णीय सुंदरी जैसा

(3) (ग) शब्दचित्र

(4) (क) बहुत नीला शंख जैसे —उपमा अलंकार

(5) (ग) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

उत्तर—7. (*i*) **भाव-सौंदर्य—**श्री हरिवंश राय बच्चन ने प्रस्तुत काव्यांश में संसार को स्वयं से भिन्न स्थापित किया है। कवि का मंतव्य है कि यह संसार उससे बिलकुल भिन्न है। उसके विचार, उसकी भावनाएँ इस क्रूर संसार से समन्वय स्थापित नहीं कर सकतीं। इसका दृष्टिकोण उससे बिलकुल अलग है अत: इस संसार के साथ उसका कोई संबंध नहीं हो सकता। यह संसार तो केवल एक परिपाटी पर अपना जीवनयापन कर रहा है, जबकि वह प्रतिदिन ऐसे अनेक लोक बनाकर उन्हें नष्ट कर देता है।

काव्य-सौंदर्य—

(1) प्रस्तुत अवतरण श्री हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित 'आत्म-परिचय' नामक कविता से अवतरित है। इसमें कवि ने संसार को स्वयं से बिलकुल भिन्न स्थापित किया है।

(2) खड़ी बोली की भाषा सरल, सरस एवं भावमयी है।

(3) शैली अत्यंत गंभीर एवं रोचक है।

(4) तत्सम, तद्भव एवं उर्दू व फ़ारसी के श8दों का समन्वय है।

(5) 'और-और' में भिन्नार्थक आपूर्ति होने से यमक अलंकार की शोभा है।

(6) 'बना-बना' में पुनरुतिप्रकाश की छटा है।

(7) इसके साथ इसमें अनुप्रास, पदमैत्री अलंकारों का प्रयोग भी हुआ है।

(8) शैली गीतिमयता से परिपूर्ण है।

(9) माधुर्य गुण का समावेश है।

(10) शांत रस है।

(11) बिंब योजना सार्थक एवं सारगर्भित है।

(*ii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से ली गई है। इसमें कवि ने शारीरिक चुनौती को झेलते लोगों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि कैमरे के सामने अपने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु ऐसे लोगों से बेतुके सवाल पूछे जाते हैं कि इसमें कवि ने एक तरह से पीड़ा के साथ दृश्य-संचार माध्यम के संबंध को रेखांकित किया है जो दिखाता है कि किस तरह करुणा जगाने के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम किस तरह क्रूर बन जाता है। यह कविता ऐसे लोगों की तरफ संकेत करती है जो अपने दुख-दर्द, वेदना-यातना को बेचना चाहते हैं।

(*iii*) तुलसीदास जी आदर्शवादी चेतना के कवि हैं। बचपन से उनमें स्वाभिमान की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। जन्म देते ही माँ-बाप ने उनको त्याग दिया। उनका जीवन अत्यंत कठिनाइयों में व्यतीत हुआ। बाद में रत्नावली से शादी करने पर भी उन्हें फटकार मिली। तुलसी जी ने

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

अपनी पत्नी की एकमात्र फटकार से दुनिया से वैराग्य ले लिया था और वे एकनिष्ठ-भाव से प्रभु राम की भति में लीन हो गए थे। इस प्रकार उनका संपूर्ण जीवन दर-दर भटककर व्यतीत हुआ, लेकिन वे कभी किसी के सामने गिड़गिड़ाए नहीं। उन्होंने समाज में प्रचलित जाति-पाति और धर्म का खुलकर विरोध किया। वास्तव में वे बाहर से सीधे-सादे-सरल थे, लेकिन अंदर से एक स्वाभिमानी भत हृदय छिपाए थे। हम इससे पूर्णत: सहमत हैं।

उत्तर—8. (*i*) प्रेम रूपी मदिरा को पी लेने के कारण कवि इसी में मग्न रहता है। उसे इस संसार का बिलकुल भी ध्यान नहीं है। कवि के अनुसार यह संसार मात्र उन्हीं की पूछ करता है जो उसका गान करते हैं। यह स्वार्थ के नशे में डूबकर औरों की अनदेखी कर देता है, लेकिन कवि अपनी मस्ती में डूबते मन के गीत गाता रहता है।

(*ii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता अपनी व्यंजना में ऐसे व्यतियों की ओर इशारा करती है, जो अपने दुख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहते हैं। उनकी स्थिति महामारी की कामना करने वाले चिकित्सक के समान होती है।

(*iii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कवि ने अपंग व्यति के प्रति करुणा-भाव प्रकट किए हैं लेकिन टेलीविज़न-कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तथा अपने कारोबार के कारण उस अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैये को अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनहीनता का रवैया अपनाता है जिस कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूर भाव पनप जाते हैं।

उत्तर—9. (1) (ग) पहलवान की ढोलक

(2) (ख) दंगल का दृश्य

(3) (ग) अर्धमृत, औषधि उपचार पथ्य विहीन प्राणियों के लिए

(4) (क) बुखार व महामारी को समाप्त करने में।

(5) (ख) फणीश्वर नाथ 'रेणु'

उत्तर—10. (*i*) हाँ, हम इस बात से सहमत हैं कि बाज़ार किसी का लिंग, जाति-धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, बल्कि वह सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शक्ति को देखता है। बाज़ार एक ऐसा स्थल है जहाँ पर हर जाति, लिंग, धर्म का व्यक्ति जाता है। वहाँ किसी को भी धर्म-जाति के आधार पर नहीं पहचाना जाता बल्कि प्रत्येक निम्न, उच्च, अमीर-गरीब की पहचान वहाँ एक ग्राहक के रूप में होती है। इस दृष्टि से इस स्थल पर पहुँचकर प्रत्येक धर्म, जाति, मज़हब का मनुष्य केवल ग्राहक कहलाता है। बाज़ार की दृष्टि में यहाँ सब उसके ग्राहक होते हैं और वह ग्राहक का कभी धर्म, जाति या मज़हब देखकर व्यवहार नहीं करता बल्कि वह तो सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शक्ति देखकर ही उसके साथ व्यवहार करता है। यानी जो मनुष्य जितनी क्रय-शति रखता है बाज़ार उसे उतना ही महत्व देता है, उतना ही समान देता है। इस प्रकार बाज़ार एक प्रकार से सामाजिक समता की रचना कर रहा है। जहाँ पहुँचकर प्रत्येक धर्म, जाति, मज़हब, अमीर-गरीब, निम्न-उच्च व्यक्ति केवल ग्राहक कहलाता है।

(*ii*) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'शिरीष के फूल' विपरीत और कठिन परिस्थितियों में भी जीवन की प्रेरणा और मज़बूत इच्छा-शक्ति का परिचायक है। मानव को सुख-दुख, आशा-निराशा, राग-विराग, प्रेम-विरह आदि परिस्थितियों से जूझना पड़ता है। लेकिन सुखपूर्वक वही व्यति जीता है जो इन परिस्थितियों से अनासत रहकर संघर्ष करता है, वही शिरीष के फूल की भाँति जीवन यापन कर सकता है।

जिस मनुष्य में इच्छा-शक्ति कमज़ोर होती है वह अधिक देर तक नहीं चल सकता। कठोर परिस्थितियाँ उसे अपने अंदर समेट लेती हैं। जेठ मास की भयंकर गरमी में भी शिरीष का फूल हरी-भरी पत्तियों से युक्त सघन छाया देता है। चारों ओर अपने सौंदर्य को बिखेरता रहता है। यह कालजयी अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का संदेश देकर जीने की प्रेरणा प्रदान करता है। वह बताता है कि कठिन और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनासत भाव से जीवन जीया जा सकता है बशर्ते जीने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए। कबीरदास और कालिदास संसार के अवधूत रहे हैं जिन्होंने अपने आप जीने की राह बनाई। शिरीष के फूल की तरह प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए संसार को जीवन की प्रेरणा प्रदान की। लेखक कहता है कि शिरीष के फूल जहाँ बहुत कोमल होते हैं वहाँ उसके फल बहुत कठोर होते हैं। वे वसंत आने पर भी नहीं झड़ते बल्कि शाखाओं पर ही वसंती हवा में खड़-खड़ की ध्वनि करते रहते हैं। वे उन बूढ़े नेताओं की याद दिलाते हैं जो अपना पद छोड़ने को तब तक तैयार नहीं होते जब तक नई पीढ़ी के लोग उन्हें धका मारकर पीछे नहीं धकेल देते। लेखक ने इसके माध्यम से यह संदेश दिया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी स्थिति और अवस्था को समझना चाहिए। पुराने पत्ते झड़ जाने पर ही नए पत्तों को जगह मिलती है। संसार में बुढ़ापा और मृत्यु शाश्वत है। फिर यहाँ टिके रहने की कामना व्यर्थ है। यमराज को कोई धोखा नहीं दे सकता। लेखक ने मनुष्य को शिरीष के फूल के माध्यम से प्रेरणा दी है कि सुख-दुख में कभी हार नहीं माननी चाहिए। शिरीष जैसे वायुमंडल से ही जीवन-रस प्राहश्वत करता है उसी प्रकार महात्मा गांधी ने भी अपने वातावरण से जीवन-रस प्राहश्वत किया था। जो अनासत योगी की तरह कार्य करता है उसे ही जीवन में आगे बढ़ने की क्षमता प्राहश्वत होती है। कालिदास की सौंदर्य-चेतना, कबीरदास की फकड़ अनासत मस्ती, सुमित्रानंदन पंत की अनासति और गांधी जी की कोमलता-कठोरता शिरीष के फूल के समान ही है। महान वही बनता है जो प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष कर उसे अपने अनुकूल बनाने की शति रखता हो। परिस्थितियों से हार मानने वाला जीवन-राह में ही नष्ट हो जाता है।

(*iii*) गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है क्योंकि अनावृष्टि के कारण चारों तरफ सूखा पड़ जाता है। कुएँ, तालाब भी सूख जाते हैं। कहीं भी पानी का नामो-निशान नहीं रहता। पीने का पानी बिलकुल नहीं रहता, जिससे पशु-पक्षी हश्वयास के कारण व्याकुल होकर मरने लगते हैं।

उत्तर—11. (*i*) बाज़ार में भगत जी का स्वाभिमानी, निश्चेष्ट, आत्मसंयमी, मितव्ययी, दृढ़-निश्चयी आदि विशेषताओं से परिपूर्ण व्यतित्व उभरकर सामने आता है। भगत जी एक स्वाभिमानी और निश्चेष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं जिन्हें बाज़ार का आकर्षण, सौंदर्य, चहल-पहल, बड़ी-बड़ी दुकानें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकतीं और न ही उसके स्वाभिमान को डिगा सकती हैं। वे आत्मसंयमी और मितव्ययी पुरुष हैं। धन की कमी न होने के कारण भी वे बाज़ार में फिजूलखर्ची पर विश्वास नहीं करते। केवल उतनी ही वस्तुएँ खरीदते हैं जितनी उनकी आवश्यकता है और वे भी केवल अच्छे मूल्य में खरीदते हैं। बाज़ारू आकर्षण में फँसकर धन को नहीं लुटाते।

(*ii*) जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निज्नलिखित तर्क हैं—

(*i*) जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*ii*) श्रम-विभाजन निश्चय ही सय समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सय समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती।

(*iii*) भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती, बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

(*iv*) जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

(*iii*) लट्टन पहलवान ने जब राजा के दरबार में बहुत नामी पहलवानों को हराया वहीं से उसके अच्छे दिन शुरू हो गए। वह राजा का दरबारी पहलवान बन गया। आस-पास के सभी पहलवानों को हरा कर वह पूरी मस्ती से अपना जीवन जीने लगा इस दौरान उसके दो पत्र भी पैदा हुए उसका यह सुख चैन भरा जीवन राजा की मृत्यु तक रहे।

उत्तर—12. (*i*) यशोधर बाबू एक मर्यादित एवं संस्कार प्रिय व्यति हैं, इसलिए जब आधुनिक परिवेश में ढले लोग उनसे आधुनिकता के साथ व्यवहार करते हैं या आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यवहार करते हैं तो वे 'समहाउ इंप्रापर' कहकर अपनी भावनाएँ व्यत करते हैं। यह वाय उनका तकिया कलाम बन गया है। यशोधर बाबू जिस कार्यालय में सेशन ऑफिसर हैं उसी में एक नौजवान, जिसे सहकर्मी चड्ढा कहकर पुकारते हैं, वह चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले -फैशनेबल जूते पहने हुए है। इसकी यही आधुनिक वेशभूषा यशोधर बाबू को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होती है। नई पीढ़ी के न, लोग जो आधुनिकता के रंग में रंगे हुए हैं, यशोधर बाबू को बिलकुल भी ठीक नहीं लगते। इन्हें ही देखकर वे 'समहाउ इंप्रापर' जुमले का प्रयोग करते हैं। उनके व्यतित्व में यह जुमला पूरी तरह फिट हो गया है। वे यदा-कदा इस वाय को ज़रूर बोलते हैं। यशोधर बाबू अपने पारिवारिक जीवन में अपने बीवी-बच्चों के साथ ठीक से तालमेल नहीं बैठा पा रहे हैं क्योंकि उनके दृष्टिकोण में आधुनिकता हमारे संस्कारों और मर्यादाओं को समाहश्वत कर देती है। उनके बेटे और बेटियाँ अपने जीवन में स्वतंत्र हैं। उनकी बेटी जीन्स और बिना बाजुओं वाला टॉप पहनती है। यशोधर बाबू उसके लिए अनेक वर ढूँढ़ चुके हैं परंतु वह उन सबको अस्वीकार कर चुकी है और पिता को यह धमकी देती है अगर आपने मेरे रिश्ते की बात की तो वह मेडिकल की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली जाएगी। यशोधर बाबू अपने बच्चों की तरकी से खुश तो हैं परंतु उन्हें यह बात 'समहाउ इंप्रापर' नहीं लगती कि यह खुशहाली किस काम की जो अपनों में परायापन पैदा कर देती है! कहानी में यशोधर बाबू का अपने बीवी-बच्चों एवं नई पीढ़ी की सोच के साथ सामंजस्य न बिठा पाना ही मुख्य कथ्य है। संपूर्ण कथ्य में यशोधर बाबू का व्यतित्व नई पीढ़ी की नई सोच का विरोधी है। इस प्रकार यशोधर बाबू का यह तकिया कलाम 'समहाउ इंप्रापर' उनके व्यतित्व और कहानी के कथ्य को और अधिक प्रभावशाली बना देता है।

(*ii*) 'जूझ' आनंद यादव का एक बहुचर्चित उपन्यास है। आत्मकथात्मक शैली में लिखित यह उपन्यास लेखक के जीवन से जुड़ा हुआ है। लेखक के पिता लेखक को पाँचवीं कक्षा से हटाकर खेतों के काम में लगा देते हैं। लेखक को यह बात बहुत बुरी लगती है। वे बार-बार यह सोचते हैं कि कोई उनके पिता को समझा दे ताकि वे फिर अपनी पढ़ाई पूरी कर सके। एक दिन अपनी माँ के साथ कंडे थापते हुए उन्होंने अपनी माँ के समक्ष अपनी मंशा व्यक्त की। माँ और बेटे दोनों गाँव के मुखिया दत्ता जी राव के पास पिता पर दबाव डलवाने की योजना बनाते हैं। लेखक का मत है कि जीवन भर खेतों में काम करके कुछ भी हाथ लगने वाला नहीं है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी खेतों में काम करके कुछ भी प्राहश्वत नहीं हो सका। वे मानते हैं कि यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। अगर मैं पढ़-लिख गया तो कहीं मेरी नौकरी लग जाएगी या कोई व्यापार करके अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है। रात के समय माँ-बेटा जब दत्ता जी राव के घर जाकर पूरी बात बताते हैं तो दत्ता जी राव पिता जी को बुलाकर खूब डाँटते हैं और कहते हैं कि तू सारा दिन या करता है। बेटे और पत्नी को खेतों में जोत कर तू सारा दिन साँड की तरह घूमता रहता है। कल से बेटे को स्कूल भेज, अगर पैसे नहीं हैं तो -फीस मैं भर दूँगा। परंतु पिता जी को यह सब कुछ बुरा लगा। दत्ता जी राव के सामने 'हाँ' करने के बावजूद भी वे आनंद को स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं थे। इसलिए बेटे को कहते हैं स्कूल से आने के बाद खेतों में यदि किसी दिन नहीं आया तो देख गाँव में जहाँ मिलेगा वहीं कुचलता हूँ कि नहीं तुझे। तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार है। मुझे मालूम है, बालिस्टर नहीं होने वाला है तू? इस प्रकार लेखक और उनके पिता जी की सोच में एक बड़ा अंतर है। हमारे खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया लेखक के पिता की सोच से ज़्यादा ठीक है योंकि पढ़ने-लिखने से व्यति का सर्वांगीण विकास होता है। पढ़ा-लिखा व्यति ही अपने और समाज के बारे में ठीक से समझ सकता है। पढ़ा-लिखा व्यति ही नौकरी कर सकता है अथवा अपने व्यापार को ठीक से चला सकता है। तो यह बिलकुल सही है कि पढ़ाई व्यति के विकास में सहायक सिद्ध होती है। यह व्यक्ति की बुद्धिमत्ता बढ़ाती है। खेतों में सारा दिन काम करने वाला लेखक अब गणित के सवाल झट से हल कर देता है। वह अब कविता करने लगा है। कविता लिखने के साथ उन्हें गाता है और हाव-भाव के अनुसार अभिनय भी करता है। उसके मन में छिपी प्रतिभा पढ़ाई के माध्यम से बाहर आ जाती है। इस प्रकार पढ़ाई-लिखाई किसी भी व्यति के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होती है।

(*iii*) श्री सौंदलगेकर कथा-नायक के पाँचवीं कक्षा में मराठी के मास्टर थे। वे कविता के अध्यापन के साथ कविता गाया भी करते थे। जब वे कक्षा में कोई कविता पढ़ाया करते तो उसे गाने के साथ, हाव-भाव के अनुसार अभिनय भी किया करते थे। वे कविता को गाते समय ताल, छंद, लय, गति और यति का पूरा ध्यान रखते थे। जब कक्षा में मास्टर जी कविता गाते तो लेखक उन्हें खूब ध्यान लगाकर सुना करते थे। मास्टर जी कक्षा में कवि यशवंत, बा०भ० बोरकर, भा०रा० ताँबे, गिरीश तथा केशव कुमार आदि कवियों की कविताएँ सुनाते तथा उनके साथ अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाया करते थे। मास्टर जी स्वयं भी कविता किया करते थे। कभी-कभी वे अपनी कोई कविता कक्षा में सुनाते थे। लेखक मास्टर जी से इतने प्रभावित हुए कि वे कविता को गाने लगे तथा साथ ही अभिनय करने लगे। उन्होंने बड़ी कक्षाओं के बच्चों के सामने लेखक को कविता सुनाने के लिए प्रेरित किया। जब लेखक कोई कविता बनाते तो अगले दिन मास्टर जी को दिखाया करते थे। मास्टर जी उनकी कविता को ध्यान से पढ़ते और उन्हें शाबाशी दिया करते थे। उन्होंने लेखक को छंद, लय, अलंकार, भाषा-शैली और शुद्ध लेखन के बारे में समझाया। उनके अध्यापन की इन्हीं विशेषताओं के कारण कवि के मन में कविता के प्रति रुचि पैदा होने लगी।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–3

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं

विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (ग) भागलपुर विश्वविद्यालय का
(2) (ग) बिहार
(3) (ख) केवल कथन (I), (II) व (IV) सही हैं।
(4) देवदूत
(5) शुभ्र बदन, ओजस्वी, सिंह गर्जन न झुकने की प्रकृति
(6) कर्ण का
(7) स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद

उत्तर—2. (1) (घ) सुरों के शीश पर सोहता है।
(2) (ग) (I) और (II)
(3) (ख) वस्त्र
(4) सद्गुणों से ही मनुष्य प्रेम प्राप्त करता है।
(5) बड़प्पन को पहचानना
(6) अच्छे कर्मों से।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) मानव जीवन का सत्य—मिट्टी का बना हुआ एक नन्हा-सा दीया जब जलता है तो रात्रि के अंधकार से लड़ता हुआ उसे दूर भगा देता है। अपने आस-पास हलका-सा उजाला फैला देता है। जिस अंधकार में हाथ को हाथ नहीं सूझता उसे भी दीया अपना मंद प्रकाश फैलाकर रास्ता दिखा देता है। हवा का हलका-सा झोंका जब दीये की लौ को कँपा देता है तब ऐसा लगता है कि इसके बुझते ही अंधकार फिर छा जाएगा और फिर हमें उजाला कैसे मिलेगा? दीया चाहे छोटा-सा होता है पर वह अकेला अंधकार के संसार का सामना कर सकता है तो हम इनसान जीवन की राह में आने वाली कठिनाइयों का भी उसी की तरह मुकाबला यों नहीं कर सकते? यदि वह तूफ़ान का सामना करके अपनी टिमटिमाती लौ से प्रकाश फैला सकता है तो हम भी हर कठिनाई में कर्मठ बनकर संकटों के घेरों से निकल सकते हैं। महाराणा प्रताप ने सब कुछ खोकर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की ठानी थी। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने नन्हे-से दीये के समान जीवन की कठोरता का सामना किया था और विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत का प्रधानमंत्री पद प्राप्त कर लिया था। हमारे राष्ट्रपति कलाम ने अपना जीवन टिमटिमाते दीये के समान आरंभ किया था पर आज वही दीया हमारे देश को मिसाइलें प्रदान करने वाला प्रचंड अग्नि-पुंज है। उसने देश को जो शक्ति प्रदान की है वह स्तुत्य है। समुद्र में एक छोटी-सी नौका ऊँची-तूफ़ानी लहरों से टकराती हुई अपना रास्ता बना लेती है और अपनी मंज़िल पा लेती है। एक छोटा-सा प्रवासी पक्षी साइबेरिया से उड़कर हज़ारों-लाखों मील दूर पहुँच सकता है तो हम इनसान भी कठिन-से-कठिन मंज़िल प्राप्त कर सकते हैं। अकेले अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में कौरवों जैसे महारथियों का डटकर सामना किया था। कभी-कभी तूफ़ान अपने प्रचंड वेग से दीये की लौ को बुझा देता है, पर जब तक दीया जगमगाता है, तब तक तो अपना प्रकाश फैलाता है और अपने अस्तित्व को प्रकट करता है। मिटना तो सभी को है एक दिन। मनुष्य को चाहिए कि वह कठिनाइयों से डरकर छिपा न रहे और डटकर उनका मुकाबला करे। श्रेष्ठ मनुष्य वही है जो दीये के समान जगमगाता हुआ तूफ़ानों की परवाह न करे और अपनी रोशनी से संसार को उजाला प्रदान करता रहे।

(*ii*) **जल के प्रयोग में सहकारिता**—'जल ही जीवन है' यह बात बिल्कुल सच है क्योंकि बिना जल के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस संसार में जल का कोई विकल्प नहीं है। यह प्रकृति की अनूठी भेंट है। हवा के बाद जल ही जीवन रक्षा का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। पर आजकल हम जल को बरबाद कर रहे हैं। हम इस बात को नहीं समझ रहे कि यह जल की बरबादी नहीं बल्कि इससे हमारा जीवन ही बरबाद हो रहा है।

इसलिए हमें जल का प्रयाग सोच-समझकर करना चाहिए। नहाते समय ज़रूरत के अनुसार जल गिराना चाहिए। नहाने के लिए सीधे नल न खोलकर बावटी का प्रयोग करना चाहिए। हाथ-पैर धोते समय व्यर्थ पानी नहीं बहाना चाहिए। कपड़े धोने के लिए कम-से-कम जल का प्रयोग करना चाहिए। अपने घर, स्कूल आदि के नल कभी भी खुले नहीं छोड़ने चाहिए। अपनी गाड़ियाँ धोने के लिए अमूल्य जल को नष्ट नहीं करना चाहिए। बाग-बगीचे में पाइप की अपेक्षा फव्वारे से पानी देना चाहिए। रसोईघर में बर्तन साफ करने और सब्जियाँ धोते समय व्यर्थ जल नहीं बहाना चाहिए। घर का फर्श धोते समय जल को नहीं बहाना चाहिए। किसी भी जगह पर नल को खुला देखकर उसे बंद कर देना चाहिए अथवा उसकी सूचना तुरंत नज़दीकी जल विभाग को देनी चाहिए। अपने नल खराब होने पर उसी समय ठीक करवाने चाहिए। इस प्रकार हमें सदा जल का सदुपयोग करना चाहिए।

(*iii*) **मतदान केंद्र का दृश्य**—प्रजातंत्र में चुनाव अपना विशेष महत्व रखते हैं। गत 22 फरवरी को हमारे नगर में विधानसभा क्षेत्र के लिए उप-

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

चुनाव हुआ। चुनाव से कोई महीना भर पहले विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा बड़े ज़ोर-शोर से चुनाव प्रचार किया गया। धन का खुलकर वितरण किया गया। हमारे यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध है कि चुनाव के दिनों में यहाँ नोटों की वर्षा होती है। चुनाव आयोग ने लाख सिर पटका पर ढाक के तीन पात ही रहे। आज मतदान का दिन है। मतदान से एक दिन पूर्व ही मतदान केंद्रों की स्थापना की गई है। मतदान वाले दिन जनता में भारी उत्साह देखा गया। इस चुनाव में पहली बार इलेट्रॉनिक मशीनों का प्रयोग किया जा रहा था। अब मतदाताओं को मतदान केंद्र पर मत-पत्र नहीं दिए जाने थे और न ही उन्हें अपने मत मतपेटियों में डालने थे। अब तो मतदाताओं को अपनी पसंद के उम्मीदवार के नाम और चुनाव-चिन्ह के आगे लगे बटन को दबाना था। इस नए प्रयोग के कारण भी मतदाताओं में काफ़ी उत्साह देखने को मिला मतदान प्रात: आठ बजे शुरू होना था किंतु मतदान केंद्रों के बाहर विभिन्न राजनीतिक दलों ने अपने-अपने पंडाल समय से काफ़ी पहले सजा लिए थे। उन पंडालों में उन्होंने अपनी-अपनी पार्टी के झंडे एवं उम्मीदवार के चित्र भी लगा रखे थे। दो-तीन मेज़ें भी पंडाल में लगाई गई थीं। जिन पर उम्मीदवार के कार्यकर्ता मतदान सूचियाँ लेकर बैठे थे और मतदाताओं को मतदाता सूची में से उनकी क्रम संख्या तथा मतदान केंद्र की संख्या तथा तदान केंद्र का नाम लिखकर एक पर्ची दे रहे थे। आठ बजने से पूर्व ही मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लंबी-लंबी पंतियाँ लगनी शुरू हो गई थीं। मतदाता खूब सज-धज कर आए थे। ऐसा लगता था कि वे किसी मेले में आए हों। दोपहर होते-होते मतदाताओं की भीड़ में कमी आने लगी। चुनाव आयोग ने मतदाताओं को किसी प्रकार के वाहन में लाने की मनाही की है किंतु सभी उम्मीदवार अपने-अपने मतदाताओं को रिशा, जीप या कार से ला रहे थे। सायं पाँच बजते-बजते यह मेला उजड़ने लगा। भीड़ मतदान केंद्र से हटकर उम्मीदवारों के पंडालों में जमा हो गई थी और सभी अपने-अपने उम्मीदवार की जीत के अनुमान लगाने लगे।

4. (*i*) समाचार-पत्रों में समाचारों के अतिरिक्त प्रकाशित होने वाले पत्रकारीय लेखन के फ़ीचर सबसे महत्वपूर्ण हैं। समाचार और फ़ीचर में पर्याप्त अंतर होता है। फ़ीचर का मुख्य लक्ष्य पाठकों को सूचना देने, उन्हें शिक्षित करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना होता है। फ़ीचर पाठकों को उसी समय घटित घटनाओं से परिचित नहीं कराता, जबकि समाचार पाठकों को तात्कालिक घटनाओं से परिचित कराता है। फ़ीचर लेखन की शैली समाचार-लेखन की शैली से भी भिन्न होती है। समाचार लिखते समय रिपोर्टर वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर बल देता है। उसमें अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर नहीं होता। लेकिन फ़ीचर में लेखक अपने विचार, भावनाएँ तथा दृष्टिकोण को व्यक्त कर सकता है। फ़ीचर लेखन में उलटा पिरामिड शैली के स्थान पर कथात्मक शैली का प्रयोग होता है। फ़ीचर लेखन की भाषा समाचारों की अपेक्षा सरल, आकर्षक, रूपात्मक तथा मन को मोह लेने वाली होती है। फ़ीचर में समाचारों की अपेक्षा कम शब्दों का प्रयोग होता है। फ़ीचर समाचार रिपोर्ट से प्राय: दीर्घ होते हैं। समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के फ़ीचर प्रकाशित होते हैं। एक आकर्षक, रोचक एवं अच्छे फ़ीचर के साथ पोस्टर, रेखांकन, ग्राफ़िस का होना आवश्यक है। फ़ीचर का विषय हलका एवं गंभीर कुछ भी हो सकता है। फ़ीचर एक पाठशाला के परिचय से लेकर किसी शैक्षणिक यात्रा पर भी केंद्रित हो सकता है। फ़ीचर एक ऐसा नुस्खा है जो ज़्यादातर विषय एवं मुद्दे को ध्यान में रखकर उसे प्रस्तुत करते हुए दिया जाता है। फ़ीचर की इन्हीं विशेषताओं के कारण कुछ समाचारों को भी फ़ीचर शैली में प्रस्तुत किया जाता है।

(*ii*) रटंत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है। वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है। उसे अपनी बुद्धि तथा चिंतन शति पर विश्वास नहीं रहता।

(*iii*) टेलीविज़न जनसंचार माध्यमों में देखने और सुनने का माध्यम है। टेलीविज़न के लिए खबर या रिश्वत लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि शब्द परदे पर दिखाई देने वाले दृश्य के अनुकूल हों। टेलीविज़न लेखन प्रिंट और रेडियो माध्यम के लिए लेखन से काफ़ी भिन्न है। इसके द्वारा कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक समाचार बताया जाता है। दूरदर्शन के लिए समाचार दृश्यों के आधार पर लिखे जाते हैं। कैमरे से लिए गए शॉट्स को आधार बनाकर समाचार तैयार किए जाते हैं। दूरदर्शन पर समाचार दो तरह से पेश किए जाते हैं। इसका प्रारंभिक हिस्सा, जिसमें मुख्य समाचार होते हैं, रीडर या एंकर दृश्यों के बिना पढ़ता है। दूसरे हिस्से में परदे पर एंकर के स्थान पर समाचार से संबंधित दृश्य प्रस्तुत किए जाते हैं। अत: दूरदर्शन पर समाचार दो हिस्सों में विभाजित होते हैं। समाचार के साथ-साथ दृश्य प्रस्तुत होने के कारण दूरदर्शन (टेलीविज़न) का जनसंचार माध्यमों में महत्वपूर्ण स्थान है।

(*iv*) समाचार-पत्र या अन्य समाचार माध्यमों द्वारा अपने संवाददाता को किसी क्षेत्र या विषय यानी बीट की दैनिक रिपोर्टिंग की ज़िम्मेदारी दी जाती है। यह एक तरह के रिपोर्टर का कार्यक्षेत्र निश्चित करना है।

(*v*) (*i*) मंत्रालय के सूत्र
(*ii*) प्रेस कॉफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ
(*iii*) साक्षात्कार
(*iv*) सर्वे
(*v*) जाँच समितियों की रिपोर्ट
(*vi*) क्षेत्र विशेष में सक्रिय संस्थाएँ और व्यति
(*vii*) संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यति
(*viii*) इंटरनेट और दूसरे संचार के माध्यम
(*ix*) स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

5. (*i*) हिंदी में नेट पत्रकारिता का आरंभ 'वेब दुनिया' के साथ हुआ था। इंदौर के नई दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। हिंदी के समाचार-पत्र—'हिंदुस्तान', 'जागरण', 'अमर उजाला' 'नई दुनिया', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर', 'राष्ट्रीय सहारा' आदि के वेब संस्करण उपलब्ध हैं, पर इस क्षेत्र में 'बी० बी० सी०' हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट है। हिंदी वेब जगत में अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं, जैसे—अनुभूति, अभिव्यति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि प्रशंसनीय काम कर रही हैं। सभी मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों और बैंकों के हिंदी अनुभाग उपलब्ध हैं। इससे हिंदी की ऑन

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

लाइन पत्रकारिता का मार्ग तैयार हुआ है। वास्तव में हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है। इसमें सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फ़ॉन्ट की है। हमारे पास कोई 'की-बोर्ड' नहीं है। डायनमिक फ़ॉन्ट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की अधिकतर साइट्स खुलती ही नहीं हैं। इस समस्या से निपटने के लिए कीबोर्ड का मानकीकरण और बेलगाम फ़ॉन्ट पर नियंत्रण आवश्यक है।

(*ii*) (*i*) मंत्रालय के सूत्र

(*ii*) प्रेस कॉफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ

(*iii*) साक्षात्कार (*iv*) सर्वे

(*v*) जाँच समितियों की रिपोर्ट

(*vi*) क्षेत्र विशेष में सक्रिय संस्थाएँ और व्यक्ति

(*vii*) संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यक्ति

(*viii*) इंटरनेट और दूसरे संचार के माध्यम

(*ix*) स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

(*iii*) कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (ख)

(2) (ग)

(3) (घ)

(4) (ग)

(5) (घ)

उत्तर—7. (*i*) चिड़िया से, फूलों से, बच्चों से।

(*ii*) इस कथन के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि जब भी हम कोई रचना करते हैं तो हमें उस समय अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आडंबरपूर्ण भारी-भरकम समझ में न आने वाली शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अपनी भावनाओं को व्यत करने के लिए हमें सहज, सरल, व्यावहारिक तथा सबकी समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिससे कवि की भावनाओं को सहज तथा स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

(*iii*) उषा काल में सूर्योदय आकर्षक होता है। प्रात:काल नीले गगन में सूर्य की फैलती प्रथम सफ़ेद लाल किरणें हृदय को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती हैं। उसका बरबस आकृष्ट करना ही जादू है। सूर्य उदित होते ही यह भव्य प्राकृतिक दृश्य सूर्य की तरुण किरणों में आहत हो जाता है। उसका समोहन और प्रभाव नष्ट हो जाता है।

उत्तर—8. (*i*) शीघ्र समाप्त होने वाला।

(*ii*) 'सब घर एक कर देने के माने' से अभिप्राय है सभी घरों को एकसमान समझना तथा अपना-पराया, छोटा-बड़ा, मेरा-तेरा, जाति-धर्म, संप्रदाय आदि संकुचित भावनाओं को मिटाकर सबको एकसमान देखना। समाज में छोटे बच्चे का मन बहुत कोमल होता है। उसे किसी से भेदभाव, ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं होता, इसलिए वह अपने साथियों के साथ खेलने के लिए सभी घरों में जाता है। वह समस्त संकीर्णताओं को मिटाकर सभी घरों को एक समान कर देता है।

(*iii*) तुलसी जी समकालीन समाज में व्याप्त गरीबी और बेकारी का यथार्थ चित्रण करते हुए प्रभु राम को संबोधन करके कहते हैं कि हे दीनबंधु! समाज में हर तरफ़ गरीबी और बेकारी का बोलबाला है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति दुखी है। किसान के पास खेती करने के लिए उचित साधन नहीं हैं जिससे वह खेती पैदा नहीं कर सकता। भिखारी को भीख नहीं मिलती। कोई संपन्न व्यक्ति नहीं जो भीख दे सके। व्यापारी के पास कोई व्यापार नहीं है जिससे उसकी आजीविका चल सके।

उत्तर—9. (1) (ख) बड़े और छायादार

(2) कमज़ोर

(3) तोंद वाले

(4) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याखया करता है।

(5) (*i*) और (*ii*)

उत्तर—10. (*i*) 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण धर्मवीर भारती द्वारा रचित है। इसमें लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का सुंदर चित्रण किया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास की अपनी सामर्थ्य है। इसमें कौन कितना सार्थक है, यह प्रश्न पढ़े-लिखे समाज को उत्तेजित करता रहता है। इसी दुविधा को लेकर लेखक ने पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। लेखक ने अपने किशोरपन जीवन के इस संस्मरण में दिखलाया है कि अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों की इंदरसेना द्वार-द्वार पानी माँगता चलती है। लेखक का तर्कशील किशोर मन भीषण सूखे में उस पानी को निर्मम बरबादी के रूप में देखता है। आषाढ़ के उन सूखे दिनों में जब चहुँ ओर पानी की कमी होती है। इंदर सेना गाँव की गलियों में जयकारे लगाते हुए पानी माँगता फिरती है। अभाव के बावजूद भी लोग अपने-अपने घरों से पानी लेकर इन बच्चों को सिर से पैर तक तर कर देते हैं। आषाढ़ के इन दिनों में गाँव-शहर के सभी लोग गर्मी से परेशान त्राहिमाम कर रहे होते हैं तब ये मंडली 'काले मेघा पानी दे', के नारे लगाती हुई यहाँ-वहाँ घूम रही होती है। अनावृष्टि के कारण शहरों की अपेक्षा गाँवों की हालत त्रासदपूर्ण हो जाती है। खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर हो जाती है। ज़मीन फटने लगती है। पशु प्यास के कारण मरने लगते हैं। लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता। बादल कहीं नज़र नहीं आते। ऐसे में लोग पूजा-पाठ कर हार जाते तो यह इंदर-सेना निकलती है।

(*ii*) कहानी के प्रारंभ, मध्य और अंत के मोड़ पर लुट्टन के जीवन में अग्रलिखित परिवर्तन आए—

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*i*) प्रारंभ—कहानी के प्रारंभ में लुट्टन सिंह अपने गाँव में रात्रि की विभीषिका में ढोल बजाकर संजीवनी शक्ति प्रदान किया करता था। नौ वर्ष की अवस्था में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। उसकी शादी बचपन में हो गई थी, इसलिए उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने ही किया। बचपन में वह गाय चराया करता था। गायों का दूध पीकर वह कसरत करने लगा। इसलिए उसका शरीर सुडौल और हट्टा-कट्टा बन गया। अब वह गाँव में अच्छा पहलवान समझा जाने लगा था।

(*ii*) मध्य—कहानी के मध्य में लुट्टन सिंह को अपने जीवन में भरपूर तरकी मिली। उसने श्यामनगर में लगने वाले मेले में चाँद सिंह नामक पहलवान को हराया, जिससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। श्यामनगर के राजा श्यामानंद ने उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे अपना राज पहलवान बना दिया। अब उसका सारा खर्च राजमहल की तरफ से होने लगा। बाद में उसने नियमित कसरत और व्यायाम के बलबूते 'काला खाँ' जैसे—अनेक प्रसिद्ध पहलवानों को हराया। वह एक अजेय पहलवान बन गया। उसने अपने दोनों बेटों को भी पहलवान बना दिया था।

(*iii*) अंत—कहानी के अंत में लुट्टन सिंह के जीवन पर वज्रपात हुआ और वह उन्नति व प्रसिद्धि के शिखर से नीचे गिर गया। श्यामनगर के राजा श्यामानंद का स्वर्गवास हो गया था। उनके स्थान पर विलायत से नया राजा आ गया, जिसने सारी व्यवस्था को बदल दिया। दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया था। राजा के दुर्व्यवहार का शिकार होकर लुट्टन सिंह श्यामनगर को छोड़ अपनी ढोलक कंधे पर लटकाकर गाँव वापस आ गया। गाँव में अचानक महामारी फैल गई। सूखा पड़ा, अनाज कम पड़ गया। गाँव में चारों ओर लोग हैज़े और मलेरिया से मरने लगे। उसके दोनों बेटे भी इसी विभीषिका में मारे गए और अंततः रात्रि में एक दिन लुट्टन सिंह की भी मृत्यु हो गई।

(*iii*) जाति-प्रथा भारतीय समाज में मनुष्य का पेशा उसके गर्भधारण या जन्म के समय ही निर्धारित कर देती है। यह पेशा उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार दिया जाता है। इसके साथ ही यह केवल पेशे का पूर्व निर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को आजीवन उसी पेशे के साथ बाँध देती है। समय परिवर्तन के साथ उद्योग-धंधों, तकनीक आदि में निरंतर विकास होने के कारण प्राचीन पेशे समाज में अपर्याप्त होने लगते हैं तो आदमी बेकार हो जाता है। वह अपने पेशे को बदलना चाहता है, लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियाँ उसे पेशा नहीं बदलने देतीं, जिससे उसके जीवन में भुखमरी फैल जाती है। हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी मनुष्य को पैतृक पेशे के अलावा अन्य पेशा चुनने की अनुमति प्रदान नहीं करती, चाहे उसमें वह अत्यंत कुशल ही क्यों हो। यही कारण है कि जाति-प्रथा के कारण भारतीय समाज में बेरोज़गारी और भुखमरी फैलती रही है और यह स्थिति आज भी बनी हुई है।

उत्तर—11. (*i*) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह इसलिए माना है क्योंकि अवधूत जिस प्रकार मस्त, फक्कड़, अनासत, सरस और मादक होते हैं उसी प्रकार शिरीष के फूल भी फक्कड़ होकर ही उपजते हैं। संत कबीर, कालिदास, गांधी जैसे अवधूत जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संसार को जीने की चेष्टा दी, उसी प्रकार शिरीष भी भयंकर गरमी की लू में भी फूल उठता है तथा चारों ओर अपनी सुंदरता फैलाता रहता है। यह लोगों के मन में तरंगें उत्पन्न कर देता है। भीषण गरमी से अनासत होकर महकता रहता है। उसके ऊपर प्रचंड गर्मी, लू, अंधड़ आदि का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

(*ii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देश में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

(*iii*) लट्टन पहलवान ने जब राजा के दरबार में बहुत नामी पहलवानों को हराया वहीं से उसके अच्छे दिन शुरू हो गए। वह राजा का दरबारी पहलवान बन गया। आस-पास के सभी पहलवानों को हरा कर वह पूरी मस्ती से अपना जीवन जीने लगा इस दौरान उसके दो पुत्र भी पैदा हुए उसका यह सुख चैन भरा जीवन राजा की मृत्यु तक रहे।

उत्तर—12. (*i*) पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य का संबंध यशोधर बाबू के आदर्श किशनदा की मृत्यु से है। इस कहानी में 'जो हुआ होगा' वाक्य की छवि सर्वप्रथम उस समय उभरती है जब किशनदा की मृत्यु के संदर्भ में लेखक का कथन सामने आता है। जिस जगह पर किशनदा का वार्टर था उसके सामने यशोधर बाबू ने सोचा कि किशनदा की तरह, घर-गृहस्थी का बवाल ही न पाला होता और 'लाइफ' कम्युनिटी के लिए 'डेडीकेट' कर दी होती। फिर वे किशनदा के बारे में सोचने लगे कि किशनदा का बुढ़ापा सुखी नहीं था। जब सेवानिवृत्ति के छह महीने बाद उन्हें सरकारी वार्टर खाली करना पड़ा तब किसी साथी ने उन्हें अपने यहाँ रहने की पेशकश नहीं की जबकि उन्होंने अपने प्रत्येक साथी पर कोई-न-कोई एहसान ज़रूर किया था। स्वयं यशोधर बाबू मजबूर थे योंकि उनका विवाह हो चुका था और उनके वार्टर में अपने परिवार के बाद कोई भी जगह ऐसी नहीं बची थी कि वे वार्टर के किसी कोने में किशनदा को जगह दे सकते। कुछ साल किशनदा राजेंद्र नगर में किराए के मकान में रहे और फिर अपने गाँव वापस चले गए। एक साल बाद वहाँ उनकी मृत्यु हो गई थी। उनके बारे में यह कहा जाता है कि उन्हें कोई गंभीर बीमारी भी नहीं थी। बस सेवानिवृति के बाद उनका चेहरा सूखता-मुरझाता-सा चला गया। जब यशोधर बाबू ने किसी एक रिश्तेदार से पूछा कि किशनदा की मृत्यु कैसे हुई तो उत्तर मिला—''जो हुआ होगा'' यानी पता नहीं, या हुआ इस प्रकार यशोधर बाबू यही विचार करते हैं कि जिनके बाल-बच्चे नहीं होते तो उनकी मृत्यु 'जो हुआ होगा' जैसी बीमारी से हो जाती है। दूसरे श8दों में जिनके बाल-बच्चे ही नहीं होते तो वह व्यति अकेलेपन के कारण स्वस्थ दिखने के बाद भी बीमार-सा हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है, इसलिए किशनदा की मृत्यु के सही कारणों का पता नहीं चल सका है। बस यशोधर बाबू यही सोचते रह गए कि किशनदा की मृत्यु कैसे हो सकती है, जिसका उत्तर किसी के पास नहीं है।

(*ii*) लेखक 'ओम थानवी' ने अपनी यात्रा के समय जब सिंधु घाटी की सयता से जुड़े दो महानगरों मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के घरों, गलियों, सड़कों और खुदाई में वास्तुशिल्प से जुड़े सामान को देखा तो यह निष्कर्ष निकाला कि अगर सिंधु घाटी की सयता के साथ विश्व की अन्य सयताओं की तुलना की जाए तो सिंधु घाटी की सयता साधन संपन्न थी उसमें

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

कृत्रिमता एवं आडंबर नहीं था। इस निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं—

जब मुअनजो-दड़ो स्थित एक छोटा-सा संग्रहालय देखने गए तो वहाँ उन्होंने एक अलग बात अनुभव की कि इस संग्रहालय में औज़ार तो हैं परंतु हथियार कोई नहीं है। अगर सिंधु से लेकर हरियाणा तक खुदाई में मिले अवशेषों पर गौर किया जाए तो हथियार कहीं भी नहीं हैं। जिस प्रकार प्रत्येक राजा के पास हथियारों की एक बड़ी खेप होती है परंतु यहाँ हथियार नाम की चीज़ नहीं है। पुरातात्विक विद्वानों के लिए यह बड़ा प्रश्न है कि सिंधु सयता में शासन और सामाजिक प्रबंध के तौर-तरीके या रहे होंगे? यहाँ की सयता में अनुशासन तो है परंतु किसी सत्ता के बल के द्वारा नहीं है। यह अनुशासन वहाँ की नगर-योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठहश्वपों, जल-व्यवस्था, साफ़-सफ़ाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता में देखी जा सकती है। दूसरी सयताओं में प्रशासन राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित है। वहाँ बड़े-बड़े सुंदर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मंदिर मिले हैं। राजाओं और धर्माचार्यों की समाधियाँ भी दूसरी सयताओं में भरपूर मात्रा में मौजूद हैं। सिंधु घाटी सयता की खुदाई में छोटी-छोटी नावें मिली हैं जबकि मिस्र की सयता में बड़ी नावों का प्रचलन था। सांस्कृतिक धरातल पर यह तथ्य सामने आता है कि सिंधु घाटी की सयता दूसरी सयताओं से अलग एवं स्वाभाविक, साधारण जीवन-शैली पर आधारित थी। सिंधु सयता के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं आडंबर दिखाई नहीं पड़ता जबकि अन्य सयताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते अनेक प्रमाण मौजूद हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिंधु सयता संपन्न थी परंतु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। इसलिए इसे 'लो प्रोफ़ाइल सयता' भी कहा जाता है।

(*iii*) वाराणसी, उज्जैन, मदुरै, पटना, तंजावुर।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–4

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं

विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (क) स्वच्छता

(2) (ग) गांधी जयंती से

(3) (घ) केवल कथन (I), (II) और (IV) सही हैं।

(4) छूआ छूत की भावना

(5) स्वच्छता के महत्व को न समझने के कारण भारतीयों को स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता पड़ी।

(6) स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी जागरूकता स्वस्थ समाज बनाने के लिए आवश्यक है।

(7) व्यक्तिगत।

उत्तर—2. (1) (घ) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

(2) (ग) प्रकृति के रहस्यों से अनजान रहने से

(3) (ख) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता

(4) समाज को अपनी कला दिखाने के लिए।

(5) जो अपनी प्रशंसा में रत रहते हैं। जिन्हें सिर्फ अपनी प्रशंसा अच्छी लगती है।

(6) सूर्य को कभी चमकने से रोका नहीं जा सकता।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का कद निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह सर्वविदित है कि आज भारत के नाम का डंका विश्व के तमाम देशों में बज रहा है। प्राचीन काल में हमारे देश भारत को सपेरों का देश कहा जाता था और पश्चिमी देश भारत को हेय नज़र से देखते थे, लेकिन आज सभी पश्चिमी देशों में भारत के विज़य में धारणा बिलकुल बदल गई है। आज भारत विश्व के अनेक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंचों की अगुवाई कर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री का आज हर देश का राष्ट्राध्यक्ष बड़ी गर्मजोशी से अभिनंदन करता है। भारत अनेक अंतरराष्ट्रीय समूह का प्रमुख सदस्य है। इसी वर्ष 2023 में भारत में होने वाली जी-20 की बैठक भारत के बढ़ते महत्व को स्पष्ट करती है। भारत क्वाड जैसे प्रमुख संगठन का सदस्य है। भारत के कुशल युवा आईटी के क्षेत्र में विश्व के हर देश में अपना परचम लहरा रहे हैं। अमेरिका की सिलिकॉन वैली भारत की युवा प्रतिभा से भरी पड़ी है। अलग-अलग क्षेत्र में अनेक कुशल भारतीय व्यक्ति विश्व की अनेक प्रमुख कंपनियों के सीईओ हैं, जिनमें गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, यूट्यूब जैसी बड़ी कंपनियों के नाम शामिल हैं। इस बात से स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का कद निरंतर बढ़ता जा रहा है। अब का भारत आईटी के युवा पेशेवरों का देश बन चुका है। भारत से अनेक तरह की प्रतिभाएँ निकलकर पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन कर रही हैं। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था स्थापित हो चुकी है। इन सब बातों से स्पष्ट हो रहा है कि भारत का कद नि:संदेह बढ़ा है।

(*ii*) दूसरों को उपदेश देना अर्थात सब प्रकार से आदर्शों का पालन करने की प्रेरणा देना सरल है। जैसे कहना सरल है तथा करना कठिन है, उसी प्रकार स्वयं अच्छे पथ पर चलने की अपेक्षा दूसरों को अच्छे काम करने का संदेश देना सरल है। जो व्यक्ति दूसरों को उपदेश देता है, वह स्वयं भी उन उपदेशों का पालन कर रहा है, यह ज़रूरी नहीं। हर व्यापारी, अधिकारी तथा नेता अपने नौकरों, कर्मचारियों तथा जनता को ईमानदारी, सच्चाई तथा कर्मठता का उपदेश देता है जबकि वह स्वयं भ्रष्टाचार के पथ पर बढ़ता रहता है। नेता मंच पर आकर कितनी सारगर्भित बातें कहते हैं, पर उनका आचरण हमेशा उनकी बातों के विपरीत होता है। माता-पिता तथा गुरुजन बच्चों को नियंत्रण में रहने का उपदेश देते हैं—पर वे यह भूल जाते हैं कि उनका अपना जीवन अनुशासनबन एवं नियंत्रित नहीं है।

(*iii*) विभिन्न जनसंचार माध्यमों के वर्तमान प्रचलित रूप निम्नलिखित हैं—

1. प्रिंट माध्यम-समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ।

2. इलेट्रॉनिक माध्यम-रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा, इंटरनेट। इनके लिए लेखन अलग-अलग तरीकों द्वारा किया जाता है। समाचार-पत्र और पत्र-पत्रिकाओं में लिखने की शैली अलग होती है जबकि रेडियो और टेलीविज़न के लिए अलग शैली होती है। माध्यम अलग-अलग होने के कारण उनकी आवश्यकताएँ भी अलग-अलग होती हैं। विभिन्न जनसंचार माध्यमों के लेखन के अलग-अलग तरीकों को जानना एवं समझना अत्यंत आवश्यक है। इन माध्यमों के लिए लेखन के समय बोलने, लिखने के साथ-साथ पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है। हम रोज़ाना समाचार-पत्र पढ़कर, टी० वी० देखकर और रेडियो सुनकर तथा साथ ही कभी-कभी इंटरनेट पर समाचार पढ़कर अथवा देखकर ही इस बात पर विचार कर सकते हैं कि जनसंचार के इन सभी प्रमुख माध्यमों में समाचार लेखन और प्रस्तुति में या अंतर है। अवश्य ही, इन सभी माध्यमों में समाचारों की लेखन-शैली, भाषा और प्रस्तुति में कई अंतर हैं। इंटरनेट पर

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

पढ़ने, सुनने और देखने तीनों की सुविधा होती है। समाचार-पत्र केवल छपे हुए शब्दों का माध्यम है, रेडियो बोले हुए शब्दों का माध्यम है जबकि टी० वी० पर आप देख भी सकते हैं।

4. (*i*) (*i*) मंत्रालय के सूत्र

(*ii*) प्रेस कॉफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ

(*iii*) साक्षात्कार

(*iv*) सर्वे

(*v*) जाँच समितियों की रिपोर्ट

(*vi*) क्षेत्र विशेष में सक्रिय संस्थाएँ और व्यक्ति

(*vii*) संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यक्ति

(*viii*) इंटरनेट और दूसरे संचार के माध्यम

(*ix*) स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

(*ii*) विभिन्न जनसंचार माध्यमों के वर्तमान प्रचलित रूप निम्नलिखित हैं—

1. प्रिंट माध्यम-समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ।
2. इलेट्रॉनिक माध्यम-रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा, इंटरनेट।

इनके लिए लेखन अलग-अलग तरीकों द्वारा किया जाता है। समाचार-पत्र और पत्र-पत्रिकाओं में लिखने की शैली अलग होती है जबकि रेडियो और टेलीविज़न के लिए अलग शैली होती है। माध्यम अलग-अलग होने के कारण उनकी आवश्यकताएँ भी अलग-अलग होती हैं। विभिन्न जनसंचार माध्यमों के लेखन के अलग-अलग तरीकों को जानना एवं समझना अत्यंत आवश्यक है। इन माध्यमों के लिए लेखन के समय बोलने, लिखने के साथ-साथ पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है। हम रोज़ाना समाचार-पत्र पढ़कर, टी० वी० देखकर और रेडियो सुनकर तथा साथ ही कभी-कभी इंटरनेट पर समाचार पढ़कर अथवा देखकर ही इस बात पर विचार कर सकते हैं कि जनसंचार के इन सभी प्रमुख माध्यमों में समाचार लेखन और प्रस्तुति में या अंतर है। अवश्य ही, इन सभी माध्यमों में समाचारों की लेखन-शैली, भाषा और प्रस्तुति में कई अंतर हैं। इंटरनेट पर पढ़ने, सुनने और देखने तीनों की सुविधा होती है। समाचार-पत्र केवल छपे हुए शब्दों का माध्यम है, रेडियो बोले हुए शब्दों का माध्यम है जबकि टी० वी० पर आप देख भी सकते हैं।

(*iii*) इंटरनेट आज की पत्रकारिता का मुख्य आधार बन चुका है, पर वह समाज के सभी वर्गों को अनेक आधारों पर विकृत भी कर रहा है। इसमें दुनिया भर के सभी अच्छे-बुरे कार्य साफ़-स्पष्ट और विस्तारपूर्वक देखे-सुने जा सकते हैं। इसके कारण कच्ची बुद्धि का युवा वर्ग तेज़ी से अश्लीलता और फूहड़ता की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उसके संस्कार विकृत होने लगे हैं। इससे अपराध जगत को नई दिशा प्राप्त हो रही है। अपराधी और आतंकवादी सरलता से सलाह-मशवरा कर दुनिया के किसी भी कोने में आतंक फैलाने का कार्य कर रहे हैं। काले धन का लेन-देन सरल हो गया है तथा पुस्तकीय ज्ञान की चोरी होने लगी है।

(*iv*) समाचार-पत्रों में समाचारों के अतिरिक्त प्रकाशित होने वाले पत्रकारीय लेखन के फ़ीचर सबसे महत्वपूर्ण हैं। समाचार और फ़ीचर में पर्याप्त अंतर होता है। फ़ीचर का मुख्य लक्ष्य पाठकों को सूचना देने, उन्हें शिक्षित करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना होता है। फ़ीचर पाठकों को उसी समय घटित घटनाओं से परिचित नहीं कराता, जबकि समाचार पाठकों को तात्कालिक घटनाओं से परिचित कराता है। फ़ीचर लेखन की शैली समाचार-लेखन की शैली से भी भिन्न होती है। समाचार लिखते समय रिपोर्टर वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर बल देता है। उसमें अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर नहीं होता। लेकिन फ़ीचर में लेखक अपने विचार, भावनाएँ तथा दृष्टिकोण को व्यत कर सकता है। फ़ीचर लेखन में उलटा पिरामिड शैली के स्थान पर कथात्मक शैली का प्रयोग होता है। फ़ीचर लेखन की भाषा समाचारों की अपेक्षा सरल, आकर्षक, रूपात्मक तथा मन को मोह लेने वाली होती है। फ़ीचर में समाचारों की अपेक्षा कम शब्दों का प्रयोग होता है। फ़ीचर समाचार रिपोर्ट से प्रायः दीर्घ होते हैं। समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के फ़ीचर प्रकाशित होते हैं। एक आकर्षक, रोचक एवं अच्छे फ़ीचर के साथ पोस्टर, रेखांकन, ग्राफ़िस का होना आवश्यक है। फ़ीचर का विषय हलका एवं गंभीर कुछ भी हो सकता है। फ़ीचर एक पाठशाला के परिचय से लेकर किसी शैक्षणिक यात्रा पर भी केंद्रित हो सकता है। फ़ीचर एक ऐसा नुस्खा है जो ज़्यादातर विषय एवं मुद्दे को ध्यान में रखकर उसे प्रस्तुत करते हुए दिया जाता है। फ़ीचर की इन्हीं विशेषताओं के कारण कुछ समाचारों को भी फ़ीचर शैली में प्रस्तुत किया जाता है।

(*v*) रेडियो समाचार की भाषा ऐसी हो—

जिसमें आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो जो समाचार वाचक आसानी से पढ़ सके जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का इस्तेमाल हो जिसमें सामासिक और तत्सम शब्दों की बहुलता हो।

5. (*i*) किसी भी समाचार को लिखने के लिए छह प्रश्नों का उत्तर आवश्यक माना जाता है। या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और यों हुआ? इन्हीं छः प्रश्नों का दूसरा नाम ककार है। इन्हीं छह ककारों को ध्यान में रखकर ही किसी घटना, समस्या और विचार आदि से संबंधित खबर लिखी जाती है। समाचार के आरंभ में जब पैराग्राफ़ लिखना शुरू किया जाता है तब शुरू की दो-तीन पंक्तियों में 'या', 'कौन', 'कब' और 'कहाँ'? इन तीन या चार ककारों को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। उसके पश्चात समाचार के मध्य में और समापन से पूर्व 'कैसे' और 'यों' जैसे ककारों का उत्तर दिया जाता है। इस तरह इन छह ककारों को ध्यान में रखकर समाचार लिखा जाता है। पहले चार ककारों का प्रयोग सूचना और तथ्यों के लिए किया जाता है। परंतु 'कैसे' और 'यों' ककारों द्वारा विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलुओं पर बल दिया जाता है। इस प्रकार समाचार लेखन की पूरी प्रक्रिया में इन छह ककारों का विशेष महत्व है।

(*ii*) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में महत्वपूर्ण अंतर है। अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और रुचियों का होना अति आवश्यक है। एक बीट रिपोर्टर को अपने बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। विशेषीकृत रिपोर्टिंग सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र विशेष या विषय से जुड़ी घटनाओं से संबंधित हैं। इसमें वहाँ के मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करना होता है और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए यदि शेयर मार्किट में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाले संवाददाता को तथ्य पर आधारित एक रिपोर्ट तैयार करनी पड़ेगी जिसमें सभी आवश्यक सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे। परंतु विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

इसका विश्लेषण करके बाज़ारों में आई गिरावट के यों और या कारणों को स्पष्ट करने की कोशिश करेगा और साथ ही यह भी देखेगा कि इसका आम लोगों पर या प्रभाव पड़ेगा? इसी कारण बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा प्राप्त है।

(*iii*) कहानी में पात्रों अथवा चरित्रों का बहुत महत्व है, जो इस प्रकार हैं—

(i) पात्र कहानी के मूलाधार होते हैं।
(ii) पात्र कहानी को गतिशीलता प्रदान करते हैं।
(iii) पात्र कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं।
(iv) पात्र पाठकों को संदेश देते हैं।
(v) पात्र कहानी को समापन की ओर ले जाते हैं।

खंड—ग
(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (क) उद्गार-उपहार
(2) (ख) संसार स्वार्थ में डूबा हुआ है।
(3) (ग) सुख-दु:ख दोनों में मग्न रहता है
(4) (क) वह संसार रूपी लहरों में बहना चाहता है।
(5) (ग) रूपक अलंकार।

उत्तर—7. (*i*) श्री हरिवंश राय बच्चन' द्वारा रचित कविता 'आत्म-परिचय' 'बुद्ध और नाचघर' संग्रह से संकलित है जिसमें कवि ने यह चित्रण किया है कि मनुष्य द्वारा अपने को जानना या आत्मबोध दुनिया को जानने से अत्यंत कठिन है। समाज से मनुष्य का नाता खट्टा-मीठा होता है। इस संसार से निरपेक्ष रहना असंभव है। मनुष्य चाहकर भी जग से विमुख नहीं हो सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत: मनुष्य का इस जग से अटूट संबंध है। संसार अपने व्यंग्य-बाणों तथा शासन-प्रशासन से उसे चाहे कितने ही कष्ट एवं पीड़ाएँ यों न दे, पर मनुष्य इस जगह से अलग नहीं रह सकता। ये दुनिया ही उसकी पहचान है। जहाँ पर वह अपना परिचय देते हुए इस संसार से द्विधात्मक एवं द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता हुआ जीवन जीता है। इस दुनिया में मनुष्य का जीवन द्वंद्व एवं विरुद्धों का सामंजस्य है। सुख-दुख का समन्वय है।

(*ii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कवि ने अपंग व्यति के प्रति करुणा-भाव प्रकट किए हैं लेकिन टेलीविज़न और कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तथा अपने कारोबार के कारण उस अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैये को अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनहीनता का रवैया अपनाता है जिस कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूर भाव पनप जाते हैं।

(*iii*) फ़िराक की रुबाई में नन्हा-सा बच्चा माँ की नज़रों में चाँद का टुकड़ा है जिसे वह अपनी गोद में खिलाती है; झुलाती है और कुछ-कुछ देर बाद हवा में उछाल देती है, जिससे बच्चा प्रसन्नता से भर किलकारियाँ मारता है। खिलखिलाते बच्चे की हँसी वातावरण में गूँज उठती है। बच्चे को झुलाना-नहलाना, तैयार करना, कंघी करना और बच्चे के द्वारा माँ के चेहरे की ओर एकटक देखना अति सुंदर और वात्सल्य रस से ओत-प्रोत है।

उत्तर—8. (*i*) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से कविता की विशेषता का पता चलता है कि समय परिवर्तनशील है, जो सतत चलायमान है। यह कभी भी नहीं रुकता, न ही यह किसी की प्रतीक्षा करता है। जीवन क्षणभंगुर है, अत: कब जीवन समाह्श्वत हो जाए किसी, को नहीं पता। इसलिए मनुष्य को अपने लक्ष्य को अतिशीघ्रता से प्राह्श्वत कर लेना चाहिए। मनुष्य में वह विश्वास होना चाहिए कि वह कम-से-कम समय में अपनी मंज़िल को प्राप्त कर लेगा।

(*ii*) जब हम किसी को कोई बात कहना चाहते हैं तो उसके लिए हमें उन्हीं उचित शब्दों का चयन करना पड़ता है जिनसे हमारी बात उस व्यति तक स्पष्ट रूप से पहुँच जाए और वह हमारी बात कहने का मतलब भी समझ जाए नहीं, तो कई बार सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। जैसे हमने किसी को मारना नहीं है और हम कहते हैं 'मारो, मत छोड़ो' तो सुनने वाला उसे मार देगा। हमें कहना चाहिए था 'मारो मत, छोड़ो'। इस प्रकार से सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।

(*iii*) प्रस्तुत पंति में 'विप्लव-रव' से तात्पर्य क्रांति के विद्रोहपूर्ण शब्दों या गर्जना से है। वह ऐसे लोगों की गर्जना या स्वर है जो सदियों से पूँजीपति वर्ग के शोषण का शिकार होकर दयनीय जीवन जी रहे हैं। 'छोटे ही हैं शोभा पाते' ऐसा इसलिए कहा गया है योंकि क्रांति का विनाशकारी प्रभाव सदा उच्च या शोषक वर्ग के लोगों पर ही होता है। इस विद्रोह का निज़्न या छोटे वर्ग के जनसामान्य पर कोई विनाशकारी प्रभाव नहीं होता। उच्च वर्ग तो क्रांति के श8दों से भयभीत होता है लेकिन छोटे वर्ग अर्थात जनसामान्य वर्ग के लोग प्रसन्न हो उठते हैं तथा जीवन में शोषण की मार से निकलकर समृद्धि प्राप्त करते हैं।

उत्तर—9. (1) (ख) समता
(2) (ख) मानवता के दृष्टिकोण से
(3) (ख) आदर्श
(4) (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(5) (क) केवल (I)

उत्तर—10. (*i*) कहानी के प्रारंभ, मध्य और अंत के मोड़ पर लुट्टन के जीवन में अग्रलिखित परिवर्तन आए—

***(i)* प्रारंभ—**कहानी के प्रारंभ में लुट्टन सिंह अपने गाँव में रात्रि की विभीषिका में ढोल बजाकर संजीवनी शक्ति प्रदान किया करता था। नौ वर्ष की अवस्था में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। उसकी शादी बचपन में हो गई थी, इसलिए उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने ही किया। बचपन में वह गाय चराया करता था। गायों का दूध पीकर वह कसरत करने लगा। इसलिए उसका शरीर सुडौल और हट्टा-कट्टा बन गया। अब वह गाँव में अच्छा पहलवान समझा जाने लगा था।

***(ii)* मध्य—**कहानी के मध्य में लुट्टन सिंह को अपने जीवन में भरपूर तरकी मिली। उसने श्यामनगर में लगने वाले मेले में चाँद सिंह नामक पहलवान को हराया, जिससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। श्यामनगर के राजा श्यामानंद ने उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे अपना राज पहलवान बना दिया। अब उसका सारा खर्च राजमहल की तरफ़ से होने लगा। बाद में उसने नियमित कसरत और व्यायाम के बलबूते 'काला खाँ' जैसे—अनेक प्रसिद्ध पहलवानों को हराया। वह एक अजेय पहलवान बन गया। उसने अपने दोनों बेटों को भी पहलवान बना दिया था।

***(iii)* अंत—**कहानी के अंत में लुट्टन सिंह के जीवन पर वज्रपात हुआ और वह उन्नति व प्रसिद्धि के शिखर से नीचे गिर गया। श्यामनगर के

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

राजा श्यामानंद का स्वर्गवास हो गया था। उनके स्थान पर विलायत से नया राजा आ गया, जिसने सारी व्यवस्था को बदल दिया। दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया था। राजा के दुर्व्यवहार का शिकार होकर लुट्टन सिंह श्यामनगर को छोड़ अपनी ढोलक कंधे पर लटकाकर गाँव वापस आ गया। गाँव में अचानक महामारी फैल गई। सूखा पड़ा, अनाज कम पड़ गया। गाँव में चारों ओर लोग हैज़े और मलेरिया से मरने लगे। उसके दोनों बेटे भी इसी विभीषिका में मारे गए और अंतत: रात्रि में एक दिन लुट्टन सिंह की भी मृत्यु हो गई।

(*ii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देष्ठा में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

(*iii*) डॉ० आंबेडकर ने एक स्वस्थ आदर्श समाज की संकल्पना की है। इस समाज में स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व का साम्राज्य होगा। इसमें इतनी गतिशीलता होगी कि कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सकेगा। समाज के बहुविधि हितों में सबका समान भाग होगा तथा सब उन हितों की रक्षा हेतु सजग रहेंगे। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध होंगे। दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा होगा। हर कोई अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और समान की भावना रखेगा।

उत्तर—11. (*i*) लड़के समूह में एकत्रित होकर नंगे शरीर उछलते-कूदते तथा अत्यधिक शोर-शराबा करते हुए गलियों में कीचड़ करते हुए घूमते थे। ये गलियों में इधर-उधर दौड़ा करते थे, इसी आधार पर लोगों ने लड़कों को मेढक-मंडली नाम दे दिया था। यह टोली अपने आपको इंदर सेना इसलिए कहकर पुकारती थी योंकि यह अनावृष्टि से छुटकारा पाने हेतु लोक-आस्था के कारण इंद्र महाराज को खुश करने के लिए ऐसा कार्य करती थी। इनका मानना था कि उनके इसी कार्य से प्रसन्न होकर इंद्र देवता वर्षा करेंगे जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहान खिल उठेंगे।

(*ii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवष्ठयकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देश में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

(*ii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवष्ठयकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देष्ठा में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

उत्तर—12. (*i*) कर्मठ एवं परिश्रमी—यशोधर बाबू एक कर्मठ एवं मेहनती व्यक्ति हैं। वे दफ़्तर में पूरा समय काम करते हैं। घर का बहुत-सा काम वे स्वयं करते हैं। सब्ज़ी लाना, दूध लाना, राशन लाना तथा दूसरे अन्य काम भी उन्हें ही करने पड़ते हैं परंतु वे इन सभी कामों को करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

(*ii*) संवेदनशील—यशोधर बाबू एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। वे रिश्तों के प्रति संवेदनशील एवं भावुक हैं। जब किशनदा को कोई अपने यहाँ नहीं ठहराता तो उन्हें बहुत बुरा लगता है। चूँकि घर में बच्चे और पत्नी का उनके साथ मतभेद है इसलिए वे घर देर से लौटते हैं। उन्हें इस बात का दुख है कि बच्चे उनकी कदर नहीं करते हैं।

(*iii*) परंपरावादी—यशोधर बाबू परंपराओं और मर्यादाओं में विश्वास करते हैं। उन्होंने अपना घर नहीं बनाया क्योंकि वे चाहते हैं कि सेवानिवृत्त होने के पश्चात वे भी अपने पैतृक गाँव लौट जाएँगे इसलिए दिल्ली जैसे महँगे शहर में घर बनाने का कोई फ़ायदा नहीं है, जबकि परिवार के सभी सदस्य उनकी इस बात को एक बड़ी भूल मानते हैं।

(*iv*) संस्कारी—यशोधर बाबू संस्कारी व्यक्तित्व के हैं। वे रिश्ते-नाते बनाए रखने में विश्वास रखते हैं। वे अपनी बहन को मिलने अहमदाबाद इसलिए जाना चाहते हैं कि उनके जीजा जनार्दन जी आजकल बीमार हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे भी रिश्तों के प्रति संवेदनशील बनें।

(*ii*) लेखक 'ओम थानवी' अपनी यात्रा के समय मोहन-जोदड़ो नगर की सड़कों, गलियों और घरों में घूमते हैं। वे वहाँ की एक-एक चीज़ को देखकर तत्कालीन समय की अनुभूतियों से जुड़ना चाहते हैं। बौद्ध स्तूप, गढ़, महाकुंड और स्नानागार को देखने के पश्चात जब वे घरों में प्रवेश करते हैं तो टूटे-फूटे घरों को देखकर भावुक हो जाते हैं। मोहनजोदड़ो में सड़कें, बाज़ार, रईसों और कामगारों की बस्तियाँ हैं। सड़क के दोनों तरफ़ घर हैं। ये घर एक व्यवस्थित नगर-योजना के अनुसार बनाए गए हैं। इन एक मंज़िला घरों में प्रवेश करते हुए, लेखक कहते हैं, ''यहाँ की सभ्यता और संस्कृति का सामान भले ही अजायबघरों की शोभा बढ़ा रहा हो, शहर जहाँ था अब भी वहीं है। आप इसकी किसी भी दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। वह एक खंडहर यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं। रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं। या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर उस बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं जिसे आपने पुरातत्व की तसवीरों में मिट्टी के रंग में देखा है। सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आपको कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर; वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रहे हैं।'' इस कथन के पीछे लेखक का आशय है कि इन टूटे-फूटे घरों की सीढ़ियों पर खड़े होकर आप दुनिया (विश्व) को देख सकते हैं अर्थात विश्व सभ्यता के दर्शन कर सकते हैं। क्योंकि सिंधु सभ्यता विश्व की महान सभ्यताओं में से एक है। सिंधु सभ्यता आडंबर रहित एवं अनुशासन प्रिय है इसलिए सिंधु सभ्यता के माध्यम से विश्व सभ्यता को देखा जा सकता है। खंडहरों से मिले अवशेषों और इन टूटे-फूटे घरों से केवल सिंधु सभ्यता का इतिहास ही देखा जा सकता है बल्कि उससे कहीं आगे मानवता को भी देखा जा सकता है। ऐसे कौन-से कारण रहे होंगे कि ये महानगर आज केवल खंडहर बनकर रह गए हैं अथवा ये बड़े महानगर यों उजड़ गए। इस प्रकार इन सीढ़ियों पर चढ़कर किसी इतिहास की ही खोज नहीं करना चाहते थे बल्कि सिंधु सभ्यता के सभ्य मानवीय समाज को देखना चाहते हैं।

HOLYFAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*iii*) सिंधु घाटी की खुदाई में मिले स्तूप, गढ़, स्नानागार, टूटे-फूटे घर, चौड़ी और कम चौड़ी सड़कें, गलियाँ, बैलगाड़ियाँ, सिलाई-कढ़ाई की सुइयाँ, छोटी-छोटी नावें किसी भी सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास कही जा सकती हैं। इन टूटे-फूटे घरों के खंडहर उस सभ्यता की ऐतिहासिक कहानी बयान करते हैं। मिट्टी के बरतन, मूर्तियाँ, औज़ार आदि चीज़ें उस सभ्यता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को नापने के बढ़िया औज़ार हो सकते हैं परंतु मोहन-जोदड़ो के ये टूटे-फूटे घर अभी इतिहास नहीं बने हैं। इन घरों में अभी धड़कती ज़िंदगियों का अहसास होता है। संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा सामान भले ही अजायबघर में रख दिया हो परंतु शहर अभी वहीं है जहाँ कभी था। अभी भी आप इस शहर की किसी दीवार के साथ पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। वे घर अब चाहे खंडहर बन गए हों परंतु जब आप इन घरों की देहरी पर कदम रखते हैं तो आप थोड़े सहम जाते हैं क्योंकि यह भी किसी का घर रहा होगा। जब किसी के घर में अनाधिकार से प्रवेश करते हैं तो डर लगना स्वाभाविक है। आप किसी रसोई की खिड़की के साथ खड़े होकर उसमें पकते पकवान की गंध ले सकते हैं। अभी सड़कों के बीच से गुज़रती बैलगाड़ियों की रुन-झुन की आवाज़ सुन सकते हैं। ये सभी घर टूटकर खंडहर बन गए हैं परंतु इनके बीच से गुज़रती साँय-साँय करती हवा आपको कुछ कह जाती है। अब ये सब घर एक बड़ा घर बन गए हैं। सब एक-दूसरे में खुलते हैं। लेखक का मानना है कि ''लेकिन घर एक नशा ही नहीं होता। हर घर का एक चेहरा और संस्कार होता है। भले ही वह पाँच हज़ार साल पुराना घर क्यों न हो!'' इस प्रकार लेखक इन टूटे-फूटे खंडहरों से गुज़रते हुए इन घरों में किसी मानवीय संवेदनाओं का संस्पर्श करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास होने के साथ-साथ जीवंत दस्तावेज़ भी होते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–5

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं

विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (क) आज की युवा पीढ़ी
(2) (ग) युवाओं और बुजुर्गों की सहभागिता होना
(3) (घ) केवल कथन (I) और (II) सही हैं।
(4) युवाओं की संख्या अधिक होने के कारण
(5) देश का भविष्य निर्माता है।
(6) देश के विकास में योगदान
(7) बुजुर्गों से तालमेल की कमी

उत्तर—2. (1) (घ) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।
(2) (घ) अकेलेपन की चिंता।
(3) (ख) माँ की आँखों से कभी भी आँसू गिर सकते हैं।
(4) शहर के परिवेश में माँ को भूल जाना।
(5) मां की ममता
(6) मां–बाप

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) हमारे देश में मध्यवर्गीय परिवारों के लिए अति आवश्यक हो चुका है कि घर–परिवार को ठीक प्रकार से चलाने के लिए पति–पत्नी दोनों धन कमाने के लिए काम करें और इसीलिए समाज में कामकाज़ी औरतों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। कामकाजी औरत की जिंदगी पुरुषों की अपेक्षा कठिन है। वह घर–बाहर एक साथ संभालती है। उसकी शाम तभी आरंभ हो जाती है जब वह अपने कार्यस्थल से छुट्टी के बाद बाहर निकलती है। वह घर पहुँचने से पलहे ही रास्ते में बाज़ार से फल सब्ज़ियाँ खरीदती है, छोटा–मोटा किरयाने का सामान लेती है और लदी–फदी घर पहुँचती है। तब तक पति और बच्चे भी घर पहुँच चुके होते हैं। दिन भर की थकी हारी औरत कुछ आराम करना चाहती है पर उससे पहले चाय तैयार करती है। उसकी शाम अधिकतर दूसरों की फरमाइशों को पूरा करने में बीत जाती है। वह हर पल चाहती है कि उसे भी घर में रहने वाली औरतों के समान कभी शाम अपने लिए मिले पर प्राय: ऐसा हो नहीं पाता, क्योंकि कामकाज औरत का जीवन तो घड़ी की सुइयों से बंधा होता है।

(*ii*) संसार में प्रत्येक मनुष्य के जीवन का कोई–न–कोई लक्ष्य अवश्य होता है। एक मनुष्य एवं सामाजिक प्राणी होने के नाते मैंने भी अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया है। मैं बड़ा होकर एक आदर्श अध्यापक बनना चाहता हूँ और अध्यापक के रूप में अपने कर्तव्यों को निभाता हुआ अपने राष्ट्र की सेवा करना चाहता हूँ। मैं आदर्श शिक्षक बनकर अपने राष्ट्र की भावी पीढ़ी के बौद्धिक स्तर को उच्च स्तर पर पहुँचाना चाहता हूँ ताकि मेरे देश की युवा पीढ़ी कुशल, विवेकशील, कर्मनिष्ठ बन सके और मेरा देश फिर से शिक्षा का सिरमौर बन सके। फिर से हम विश्व–गुरु की उपाधि को ग्रहण कर सकें। विद्यार्थी होने के कारण मैं भली–भाँति जानता हूँ कि किसी अध्यापक का विद्यार्थियों पर कैसा प्रभाव पड़ता है। कोई अच्छा अध्यापक उनको अच्छी दिशा दे सकता है। मैं भी ऐसा करके देश के युवा वर्ग को नई दिशा देना चाहता हूँ।

(*iii*) विद्यार्थी और अनुशासन एक–दूसरे के पूरक हैं। यूँ कहें कि अनुशासन ही विद्यार्थी जीवन की नींव है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासित विद्यार्थी ही सफलता की ऊँचाई को छूने में सफल होता है जो विद्यार्थी अपने जीवन में अनुशासन को नहीं अपनाता वह कभी भी सफल नहीं होता बल्कि अपने जीवन को ही बरबाद कर लेता है। बिना अनुशासन के विद्यार्थी जीवन कटी पतंग के समान होता है जिसका कोई लक्ष्य नहीं होता। जो विद्यार्थी अपने विद्यालय के प्रांगण में रहकर प्रति क्षण अनुशासन का पालन करता है; अपने शिक्षकों का आदर करता है और इतना ही नहीं जीवन में हर पल नियमों–अनुशासन में बँधकर चलता है; वह कदापि निष्फल नहीं हो सकता। सफलता उसके कदम अवश्य चूमती है। इसलिए विद्यार्थी को कभी भी अनुशासन भंग नहीं करना चाहिए बल्कि सदैव अनुशासन का पालन करना चाहिए। एक अनुशासित विद्यार्थी ही राष्ट्र का आदर्श नागरिक बनता है और देश के चहुँमुखी विकास में अपना योगदान देता है।

4. (*i*) रेडियो और टेलीविज़न का संबंध देश के प्रत्येक स्तर के व्यक्ति से है। इनके श्रोता और दर्शक पढ़े–लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान–मज़दूर तक सभी हैं। रेडियो और टी० वी० को इन सभी की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है इसलिए इनकी भाषा–शैली ऐसी होनी चाहिए जो सभी वर्गों और सभी स्तरों को सरलता से समझ आ सके। साथ ही साथ भाषा के स्तर और गरिमा के साथ भी कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में भाषा और शैली संबंधी निम्नलिखित विशेषताएँ अनिवार्य रूप से होनी चाहिए—

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*i*) भाषा अति सरल होनी चाहिए।

(*ii*) वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट लिखे जाने चाहिए।

(*iii*) भाषा में प्रवाहमयता होनी चाहिए।

(*iv*) भ्रामक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(*v*) तथा, एवं, अथवा, व, किंतु, परंतु, यथा आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। इनकी जगह और, या, लेकिन आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

(*ii*) समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न तरीके अपनाते हैं, जिसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारों के द्वारा यह कार्य प्राय: तीन तरीके से किया जाता है—पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन से जुड़कर नियंत्रित वेतन प्राप्त करता है। अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर) किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करता है। फ्रीलांसर पत्रकार किसी विशेष समाचार संगठन से नहीं होता बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अख़बारों के लिए लिखता है। पत्रकारीय लेखन का संबंध विभिन्न घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से होता है। यह कार्य कविता, कहानी, उपन्यास आदि के द्वारा पूरी तरह से संभव नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें तात्कालिकता और पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। पत्रकारीय लेखन में इस बात को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि वह विशाल समुदाय के लिए लिख रहा है। उसे सदा सीधी-सादी और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उसे कभी भी लंबे-लंबे वाक्य नहीं लिखने चाहिए। उसे किसी भी अवस्था में अनावश्यक विशेषणों और उपमाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(*iii*) प्राय: संवाददाता या रिपोर्टर अख़बारों के लिए समाचार लिखते हैं। उनके द्वारा समाचार एक विशेष शैली में लिखे जाते हैं। अख़बारों में अधिकतर सबसे महत्वपूर्ण तथ्य और जानकारियाँ सबसे पहले पैराग्राफ में लिखी जाती हैं। इसके बाद कम महत्वपूर्ण बातें तब तक दी जाती हैं जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता। इसे उलटा पिरामिड शैली कहते हैं। उलटा पिरामिड में समाचार के ढाँचे का यह तरीका सबसे अधिक लोकप्रिय और उपयोगी माना जाता है। यह शैली कहानी-लेखन से उलटी है। इस शैली का आरंभ 19वीं शताब्दी में हुआ था पर इसका विकास अमेरिका के गृहयुद्ध में हुआ था।

(*iv*) रेडियो और टेलीविज़न का संबंध देश के प्रत्येक स्तर के व्यक्ति से है। इनके श्रोता और दर्शक पढ़े-लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान-मज़दूर तक सभी हैं। रेडियो और टी० वी० को इन सभी की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है इसलिए इनकी

भाषा-शैली ऐसी होनी चाहिए जो सभी वर्गों और सभी स्तरों को सरलता से समझ आ सके। साथ ही साथ भाषा के स्तर और गरिमा के साथ भी कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में भाषा और शैली संबंधी निम्नलिखित विशेषताएँ अनिवार्य रूप से होनी चाहिए—

(*i*) भाषा अति सरल होनी चाहिए।

(*ii*) वाय छोटे, सीधे और स्पष्ट लिखे जाने चाहिए।

(*iii*) भाषा में प्रवाहमयता होनी चाहिए।

(*iv*) भ्रामक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(*v*) तथा, एवं, अथवा, व, किंतु, परंतु, यथा आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। इनकी जगह और, या, लेकिन आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

(*v*) नाट्य-रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है—

(i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।

(ii) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।

(iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।

(iv) संगीत ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।

(v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

5. (*i*) समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न तरीके अपनाते हैं, जिसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारों के द्वारा यह कार्य प्राय: तीन तरीके से किया जाता है—पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन से जुड़कर नियंत्रित वेतन प्राप्त करता है। अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर) किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करता है। फ्रीलांसर पत्रकार किसी विशेष समाचार संगठन से नहीं होता बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अख़बारों के लिए लिखता है। पत्रकारीय लेखन का संबंध विभिन्न घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से होता है। यह कार्य कविता, कहानी, उपन्यास आदि के द्वारा पूरी तरह से संभव नहीं हो सकता, योंकि इसमें तात्कालिकता और पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। पत्रकारीय लेखन में इस बात को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि वह विशाल समुदाय के लिए लिख रहा है। उसे सदा सीधी-सादी और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उसे कभी भी लंबे-लंबे वाक्य नहीं लिखने चाहिए। उसे किसी भी अवस्था में अनावश्यक विशेषणों और उपमाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(*ii*) विद्यार्थी स्वयं करें।

(*iii*) रटंत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है। वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है। उसे अपनी बुद्धि तथा चिंतन शक्ति पर विश्वास नहीं रहता।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (क) चिड़िया के

(2) (घ) उपर्युक्त सभी

(3) (ख) कविता के बहाने

(4) (ग) कविता की उड़ान असीमित होती है और चिड़िया की उड़ान असीमित होती है।

(5) (ख) कवि की कल्पना

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

उत्तर—7. (*i*) श्री हरिवंश राय बच्चन' द्वारा रचित कविता 'आत्म-परिचय' 'बुद्ध और नाचघर' संग्रह से संकलित है जिसमें कवि ने यह चित्रण किया है कि मनुष्य द्वारा अपने को जानना या आत्मबोध दुनिया को जानने से अत्यंत कठिन है। समाज से मनुष्य का नाता खट्टा-मीठा होता है। इस संसार से निरपेक्ष रहना असंभव है। मनुष्य चाहकर भी जग से विमुख नहीं हो सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत: मनुष्य का इस जग से अटूट संबंध है। संसार अपने व्यंग्य-बाणों तथा शासन-प्रशासन से उसे चाहे कितने ही कष्ट एवं पीड़ाएँ यों न दे, पर मनुष्य इस जगह से अलग नहीं रह सकता। ये दुनिया ही उसकी पहचान है। जहाँ पर वह अपना परिचय देते हुए इस संसार से द्विधात्मक एवं द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता हुआ जीवन जीता है। इस दुनिया में मनुष्य का जीवन द्वंद्व एवं विरुद्धों का सामंजस्य है। सुख-दुख का समन्वय है।

(*ii*) 'बात सीधी थी पर' कविता के माध्यम से कवि कुँवर नारायण ने उन रचनाकारों पर व्यंग्य किया है जो अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए भाषा के साथ खिलवाड़ करते हैं। वे अपनी रचना में शब्दों का जाल रचकर पाठकों को भ्रमित करते हैं तथा आडंबरपूर्ण शब्द-योजना से उनकी वाह-वाही लूटते हैं, चाहे उनकी रचना का कथ्य पाठकों अथवा श्रोताओं की समझ में आया हो या नहीं। कवि चाहता है कि रचनाकार को अपनी बात अत्यंत सहज तथा स्पष्ट शब्दों में कहनी चाहिए। कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बना रहना चाहिए, जिससे पाठक अथवा श्रोता तक उसकी बात सहज रूप से पहुँच सके।

(*iii*) गरीब

उत्तर—8. (*i*) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत हरिवंश राय बच्चन के 'निशा-निमंत्रण' गीत संग्रह में संकलित है। इस गीत में कवि ने प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी के धड़कते हृदय की भावनाओं को सुनने का प्रयास किया है। समय चिर परिवर्तनशील है। किसी प्रिय के आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के चरणों की गति में और अधिक गतिशीलता एवं साहस पैदा कर देता है।

(*ii*) कवि को इस बात का डर था कि उसकी बात श्रोता पर अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल पाएगी। किसी बात को जब तोड़-मरोड़ कर कहा जाता है अथवा किसी पर ज़बरदस्ती थोपी जाती है, तो वह शक्तिहीन हो जाती है। अंतत: वही हुआ जिसके विजय में कवि को आशंका थी। उसकी बात पाठक को प्रभावित नहीं कर सकी।

(*iii*) रात के समय आकाश में जगमगाता चंद्रमा बच्चे को आकृष्ट करता है। वह उसे एक खिलौना समझकर लेने के लिए मचलता है; ज़िद करता है। माँ उसके हाथों में दर्पण थमा देती है जिसमें चाँद का प्रतिबिंब दिखाई देता है। माँ कहती है कि ले बेटा, चाँद इस दर्पण में आ गया है और अब यह तेरा ही है।

उत्तर—9. (1) (ग)
(2) (क)
(3) (ग)
(4) (घ)
(5) (ख)

उत्तर—10. (*i*) वर्तमान समाज में चारों ओर मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खराबा का बोलबाला है। मानव सभ्यता घोर संकट से परिव्याप्त है। सत्य, अहिंसा आदि आदर्श कहीं भी दिखाई नहीं देते। जन-जन आतंक की छाया में जी रहा है। वर्तमान सभ्यता में मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में अविलंब हिंसा, मारकाट, लूट-पाट पर उतावला हो उठता है। वह सत्य-अहिंसा की अपेक्षा असत्य, हिंसा, मार-काट का पालन करता है। निजी स्वार्थों की पूर्ति करने में उसे किसी का भी अहित दिखाई नहीं देता। लेखक ने ऐसे संकट के समय सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को याद किया है। वे दोनों बाहर से कठोर और दृढ़ थे लेकिन दोनों ही भीतर से कोमल थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में वे अविचल थे। उन दोनों को हानि-लाभ से कोई मतलब ही नहीं था।

(*ii*) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि कभी-कभी भक्तिन उसके घर में इधर-उधर पड़े पैसों को भंडारघर की मटकी में छिपा देती थी। जिस बात से लेखिका को क्रोध आ जाता था उसे वह बदलकर इधर-उधर करके बताया करती थी। वह ऐसी बात को अपनी ओर से और चुटीली बनाकर कहा करती तथा थोड़ा झूठ-सच का मिश्रण कर बात को बदल देती थी।

(*iii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देष्ठा में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

उत्तर—11. (*i*) लेखक ने कालिदास को अनासक्त योगी माना है। कबीर को शिरीष की तरह मस्त, बेपरवाह पर सरस और मादक माना है।

(*ii*) बाज़ार में भगत जी का स्वाभिमानी, निश्चेष्ट, आत्मसंयमी, मितव्ययी, दृढ़-निश्चयी आदि विशेषताओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। भगत जी एक स्वाभिमानी और निश्चेष्ट प्रवृत्ति के व्यति हैं जिन्हें बाज़ार का आकर्षण, सौंदर्य, चहल-पहल, बड़ी-बड़ी दुकानें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकतीं और न ही उसके स्वाभिमान को डिगा सकती हैं। वे आत्मसंयमी और मितव्ययी पुरुष हैं। धन की कमी न होने के कारण भी वे बाज़ार में फिज़ूलखर्ची पर विश्वास नहीं करते। केवल उतनी ही वस्तुएँ खरीदते हैं जितनी उनकी आवश्यकता है और वे भी केवल अच्छे मूल्य में खरीदते हैं। बाज़ारू आकर्षण में फँसकर धन को नहीं लुटाते। हाँ हमारी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है। जिस प्रकार शांत, निश्चेष्ट, संयमी भगत जी का आचरण है और जैसे वह बाज़ार के आकर्षण और सौंदर्य को देखकर उससे ज़रा-सा भी मोहित नहीं होता इसी प्रकार यदि आज के उपभोतावाद और बाज़ारवाद के समाज में यदि प्रत्येक मनुष्य स्वाभिमान, संयम, मितव्यय और दृढ़ निश्चय से अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ खरीदे। बाज़ार के आकर्षण और सौंदर्य में फँसकर अनुपयोगी वस्तुओं को न ले तो वास्तव में उसका मन अशांत नहीं होगा। वह अपने मन में बेकार की इच्छाओं को वश में करके यदि फ़िज़ूलखर्ची पर काबू पा लेगा तो उसका जीवन भी शांत, स्वाभिमानी, मितव्ययी बन जाएगा। यदि समाज का प्रत्येक मनुष्य ऐसा करे तो निश्चय ही समाज में शांति स्थापित होगी।

(*iii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण,

HOLY FAITH INTERNATIONAL (A) LTD.

जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देश में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

उत्तर—12. (*i*) लेखक जब पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थी थे तब उनकी कक्षा में सौंदलगेकर नामक अध्यापक मराठी पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं कविता में पूरी तरह से डूब जाते थे। उनका गला सुरीला था तथा छंद बनाने की बढ़िया चाल भी थी। मराठी के साथ उन्हें अंग्रेज़ी की अनेक कविताएँ कंठस्थ थीं। वे कविता को गाते समय लय, गति, यति और ताल का बखूबी प्रयोग करते थे। लेखक जब उनसे कविता सुना करते थे तो वे भी कविता के भावों में पूरी तरह से रम जाते थे। वे मास्टर जी के हाव-भाव, ध्वनि, ताल, रस और चाल को पूरी तल्लीनता के साथ सुना करते थे। वहीं से वे काव्य में पूरी रुचि लेने लगे। जब वे खेतों में काम करते थे उस समय मास्टर की भाँति पूरे हाव-भाव, यति-गति और आरोह-अवरोह के अनुसार कविता गाया करते थे। जिस प्रकार मास्टर जी अभिनय करते थे वे उसी प्रकार अभिनय किया करते थे। कविता गाते समय उन्हें यह भी पता नहीं चलता था कि क्यारियाँ पानी से कब भर गईं। मास्टर जी भी आनंद के कविता गाने में रुचि लेने लग गए थे। उन्होंने बड़ी कक्षा के बच्चों के सामने आनंद को कविता सुनाने के लिए कहा और आनंद ने इस अवसर का खूब फ़ायदा उठाया। अब वे अपने आस-पास, अपने गाँव और खेतों के दृश्यों की कविता बनाने लगे। भैंस चराते-चराते जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगे। जब रविवार के दिन कोई कविता बन जाती तो अगले दिन मास्टर जी को दिखाते और सुनाते थे इस पर मास्टर जी उन्हें शाबाशी देते। मास्टर जी ने उन्हें भाषा-शैली, छंद, अलंकारों के साथ-साथ शुद्ध लेखन की बारीकियाँ सिखा दीं। वे उन्हें अलग-अलग प्रकार की कविताओं के संग्रह देते थे। इस प्रकार लगातार अयास से वे मराठी में कविताएँ लिखने लगे। उन पर कविता लिखते समय शब्दों का नशा चढ़ने लगा। इस प्रकार लेखक के मन में स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास पैदा हुआ।

(*ii*) लेखक 'ओम थानवी' ने अपनी यात्रा के समय जब सिंधु घाटी की सयता से जुड़े दो महानगरों मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा के घरों, गलियों, सड़कों और खुदाई में वास्तुशिल्प से जुड़े सामान को देखा तो यह निष्कर्ष निकाला कि अगर सिंधु घाटी की सयता के साथ विश्व की अन्य सयताओं की तुलना की जाए तो सिंधु घाटी की सयता साधन संपन्न थी उसमें कृत्रिमता एवं आडंबर नहीं था। इस निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं—

जब मोहन-जोदड़ो स्थित एक छोटा-सा संग्रहालय देखने गए तो वहाँ उन्होंने एक अलग बात अनुभव की कि इस संग्रहालय में औज़ार तो हैं परंतु हथियार कोई नहीं है। अगर सिंधु से लेकर हरियाणा तक खुदाई में मिले अवशेषों पर गौर किया जाए तो हथियार कहीं भी नहीं हैं। जिस प्रकार प्रत्येक राजा के पास हथियारों की एक बड़ी खेप होती है परंतु यहाँ हथियार नाम की चीज़ नहीं है। पुरातात्विक विद्वानों के लिए यह बड़ा प्रश्न है कि सिंधु सभ्यता में शासन और सामाजिक प्रबंध के तौर-तरीके या रहे होंगे? यहाँ की सभ्यता में अनुशासन तो है परंतु किसी सत्ता के बल के द्वारा नहीं है। यह अनुशासन वहाँ की नगर-योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ़-सफ़ाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता में देखी जा सकती है। दूसरी सयताओं में प्रशासन राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित है। वहाँ बड़े-बड़े सुंदर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मंदिर मिले हैं। राजाओं और धर्माचार्यों की समाधियाँ भी दूसरी सभ्यताओं में भरपूर मात्रा में मौजूद हैं। सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी नावें मिली हैं जबकि मिस्र की सभ्यता में बड़ी नावों का प्रचलन था। सांस्कृतिक धरातल पर यह तथ्य सामने आता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता दूसरी सभ्यताओं से अलग एवं स्वाभाविक, साधारण जीवन-शैली पर आधारित थी। सिंधु सभ्यता के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं आडंबर दिखाई नहीं पड़ता जबकि अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते अनेक प्रमाण मौजूद हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता संपन्न थी परंतु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। इसलिए इसे 'लो प्रोफ़ाइल सभ्यता' भी कहा जाता है।

(*iii*) किशनदा यशोधर बाबू के आदर्श थे। उनकी संपूर्ण शैली किशनदा से अधिक प्रभावित है। वे किशनदा से इतने अधिक प्रभावित हैं कि अपने परिवार से भी सामंजस्य नहीं बिठा पा रहे हैं। घर में छोटी-छोटी बातों को लेकर तनाव की स्थिति उत्पन्न होना कहीं-न-कहीं विचारों में सामंजस्य की कमी को दर्शाता है। कहानी के अंत में यह तथ्य भी उजागर होता है कि यशोधर बाबू संस्कारों और मर्यादाओं से जुड़े हैं। उनका मन भारतीय परिवेश के अनुकूल सोचता है परंतु यह भी सत्य है कि वे कहीं-न-कहीं इस बात से भी खुश हैं कि उनके बच्चे उनसे अधिक सुलझे हुए हैं। जहाँ तक मेरे जीवन को दिशा देने में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उसके लिए तीन बातें बड़ी महत्वपूर्ण हैं—माता-पिता के द्वारा दिए गए संस्कार, गुरुजनों द्वारा दी गई शिक्षाएँ और आदर्श तथा साहित्य के साथ जुड़ाव व साहित्यिक वातावरण में जीवन की लालसा। सर्वप्रथम माता-पिता उसकी पाठशाला के अध्यापक होते हैं। जैसे शिक्षा और संस्कार माँ-बाप देते हैं वैसी व्यक्ति की जीवन-शैली हो जाती है। भावुकता, संवेदना और पारिवारिक भाईचारा माँ और पिता के साथ जीने वाले पारिवारिक सदस्यों से जुड़कर पैदा होता है। माता-पिता के सानिध्य मे जीकर मैं अधिक संवेदनशील एवं भावुक बना हूँ। गुरुजनों के आदर्श और शिक्षाएँ व्यक्ति को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। चरित्रवान अध्यापक आपके चरित्र को भी प्रभावित करता है। अध्यापक के सुच्चरित्र और परिश्रमी होने से विद्यार्थी भी चरित्रवान एवं परिश्रम करने लगता है। देश-प्रेम, विश्व बंधुत्व और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को याद रखना शायद मैंने गुरुजनों की शिक्षाओं और आदर्शों से जाना है। मैं साहित्य का विद्यार्थी हूँ इसलिए समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझता हूँ। साहित्य और समाज में एक सुमेल होता है। साहित्य समाज से प्रभावित भी होता है और समाज को प्रभावित करता है। इसलिए मेरी साहित्यिक अभिरुचियाँ मुझे समाज के प्रति जागरूक एवं सचेत बनाती हैं। इस प्रकार, मैं ऐसा समझता हूँ कि हमें यशोधर बाबू की भाँति संवेदनशील होना चाहिए। परंपराओं और संस्कारों से जुड़ना चाहिए। माता-पिता के प्रति हमें अपने कर्तव्यों का निर्वाहन ठीक से करना चाहिए। समाज के प्रति अधिक संवेदनशील एवं कर्तव्यशील बनना चाहिए। चरित्रवान गुरुजनों की शिक्षा और संस्कारों को जीवन में उतारना चाहिए।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–6

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं
विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (*ii*) सकारात्मक या नकारात्मक होने पर
(2) (*iii*) जीतने की इच्छा
(3) (*iii*) केवल कथन (I), (II) और (III) सही है।
(4) सकारात्मक बातें
(5) सकारात्मक तथा नकारात्मक बातें
(6) मीठा बोलना सकारात्मक बोलना
(7) समाज व व्यक्ति की विश्वसनीयता समाप्त करता है।

उत्तर—2. (1) (*iv*) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।
(2) (*iii*) गलत और झूठे आँकड़े
(3) (*iv*) I-(3), II-(1), III-(2)
(4) गलत तथा अनचाहे आंकड़े
(5) सही या गलत में अन्तर छुप जाता है।
(6) गलत आंकड़े गलती करवा सकते हैं।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और

उत्तर—3. (*i*) मीडिया लोकतंत्र की 'चौथी संपत्ति' यह न्याय और सरकार की नीतियों के लाभ को समाज के आंतरिक वर्गों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मीडिया शासन और देश के नागरिकों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है, लोगों को मीडिया पर विश्वास है क्योंकि यह दर्शकों पर भी प्रभाव डालती है। भारतीय राजनीति की बदलती गतिशीलता ने मीडिया से लोगों की आशाएँ बढ़ा दी हैं क्योंकि बदलाव का यह चरण व्यक्तिगत धारणा के साथ विश्वास करने के लिए बहुत सरल हो गया है। देश की पुरानी पीढ़ी अभी भी परंपरा और संस्कृति के आधार पर चीज़ों को तय करती है, जबकि वर्तमान युवाओं को दुनिया में तेज़ी से बढ़ती प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया में रुचि है। इस प्रकार, मीडिया के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि टीआरपी और चैनलों को बढ़ावा देने के लिए प्रसारित की जा रही सूचनाओं को पक्षपाती या हेर-फेर युक्त न बनाया जाए। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है, क्योंकि यह कई अपरिहार्य भूमिकाओं का निर्वहन करती है। यह लोगों को आवश्यक जानकारी प्रदान करती है, ताकि वे समुचित निर्णय ले सकें। बहस, चर्चा और मतदान के माध्यम से मीडिया सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह बनाती है। यह लोगों को लोकतंत्र के बारे में शिक्षित करती है और साथ ही जनता की राय और सुझावों के माध्यम से लोकतांत्रिक माँगों का निर्माण करके सार्वजनिक नीति के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। यह मानव अधिकारों के उल्लंघन, सत्ता का दुरुपयोग, न्याय वितरण में कमियाँ, लोकतांत्रिक संस्थानों में भ्रष्टाचार आदि को उजागर करती है। मीडिया अखिल भारतीय महत्व के मुद्दों को उठाकर एकता और भाईचारा बनाने में मदद करती है और देश में मौजूद विविधता को भी रेखांकित करती है। भारतीय मीडिया बेहद जीवंत रहा है और जब भी लोकतंत्र को निरंकुश प्रवृत्ति से खतरा हुआ है, उसने इन प्रवृत्तियों के खिलाफ ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हो सकता है, परंतु नियमन के बिना यह भारत में लोकतंत्र के लिए अपमानजनक भी हो सकता है। इसे संवैधानिक सीमाओं और नियमों के भीतर उचित स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए। मीडिया भी समाज का एक हिस्सा है। समाज और उसके नेताओं को लोकतंत्र और लोकतंत्र की कसौटी पर खरा उतरने से पहले खुद को परखना होगा।

(*ii*) अवकाश के दिन की हर किसी को प्रतीक्षा होती है। विशेषकर विद्यार्थियों को तो इस दिन की प्रतीक्षा बड़ी बेसबसी से होती है। उस दिन न तो जल्दी उठने की चिंता होती है, न स्कूल जाने की। स्कूल में भी छुट्टी की घंटी बजते ही विद्यार्थी कितनी प्रसन्नता से कक्षाओं से बाहर आ जाते हैं। अध्यापक महोदय के भाषण का आधा वाक्य ही उनके मुँह में रह जाता है और विद्यार्थी कक्षा छोड़कर बाहर की ओर भाग जाते हैं। जब यह पता चलता है कि आज दिनभर की छुट्टी है तो विद्यार्थियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वे उस दिन खूब जी भरकर खेलते हैं, घूमते हैं। कोई सारा दिन क्रिकेट के मैदान में बिताता है तो कोई पतंगबाज़ी में सारा दिन बिता देते हैं। सुबह के घर से निकले तो शाम को ही घर लौटते हैं। कोई कुछ कहे तो उत्तर मिलता कि आज तो छुट्टी है। लड़कियों के लिए छुट्टी का दिन घरेलू काम-काज का दिन होता है। छुट्टी के दिन मुझे सुबह-सवेरे उठकर अपनी माता जी के साथ कपड़े धोने में सहायता करनी पड़ती है। मेरी माता जी एक स्कूल में पढ़ाती हैं अत: उनके पास कपड़े धोने के लिए केवल छुट्टी का दिन ही उपयुक्त होता है। कपड़े धोने के बाद मुझे अपने बाल धोने होते हैं, बाल धोकर स्नान करके फिर रसोई में माता जी का हाथ बँटाना पड़ता है। इस दिन ही हमारे घर में

HOLY FAITH INTERACTIVE (I) P. LTD.

विशेष व्यंजन पकते हैं। दूसरे दिनों में तो सुबह-सवेरे सबको भागम-भाग लगी होती है। किसी को स्कूल जाना होता है तो किसी को दफ़्तर। दोपहर के भोजन के पश्चात थोड़ा आराम करते हैं। फिर माता जी मुझे लेकर बैठ जाती हैं। कुछ सिलाई, बुनाई या कढ़ाई की शिक्षा देती हैं। शाम होते ही शाम की चाय का समय हो जाता है। अवकाश के दिन शाम की चाय में कभी समोसे, कभी पकौड़े बनाए जाते हैं। चाय पीने के बाद फिर रात के खाने की चिंता होने लगती है और इस तरह अवकाश का दिन अवकाश का नहीं बल्कि अधिक काम का दिन होता है।

(*iii*) मार्च महीने की पहली तारीख थी। उस दिन हमारी वार्षिक परीक्षाएँ शुरू हो रही थीं। परीक्षा शब्द से वैसे सभी मनुष्य घबराते हैं परंतु विद्यार्थी वर्ग इस शब्द से विशेष रूप से घबराता है। मैं जब घर से चला तो मेरा दिल भी धक्-धक् कर रहा था। मैं रातभर पढ़ता रहा था और चिंता थी कि यदि सारी रात के पढ़े में से कुछ भी प्रश्न-पत्र में न आया तो या होगा? परीक्षा भवन के बाहर सभी विद्यार्थी चिंतित नज़र आ रहे थे। कुछ विद्यार्थी किताबें लेकर अब भी उसके पन्ने उलट-पुलट रहे थे। कुछ बड़े खुश-खुश नज़र आ रहे थे। लड़कों से ज़्यादा लड़कियाँ अधिक गंभीर नज़र आ रही थीं। कुछ लड़कियाँ तो बड़े आत्मविश्वास से भरी दिखाई पड़ रही थीं। लड़कियाँ इसी आत्मविश्वास के कारण परीक्षा में लड़कों से बाज़ी मार जाती हैं। मैं अपने सहपाठियों से उस दिन के प्रश्न-पत्र के बारे में बात कर ही रहा था कि परीक्षा भवन में घंटी बजनी शुरू हो गई। यह संकेत था कि हमें परीक्षा भवन में प्रवेश कर जाना चाहिए। सभी विद्यार्थी ने परीक्षा भवन में प्रवेश करना शुरू कर दिया। भीतर पहुँचकर हम सब अपने-अपने अनुक्रमांक के अनुसार अपनी-अपनी सीट पर जाकर बैठ गए। थोड़ी ही देर में अध्यापकों द्वारा उत्तर-पुस्तिकाएँ बाँट दी गई और हमने उस पर अपना-अपना अनुक्रमांक आदि लिखना शुरू कर दिया। ठीक नौ बजते ही एक घंटी बजी और अध्यापकों ने प्रश्न-पत्र बाँट दिए। कुछ विद्यार्थी प्रश्न-पत्र प्राप्त करके उसे माथा टेकते देखे गए। मैंने भी ऐसा ही किया। माथा टेकने के बाद मैंने प्रश्न-पत्र पढ़ना शुरू किया। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न था योंकि प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्न मेरे पढ़े हुए प्रश्नों में से थे। मैंने किए जाने वाले प्रश्नों पर निशान लगाए और कुछ क्षण तक यह सोचा कि कौन-सा प्रश्न पहले करना चाहिए और फिर उपर लिखना शुरू कर दिया। मैंने देखा कुछ विद्यार्थी अभी बैठे सोच ही रहे थे शायद उनके पढ़े में से कोई प्रश्न न आया हो। तीन घंटे तक मैं बिना इधर-उधर देखे लिखता रहा। मैं प्रसन्न था कि उस दिन मेरा पर्चा बहुत अच्छा हुआ था।

4. (*i*) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में महत्वपूर्ण अंतर है। अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और रुचियों का होना अति आवश्यक है। एक बीट रिपोर्टर को अपने बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। विशेषीकृत रिपोर्टिंग सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र विशेष या विषय से जुड़ी घटनाओं से संबंधित हैं। इसमें वहाँ के मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करना होता है और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए यदि शेयर मार्किट में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाले संवाददाता को तथ्य पर आधारित एक रिपोर्ट तैयार करनी पड़ेगी जिसमें सभी आवश्यक सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे। परंतु विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके बाज़ारों में आई गिरावट के यों और या कारणों को स्पष्ट करने की कोशिश करेगा और साथ ही यह भी देखेगा कि इसका आम लोगों पर या प्रभाव पड़ेगा? इसी कारण बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा प्राप्त है।

(*ii*) नाट्य-रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है—

(i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।

(ii) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।

(iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।

(iv) संगीत ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।

(v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

(*iii*) समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न तरीके अपनाते हैं, जिसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारों के द्वारा यह कार्य प्राय: तीन तरीके से किया जाता है—पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन से जुड़कर नियंत्रित वेतन प्राप्त करता है। अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर) किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करता है। फ्रीलांसर पत्रकार किसी विशेष समाचार संगठन से नहीं होता बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अख़बारों के लिए लिखता है। पत्रकारीय लेखन का संबंध विभिन्न घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से होता है। यह कार्य कविता, कहानी, उपन्यास आदि के द्वारा पूरी तरह से संभव नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें तात्कालिकता और पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। पत्रकारीय लेखन में इस बात को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि वह विशाल समुदाय के लिए लिख रहा है। उसे सदा सीधी-सादी और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उसे कभी भी लंबे-लंबे वाक्य नहीं लिखने चाहिए। उसे किसी भी अवस्था में अनावश्यक विशेषणों और उपमाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(*iv*) (*i*) मंत्रालय के सूत्र (*ii*) प्रेस कॉन्फ्रेंस और विज्ञप्तिया

(*iii*) साक्षात्कार

(*iv*) सर्वे (*v*) जाँच समितियों की रिपोर्ट्स

(*vi*) क्षेत्र विशेष में सक्रिय संस्थाएँ और व्यति (*vii*) संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यति

(*viii*) इंटरनेट और दूसरे संचार-माध्यम (*ix*) स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

(*v*) अभिव्यक्ति का अधिकार मनुष्य का एक मौलिक अधिकार है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से कर सकता है। निबंध विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। इसमें निबंधकार अपने विचारों को सहज रूप से (अभिव्यक्ति) अभिव्यक्त करता है। विचार अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया निबंधों के पुराने विषयों के साथ पूर्णत: घटित नहीं होती क्योंकि पुराने विषयों पर पहले से ही तैयार शुद्ध सामग्री अधिक मात्रा में उपलब्ध रहती है। इससे हमारी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित नहीं होती। इसलिए हमें निबंधों के नए विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त करने चाहिए। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्त

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

करने से लेखक का मानसिक और आत्मिक विकास होता है। इससे लेखक की चिंतन शक्ति का विकास होता है। इससे लेखक को बौद्धिक विकास तथा अनेक विषयों की जानकारी होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के विषय बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

5. (*i*) 1. भाषा शुद्ध होनी चाहिए

2. व्याकरणिक कमियाँ नहीं होनी चाहिए।

3. सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(*ii*) कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें जहाँ कुछ समानताएँ हैं वहाँ कुछ असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार हैं—

कहानी—

(i) कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजनपूर्ण चित्रण किया जाता है।

(ii) कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।

(iii) कहानी कही अथवा पढ़ी जाती है।

(iv) कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बाँटा जाता है।

(v) कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का महत्व नहीं है।

नाटक—

(i) नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है।

(ii) नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।

(iii) नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

(iv) नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

(v) नाटक में मंच-सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्व होता है।

(*iii*) नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार हैं—

(i) सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।

(ii) लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।

(iii) लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।

(iv) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।

(v) लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है।

(vi) लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (ग) भाषा के

(2) (घ) उपर्युक्त सभी

(3) (ग) भाषा का ज्ञान न होना

(4) (घ) अनुप्रास

(5) (ख) लोगों को बात समझाने की कोशिश कर रहा था।

उत्तर—7. (*i*) कोई बच्चा इस सृष्टि में आकर इनसान की युगों पुरानी सभ्यता को वर्तमान में स्थापित करता है। युगों से हमारे पूर्वजों ने जिन-जिन जीवन-मूल्यों की स्थापना की, उन्हें अगली पीढ़ी तक ले जाने के लिए वह तत्पर होता है। पुराने मूल्यों में वर्तमान का यथार्थ जोड़ता है और भविष्य की ओर बढ़ जाता है। कविता भी ऐसा ही करती है। कविता युगों पुराने भावों को वर्तमान के माध्यम से भविष्य की ओर लेकर आगे बढ़ती है। कोई भी बच्चा खेलते-कूदते समय, स्थान और स्थिति का ध्यान न रखते हुए अपने भावों को व्यक्त कर देता है और कवि भी अपनी कविता के माध्यम से ऐसा ही करता है। कवि ने कविता और बच्चे को समानांतर रखा है क्योंकि इन दोनों के माध्यम से ही अतीत, वर्तमान और भविष्य आपस में जुड़ते हैं। बच्चे भी खेलते समय किसी की परवाह नहीं करते और कवि भी हर प्रकार के अच्छे-बुरे भावों को कविता के माध्यम से व्यक्त कर देते हैं।

(*ii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से ली गई है। इसमें कवि ने शारीरिक चुनौती को झेलते लोगों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि कैमरे के सामने अपने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु ऐसे लोगों से बेतुके सवाल पूछे जाते हैं कि इसमें कवि ने एक तरह से पीड़ा के साथ दृश्य-संचार माध्यम के संबंध को रेखांकित किया है जो दिखाता है कि किस तरह करुणा जगाने के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम किस तरह क्रूर बन जाता है। यह कविता ऐसे लोगों की तरफ संकेत करती है जो अपने दुख-दर्द, वेदना-यातना को बेचना चाहते हैं।

(*iii*) 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने कवि-कर्म और कृषि कर्म के प्रत्येक चरण को खेती के रूपक में बाँधने की कोशिश की है। इस खेत में भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक रचना-विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है, जो मूल कल्पना का सहारा लेकर स्वयं विगलित हो जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं जो निरंतर पल्लवित-पुष्पित होकर एक पूर्ण कृति का स्वरूप ग्रहण करते हैं। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है वह रस-धारा क्षणभर में होने वाली रोपाई के परिणामस्वरूप होती है। लेकिन यह रस-धारा अनंतकाल तक चलने वाली खेती की कटाई के समान होती है। इस साहित्य के अक्षयपात्र का रस कभी खत्म नहीं होता है।

उत्तर—8. (*i*) पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं का प्रतीक है, इसलिए पतंग के साथ बच्चों का अटूट संबंध है। असीम आकाश में उड़ती हुई पतंग जैसे-जैसे हिलोरें लेती है, वैसे-वैसे बच्चों का मन भी हिलोरें लेता हुआ प्रतीत होता है। बच्चे पतंग के साथ तन-मन से जुड़ जाते हैं। वे पतंगों को उड़ाते हुए उनमें इतना डूब जाते हैं कि स्वयं को ही भूल जाते हैं। इस प्रकार बच्चों का उड़ान से गहन संबंध है।

(*ii*) कविता के माध्यम से कवि के मधुर भाव व्यक्त होते हैं जो अपने समय और समाज को सुगंध प्रदान करते हैं। उन भावों का प्रभाव क्षणिक नहीं होता, वे चिरस्थायी होते हैं। वे युग-युगांतर तक मानव सभ्यता को प्रभावित करते हैं। शाश्वत मूल्य तो मानव के लिए हर काल में संजीवनी का कार्य करते हैं। कविता में छिपे हुए श्रेष्ठ भाव और मूल्य तो बिना मुरझाए सदा महकते रहते हैं। अतीत से वे वर्तमान को प्राप्त हुए और

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

वर्तमान से आने वाली पीढ़ियों को प्राप्त होंगे। उनके द्वारा ही मानव सभ्यता के उच्च जीवन-मूल्य गति प्राप्त करते रहेंगे।

(*iii*) प्रात:काल का दृश्य बड़ा मोहक होता है। उस समय श्यामलता, श्वेतिमा तथा लालिमा का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। रात्रि की नीरवता समाप्त होने लगती है। प्रकृति में नया निखार आ जाता है। आकाश में स्वच्छता, निर्मलता तथा पवित्रता व्याप्त दिखाई देती है। सरोवरों तथा नदियों के स्वच्छ जल में पड़ने वाले प्रतिबिंब बड़े आकर्षक तथा मोहक दिखाई देते हैं। आकाश लीपे हुए चौके के समान पवित्र, हलकी लाल केसर से युक्त सिल के समान तथा जल में झलकने वाली गोरी देह के समान दिखाई देता है।

उत्तर—9. (1) (ख) जब मन खाली हो।
(2) (क) आवश्यकता के समय काम आने में
(3) (ख) जब मन लक्ष्य से भरा हो
(4) (ग) परमात्मा का
(5) (घ) कोई इच्छा न रहना।

उत्तर—10. (*i*) 'बाज़ारूपन' से तात्पर्य कपट बढ़ाने से है अर्थात सद्भाव की कमी। सद्भाव की कमी के कारण आदमी परस्पर भाई, मित्र और पड़ोसी आदि को भूल जाता है। मनुष्य केवल सबके साथ कोरे ग्राहक जैसा व्यवहार करता है। उसे कोई भाई, मित्र या पड़ोसी दिखाई नहीं देता है। बाज़ारूपन के कारण मनुष्य को केवल अपना लाभ-हानि ही दिखाई देता है। इस भावना से शोषण भी होने लगता है। जो व्यति ये जानते हैं कि वे या चाहते हैं उन्हें किस वस्तु की आवश्यकता है ऐसे व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। ये लोग कभी भी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में नहीं डूबते। इन्हीं लोगों को अपनी चाहत का अहसास होता है जिसके आधार पर बाज़ार को सार्थकता प्राप्त होती है।

(*ii*) लेखिका ने भक्तिन के सेवक-धर्म की तुलना हनुमान जी से की है। यह इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार हनुमान अपने प्रभु राम की तन-मन और पूर्ण निष्ठा से सेवा किया करते थे। ठीक उसी प्रकार भक्तिन अपनी मालकिन लेखिका की सेवा करती है। वह उनके प्रति पूर्ण समर्पण भाव से सेवा भाव रखती है।

(*iii*) वर्तमान समाज में चारों ओर मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खराबा का बोलबाला है। मानव सभ्यता घोर संकट से परिव्याप्त है। सत्य, अहिंसा आदि आदर्श कहीं भी दिखाई नहीं देते। जन-जन आतंक की छाया में जी रहा है। वर्तमान सभ्यता में मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में अविलंब हिंसा, मारकाट, लूट-पाट पर उतावला हो उठता है। वह सत्य-अहिंसा की अपेक्षा असत्य, हिंसा, मार-काट का पालन करता है। निजी स्वार्थों की पूर्ति करने में उसे किसी का भी अहित दिखाई नहीं देता। लेखक ने ऐसे संकट के समय सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को याद किया है। वे दोनों बाहर से कठोर और दृढ़ थे लेकिन दोनों ही भीतर से कोमल थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में वे अविचल थे। उन दोनों को हानि-लाभ से कोई मतलब ही नहीं था।

उत्तर—11. (*i*) विद्यार्थी स्वयं करें।

(*ii*) जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं—

(*a*) जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है।

(*b*) श्रम-विभाजन निश्चय ही सय समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सय समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती।

(*c*) भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती, बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

(*d*) जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

(*iii*) लेखिका ने भतिन के सेवक-धर्म की तुलना हनुमान जी से की है। यह इसलिए की है योंकि जिस प्रकार हनुमान अपने प्रभु राम की तन-मन और पूर्ण निष्ठा से सेवा किया करते थे। ठीक उसी प्रकार भतिन अपनी मालकिन लेखिका की सेवा करती है। वह उनके प्रति पूर्ण समर्पण भाव से सेवा भाव रखती है।

उत्तर—12. (*i*) यशोधर बाबू सचिवालय में सेशन ऑफ़िसर हैं। वे अपने काम के प्रति सचेत एवं समय के पाबंद हैं। काम के समय वे अपने सह कर्मचारियों के साथ गंभीर व्यवहार करते हैं जबकि छुट्टी के बाद उनके साथ दोस्तों की तरह व्यवहार करते हैं। ये सभी आदर्श एवं संस्कार उन्हें अपने आदर्श कृष्णानंद से मिले हैं जिन्हें यशोधर आदर से किशनदा कहकर पुकारते हैं। किशन के संस्कारों और आपसी व्यवहार ने यशोधर बाबू को गहरा प्रभावित किया है। वे प्रत्येक बात किशनदा के नज़रिए से देखते हैं। किशनदा पहाड़ से आए युवाओं की समस्याओं को समझते हैं। यशोधर बाबू भी अल्मोड़ा से आकर दिल्ली में किशनदा के घर रहे थे। जब उनकी आयु नौकरी के लिए पूरी नहीं हुई तब तक वे किशनदा के यहाँ रसोइया के रूप में कार्य करते थे। जब आयु पूरी हो गई तो किशनदा ने यशोधर बाबू को अपने नीचे नौकरी दिलवा दी। इसलिए यशोधर बाबू किशनदा की अपनी ज़िंदगी में अहम भूमिका मानते हैं। उन्हीं के नशे-कदम पर चलते हुए यशोधर बाबू ने भी किशनदा की भाँति अपना घर नहीं बनाया। वे दिल्ली (पहाड़गंज) में किराए के मकान में रहते हैं। घर बनाने के संदर्भ में किशनदा का मानना था कि ''मूर्ख लोग घर बनाते हैं जबकि सयाने उन घरों में बसते हैं।'' इसलिए किशनदा से प्रभावित होकर यशोधर बाबू भी घर नहीं बनवाते हैं। उन्हें यह बात बिल्कुल भी पसंद नहीं आती कि उनके बच्चे उनकी सालगिरह को 'सिल्वर वैडिंग' के रूप में मनाएँ। वे इस आयोजन को फिज़ूल खर्ची मानते हैं। उनके बच्चे यशोधर बाबू के इसी दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं। दूसरी ओर यशोधर बाबू की पत्नी अपने बेटों और आधुनिक बेटी के साथ अधिक समय व्यतीत करती है। वह यशोधर बाबू के साथ इसलिए भी सामंजस्य नहीं बिठा पाती योंकि उसका मानना है कि यशोधर बाबू के संस्कारों की वजह से ही वह अपने जीवन को सुखमय ढंग से व्यतीत नहीं कर सकी। जेठानियाँ और बड़े बूढ़ों के दबाव में यशोधर बाबू की पत्नी स्वयं को असहज एवं असुरक्षित महसूस करती थी। एक बार जब यशोधर बाबू अपनी बेटी को जीन्स और बिना बाजू का टॉप पहनने से मना करते हैं तो वह उनका विरोध करते हुए कहती है—''वह सिर पर पल्लू-वल्लू मैंने कर लिया बहुत तुम्हारे कहने पर समझे, मेरी बेटी वही करेगी जो दुनिया कर रही है।'' इस प्रकार कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध हैं जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित है। इसलिए यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित होती है लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं।

(*ii*) सिंधु घाटी की खुदाई में मिले स्तूप, गढ़, स्नानागार, टूटे-फूटे घर, चौड़ी और कम चौड़ी सड़कें, गलियाँ, बैलगाड़ियाँ, सीने की सुइयाँ,

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

छोटी-छोटी नावें किसी भी सयता एवं संस्कृति का इतिहास कही जा सकती हैं। इन टूटे-फूटे घरों के खंडहर उस सभ्यता की ऐतिहासिक कहानी बयान करते हैं। मिट्टी के बरतन, मूर्तियाँ, औज़ार आदि चीज़ें उस सभ्यता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को नापने का बढ़िया औज़ार हो सकते हैं परंतु मुअनजो-दड़ो के ये टूटे-फूटे घर अभी इतिहास नहीं बने हैं। इन घरों में अभी धड़कती ज़िंदगियों का अहसास होता है। संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा सामान भले ही अजायबघर में रख दिया हो परंतु शहर अभी वहीं हैं जहाँ कभी था। अभी भी आप इस शहर की किसी दीवार के साथ पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। वे घर अब चाहे खंडहर बन गए हों परंतु जब आप इन घरों की देहरी पर कदम रखते हैं तो आप थोड़े सहम जाते हैं क्योंकि यह भी किसी का घर रहा होगा। जब किसी के घर में अनाधिकार से प्रवेश करते हैं तो डर लगना स्वाभाविक है। आप किसी रसोई की खिड़की के साथ खड़े होकर उसमें पकते पकवान की गंध ले सकते हैं। अभी सड़कों के बीच से गुज़रती बैलगाड़ियों की रुन-झुन की आवाज़ सुन सकते हैं। ये सभी घर टूटकर खंडहर बन गए हैं परंतु इनके बीच से गुज़रती सांय-सांय करती हवा आपको कुछ कह जाती है। अब ये सब घर एक बड़ा घर बन गए हैं। सब एक-दूसरे में खुलते हैं। लेखक का मानना है कि ''लेकिन घर एक नशा ही नहीं होता। हर घर का एक चेहरा और संस्कार होता है। भले ही वह पाँच हज़ार साल पुराना घर क्यों न हों!'' इस प्रकार लेखक इन टूटे-फूटे खंडहरों से गुज़रते हुए इन घरों में किसी मानवीय संवेदनाओं का संस्पर्श करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास होने के साथ-साथ धड़कती ज़िंदगी के अनछुए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं। इसी कारण इसे अनेक लोग 'लो प्रो-फाइल' सभ्यता भी कहते हैं।

(*iii*) सिंधु घाटी की खुदाई में मिले स्तूप, गढ़, स्नानागार, टूटे-फूटे घर, चौड़ी और कम चौड़ी सड़कें, गलियाँ, बैलगाड़ियाँ, सिलाई-कढ़ाई की सुइयाँ, छोटी-छोटी नावें किसी भी सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास कही जा सकती हैं। इन टूटे-फूटे घरों के खंडहर उस सभ्यता की ऐतिहासिक कहानी बयान करते हैं। मिट्टी के बरतन, मूर्तियाँ, औज़ार आदि चीज़ें उस सभ्यता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को नापने का बढ़िया औज़ार हो सकते हैं परंतु मुअनजो-दड़ो के ये टूटे-फूटे घर अभी इतिहास नहीं बने हैं। इन घरों में अभी धड़कती ज़िंदगियों का अहसास होता है। संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा सामान भले ही अजायबघर में रख दिया हो परंतु शहर अभी वहीं है जहाँ कभी था। अभी भी आप इस शहर की किसी दीवार के साथ पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। वे घर अब चाहे खंडहर बन गए हों परंतु जब आप इन घरों की देहरी पर कदम रखते हैं तो आप थोड़े सहम जाते हैं क्योंकि यह भी किसी का घर रहा होगा। जब किसी के घर में अनाधिकार से प्रवेश करते हैं तो डर लगना स्वाभाविक है। आप किसी रसोई की खिड़की के साथ खड़े होकर उसमें पकते पकवान की गंध ले सकते हैं। अभी सड़कों के बीच से गुज़रती बैलगाड़ियों की रुन-झुन की आवाज़ सुन सकते हैं। ये सभी घर टूटकर खंडहर बन गए हैं परंतु इनके बीच से गुज़रती साँय-साँय करती हवा आपको कुछ कह जाती है। अब ये सब घर एक बड़ा घर बन गए हैं। सब एक-दूसरे में खुलते हैं। लेखक का मानना है कि ''लेकिन घर एक नशा ही नहीं होता। हर घर का एक चेहरा और संस्कार होता है। भले ही वह पाँच हजार साल पुराना घर क्यों न हो!'' इस प्रकार लेखक इन टूटे-फूटे खंडहरों से गुज़रते हुए इन घरों में किसी मानवीय संवेदनाओं का संस्पर्श करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास होने के साथ-साथ जीवंत दस्तावेज़ भी होते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–7

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं
विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (ग) चीन
(2) (घ) भविष्य
(3) केवल कथन (III) और (IV) सही हैं।
(4) हिंदी पत्रकारिता को
(5) पत्रकारिता
(6) हिन्दी
(7) जहाँ हर सूचना शीघ्रता से पहुंच जाती है।

उत्तर—2. (1) (घ) कथन (I) तथा (IV) सही हैं।
(2) (क) झुकना
(3) (क) झुकना नहीं होता
(4) मां-बाप, पत्नी, बच्चे, मौसी, मामा आदि।
(5) खड़े होना झुकना
(6) दूसरों का सम्मान तथा आत्मसम्मान।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) नदी के किनारे पर चलना बड़ा आनंददायक लगता है। बशर्ते झमाझम बरसात हो रही हो। एक दिन अचानक मैं यमुना नदी के किनारे कल-कल करती लहरों के संगीत का आनंद ले रहा था। अचानक काले-काले बादल आए और तेज़ फुहारों के साथ शरीर में रोमांच व स्पंदन पैदा होने लगा। नदी के तट पर वर्षा की शीतल फुहारें मानो सावन का गीत गाकर मुझे अद्‌भुत सुख प्रदान कर रही थीं। बरसात से घिरा मैं भी नदी के सुरम्य वातावरण में खुद को भाग्यशाली समझ रहा था। बरसात और नदी दोनों ही मुझे यह संदेश दे रही थीं कि एकसरता से निजात पाने के लिए मेरे पास आओ और हम तुम्हें अद्‌भुत आनंद से सरोबार कर देंगी। ऐसे मोहक वातावरण में भला कौन नहीं वक्त गुजारना चाहता। महात्मा गांधी भी नदी के किनारे चलते थे, कभी-कभी अकेले और कभी-कभी आगंतुकों और प्रेस पत्रकारों के साथ। नदी के आस-पास बहने वाली हवा शरीर और मन दोनों के लिए एक टॉनिक है। जब हम नदी के किनारे पर चलते हैं तो हमारा मन प्रसन्न होता है। नदी और वर्षा का पुराना रिश्ता है। सुबह और शाम नदी के किनारे चलने से व्यायाम हो जाता है। बरसात भी प्रदूशित चीज़ों को धोकर हमें नवीनता का संदेश देती है। कौन नहीं नदी के किनारे बरसात से अठखेलियाँ करना चाहेगा।

(*ii*) बड़े-बड़े भी काँपते हैं इम्तिहान के नाम से। इम्तिहान छोटों का हो या बड़ों का, पर यह डराता सभी को है। दो वर्ष पहले जब दसवीं की बोर्ड परीक्षा हमें देनी थी तब सारा वर्ष स्कूल में हमें बोर्ड परीक्षा नाम से डराया गया था और घर में भी इसी नाम से धमकाया जाता था। मन-ही-मन हम इसके नाम से भी डरा करते थे कि पता नहीं, इस बार इम्तिहान में क्या होगा। सारा वर्ष अच्छी तरह पढ़ाई की थी, बार-बार टेस्ट दे-देकर तैयारी की थी पर इम्तिहान के नाम से भी डर लगता था। जिस दिन इम्तिहान का दिन था, उससे पहली रात मुझे तो बिलकुल नींद नहीं आई। पहला प्रश्न-पत्र हिंदी का था और विषय पर मेरी अच्छी पकड़ थी पर 'इम्तिहान' का भूत सिर पर इस प्रकार सवार था कि नीचे उतरने का नाम ही नहीं लेता था। सुबह स्कूल जाने के लिए तैयार हुआ। स्कूल-बस में सवार हुआ तो हर रोज़ हो-हल्ला करने वाले साथियों के हाथों में पकड़ी पुस्तकें और उनकी झुकी हुई आँखों ने मुझे और अधिक डराया। सबके चेहरों पर खौफ़-सा छाया था। खिलखिलाने वाले चेहरे आज सहमे हुए थे। मैंने भी मन ही मन अपने पाठों को दुहराना चाहा पर ऐसा लगा कि मुझे तो कुछ भी याद ही नहीं। सब कुछ भूलता-सा प्रतीत हो रहा था। मैंने भी अपनी पुस्तक खोली। पुस्तक देखते ही ऐसा लगा कि मुझे तो यह आती है। खैर, स्कूल पहुँच अपनी जगह पर बैठे। प्रश्न-पत्र मिला, आसान लगा। ठीक समय पर पूरा प्रश्न-पत्र हल हो गया। जब बाहर निकले तो सभी प्रसन्न थे। पर साथ ही चिंता आरंभ हो गई अगले पेपर की। अगला पेपर गणित का था। चाहे दो छुट्टियाँ थीं, पर ऐसा लगता था कि ये तो बहुत कम हैं। वह पेपर भी बीता, पर चिंता समाहृश्वत नहीं हुई। पंद्रह दिन में सभी पेपर खत्म हुए पर ये सारे दिन बहुत व्यस्त रहे थे। इन दिनों न तो भूख लगती थी और न खेलने की इच्छा होती थी। इन दिनों न तो मैं अपने किसी मित्र के घर गया और न ही मेरे किसी मित्र को मेरी सुध आई। इम्तिहान के दिन बड़े तनाव भरे थे।

(*iii*) पूर्व दिशा की ओर उभरती हुई लालिमा को देखकर पक्षी चहचहाने लगते हैं। उन्हें सूर्य के आगमन की सबसे पहले सूचना मिल जाती है। वे अपनी चहचहाहट द्‌वारा समस्त प्राणी-जगत को रात के बीत जाने की सूचना देते हुए जागने की प्रेरणा देते हैं। सूर्य देवता का स्वागत करने के लिए प्रकृति रूपी नदी भी प्रसन्नता में भरकर नाच उठती है। फूल खिल उठते हैं, कलियाँ चटक जाती हैं और चारों ओर का वातावरण सुगंधित हो

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

जाता है। सूर्य देवता के आगमन के साथ ही मनुष्य रात भर के विश्राम के बाद तरोताजा हो जाते हैं हर तरफ़ चहल-पहल नज़र आने लगती है। किसान हल और बैलों के साथ अपने खेतों की ओर चल पड़ते हैं। गृहणियाँ घरेलू काम-काज में व्यस्त हो जाती हैं। मंदिरों एवं गुरुद्वारों में लगे लाउडस्पीकर से भजन-कीर्तन के कार्यक्रम प्रसारित होने लगते हैं। भक्तजन स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा-पाठ में लग जाते हैं। स्कूली बच्चों की माताएँ उन्हें झिंझोड़-झिंझोड़कर जगाने लगती हैं। दफ़्तर जाने वाले बाबू जल्दी-जल्दी तैयार होने लगते हैं जिससे समय पर बस पकड़कर अपने दफ़्तर पहुँच सकें। थोड़ी देर पहले जो शहर सन्नाटे में लीन था आवाज़ों के घेरे में घिरने लगता है। सड़कों पर मोटरों, स्कूटरों, कारों के चलने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं। ऐसा लगता है मानो सड़कें भी नींद से जाग उठी हों। सूर्योदय के समय की प्राकृतिक सुषमा का वास्तविक दृश्य तो किसी गाँव, किसी पहाड़ी क्षेत्र अथवा किसी नदी तट पर ही देखा जा सकता है। प्रातः वेला में सो, रहने वाले लोग प्रकृति की इस सुंदरता के दर्शन नहीं कर सकते। कौन उन्हें बताए कि सूर्योदय के समय सूर्य के सामने आँखें बंदकर दो-चार मिनट खड़े रहने से आँखों की ज्योति कभी क्षीण नहीं होती।

4. (*i*) किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहन छानबीन और विश्लेषण को विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

(*ii*) अभिव्यक्ति का अधिकार मनुष्य का एक मौलिक अधिकार है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से कर सकता है। निबंध विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। इसमें निबंधकार अपने विचारों को सहज रूप से (अभिव्यक्ति) अभिव्यक्त करता है। विचार अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया निबंधों के पुराने विषयों के साथ पूर्णतः घटित नहीं होती क्योंकि पुराने विषयों पर पहले से ही तैयार शुद्ध सामग्री अधिक मात्रा में उपलब्ध रहती है। इससे हमारी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित नहीं होती। इसलिए हमें निबंधों के नए विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त करने चाहिए। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्त करने से लेखक का मानसिक और आत्मिक विकास होता है। इससे लेखक की चिंतन शक्ति का विकास होता है। इससे लेखक को बौद्धिक विकास तथा अनेक विषयों की जानकारी होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के विषय बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

(*iii*) किसी सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन को फ़ीचर कहते हैं, जिसके माध्यम से सूचनाओं के साथ-साथ मनोरंजन पर भी ध्यान दिया जाता है।

(*iv*) 1. भाषा शुद्ध होनी चाहिए

2. व्याकरणिक कमियाँ नहीं होनी चाहिए।

3. सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(*v*) कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।

5. (*i*) सामान्य लेखन की अपेक्षा किसी विशेष विषय पर किए गए लेखन को विशेष लेखन कहते हैं। समाचार-पत्रों में विशेष लेखन की महत्वपूर्ण भूमिका है। अधिकांश अखबारों और पत्रिकाओं के अतिरिक्त दूरदर्शन और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग बॉस होता है और उस विशेष बॉस पर काम करने वाले पत्रकारों का समुदाय भी अलग होता है। इसी प्रकार खेल के समाचारों और फ़ीचर के लिए बॉस अलग होता है। इन बॉसों पर काम करने वाले उपसंपादक और संवाददाता संबंधित विषय या क्षेत्र में विशेषज्ञ होते हैं। वास्तव में खबरें कई प्रकार की होती हैं—राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान और किसी भी अन्य विषय से संबंधित। संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा उनकी रुचियों और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे 'बीट' कहा जाता है। एक संवाददाता यदि अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करता है, तो उसकी बीट अपराधी मानी जा सकती है। समाचार-पत्र की तरफ़ से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए उत्तरदायित्व तथा ज़वाबदेह भी होता है। इसी प्रकार यदि संवाददाता की और जानकारी खेल से संबंधित है तो उसे खेल बीट मिल सकती है और यदि उसकी आर्थिक या कारोबार जगत से जुड़ी खबरों में रुचि और जानकारी है, तो उसे आर्थिक रिपोर्टिंग का उत्तरदायित्व मिल सकता है। प्रकृति और पर्यावरण से संबंधित जानकारी रखने वाले को पर्यावरण बीट मिल सकती है। परंतु विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग न होकर एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है। इसमें उस विषय की संपूर्ण जानकारी होने के साथ-साथ उस रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।

(*ii*) विद्यार्थी स्वयं करें।

(*iii*) कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (ख)

(2) (ग)

(3) (घ)

(4) (ख)

(5) (क)

उत्तर—7. (*i*) 'पतंग' आलोक धन्वा द्वारा रचित कविता है, जिसमें कवि ने बाल-सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर एवं सजीव चित्रण किया है। उन्होंने बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तनों को सहज भाव से अभिव्यक्त किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है जो आसमान में उड़ता है, जिसे बाल-मन छूना चाहता है। बच्चे

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

उमंग में झूमकर आसमान को पार कर जाना चाहते हैं। एक ओर शरद ऋतु का चमकीला संकेत है जहाँ तितलियों की रंगीन दुनिया है। बच्चों की किलकारियों से दिशाएँ भी मृदंग के समान बजती हैं। पृथ्वी भी उनकी कोमलता को छूने हेतु स्वयं उनका स्पर्श करना चाहती है। वे हर बार नवीन पतंगों का सबसे ऊँचा उड़ाने का साहस लिए बार-बार भादों (अंधेरे) के पश्चात शरद (उजाले) की प्रतीक्षा करते हैं।

(*ii*) 'कविता के बहाने' कुँवर नारायण के 'इन दिनों' काव्य-संग्रह से ली गई है। कविता के बहाने कविता में कवि ने चिड़िया तथा फूल से लेकर बच्चे तक की यात्रा है। एक तरफ प्रकृति है तो दूसरी तरफ भविष्य की ओर कदम बढ़ाता हुआ बच्चा है। यह स्पष्ट है कि चिड़िया के उड़ान की एक सीमा है। फूल के खिलने के साथ ही उसकी परिणति निश्चित है लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी भी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं है। कविता भी शब्दों का एक खेल है जिसमें जड़-चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य साधन मात्र हैं। अत: जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होती है वहाँ सीमाओं के बंधन स्वयं ही टूट जाते हैं।

(*iii*) गरीब व्यक्ति।

उत्तर—8. (*i*) पथिक मंज़िल पर पहुँचने से पूर्व रात होने के कारण तीव्रता से चलता है। पक्षी घोंसलों में अपने बच्चों द्वारा प्रतीक्षा करने के कारण गतिशील हो जाते हैं। कवि की किसी के द्वारा प्रतीक्षा न करने के कारण उसकी गति में शिथिलता आ जाती है।

(*ii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कवि ने अपंग व्यक्ति के प्रति करुणा-भाव प्रकट किए हैं लेकिन टेलीविज़न-कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तथा अपने कारोबार के कारण उस अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैये को अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनहीनता का रवैया अपनाता है जिस कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूर भाव पनप जाते हैं।

(*iii*) कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ान भरते हुए बगुलों को देखता है। वह कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। ऐसे नयनाभिराम दृश्य ने कवि के मन को मोह लिया है। वह इस माया से स्वयं को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को बचा नहीं पाता।

उत्तर—9. (1) (ग)

(2) (ख)

(3) (घ)

(4) (घ)

(5) (ख)

उत्तर—10. (*i*) लेखिका ने भक्तिन के सेवक-धर्म की तुलना हनुमान जी से की है। यह इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार हनुमान अपने प्रभु राम की तन-मन और पूर्ण निष्ठा से सेवा किया करते थे। ठीक उसी प्रकार भक्तिन अपनी मालकिन लेखिका की सेवा करती है। वह उनके प्रति पूर्ण समर्पण भाव से सेवा भाव रखती है।

(*ii*) लेखक के अनुसार 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता से नहीं है, बल्कि दासता में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

(*iii*) (क) पहले कुश्ती या दंगल लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को विशेष समान दिया जाता था, लेकिन अब उन्हें वह समान नहीं दिया जाता, क्योंकि आज न तो कुश्ती या दंगल समाज का प्रिय खेल है और न ही भागदौड़ की इस ज़िंदगी में लोगों के पास इसे देखने या प्रोत्साहित करने का समय है। फिर प्राचीन लोक-संस्कृति भी धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। अब न तो पहले जैसे संस्कार और मानवीय संवेदनाएँ बची हैं और न ही कुश्ती को प्रोत्साहित करने वाले राजा-महाराजा। दम तोड़ती मानवीय संवेदनाओं तथा अव्यवस्था के कारण प्राचीन लोक-संस्कृति भी दम तोड़ रही है।

(ख) कुश्ती या दंगल की जगह अब आधुनिक खेलों ने ले ली है। इनमें क्रिकेट, घुड़दौड़, मोटर-रेस, बॉस्केटबॉल, फुटबॉल आदि खेल प्रसिद्ध हैं। आज के युग में क्रिकेट भारत का सबसे लोकप्रिय खेल है।

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं—

(*i*) लोगों के मन में लोक-संस्कृति को जागृत किया जाए।

(*ii*) सरकार कुश्ती को राष्ट्रीय खेलों में सम्मिलित करे।

(*iii*) मीडिया इस खेल का विश्व-स्तर पर प्रसारण करे।

(*iv*) सरकार की ओर से पहलवानों के लिए उपयुत आर्थिक योजनाएँ बनाई जाएँ।

उत्तर—11. (*i*) हाँ, हम इस बात से सहमत हैं कि बाज़ार किसी का लिंग, जाति-धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, बल्कि वह सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शक्ति को देखता है। बाज़ार एक ऐसा स्थल है जहाँ पर हर जाति, लिंग, धर्म का व्यक्ति जाता है। वहाँ किसी को भी धर्म-जाति के आधार पर नहीं पहचाना जाता बल्कि प्रत्येक निम्न, उच्च, अमीर-गरीब की पहचान वहाँ एक ग्राहक के रूप में होती है। इस दृष्टि से इस स्थल पर पहुँचकर प्रत्येक धर्म, जाति, मज़हब का मनुष्य केवल ग्राहक कहलाता है। बाज़ार की दृष्टि में यहाँ सब उसके ग्राहक होते हैं और वह ग्राहक का कभी धर्म, जाति या मज़हब देखकर व्यवहार नहीं करता बल्कि वह तो सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शक्ति देखकर ही उसके साथ व्यवहार करता है। यानी जो मनुष्य जितनी क्रय-शक्ति रखता है बाज़ार उसे उतना ही महत्व देता है, उतना ही समान देता है। इस प्रकार बाज़ार एक प्रकार से सामाजिक समता की रचना कर रहा है। जहाँ पहुँचकर प्रत्येक धर्म, जाति, मज़हब, अमीर-गरीब, निम्न-उच्च व्यक्ति केवल ग्राहक कहलाता है।

(*ii*) लड़के समूह में एकत्रित होकर नंगे शरीर उछलते-कूदते तथा अत्यधिक शोर-शराबा करते हुए गलियों में कीचड़ करते हुए घूमते थे। ये गलियों में इधर-उधर दौड़ा करते थे, इसी आधार पर लोगों ने लड़कों को मेढक-मंडली नाम दे दिया था। यह टोली अपने आपको इंदर सेना इसलिए कहकर पुकारती थी योंकि यह अनावृष्टि से छुटकारा पाने हेतु लोक-आस्था के कारण इंद्र महाराज को खुश करने के लिए ऐसा कार्य करती थी। इनका मानना था कि उनके इसी कार्य से प्रसन्न होकर इंद्र देवता वर्षा करेंगे जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहान खिल उठेंगे।

(*iii*) मनुष्य एक सौंदर्य-प्रिय प्राणी है, अत: वह आंतरिक रूप से अत्यंत कोमल है। इसी कोमलता के कारण वह सदा दूसरों से प्रेमपूर्ण व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखता है। सभी के साथ सद्भावना बनाए रखता है। लेकिन अपने हृदय की कोमलता को बचाने के लिए मनुष्य को कभी-कभी कठोरता को भी अपनाना चाहिए ताकि वह विपरीत परिस्थिति का डटकर सामना कर सके। जीवन के मार्ग में आने वाले संकटों और संघर्षों

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P.) LTD.

से जूझ सके। जैसे शिरीष अपनी कोमलता को बचाने के लिए भीषण गरमी की लू को सहन करने के लिए बाहर से कठोर स्वभाव अपनाता है तब कहीं जाकर वह भयंकर गर्मी, धूप, आँधी को सहन कर पाता है। इसी प्रकार यहाँ लेखक ने संत कबीरदास, कालिदास का भी प्रसंग दिया है जिन्हें अपने मन की कोमलता को कायम रखने के लिए समाज की विपरीत और क्रूर परिस्थितियों का सामना करने के लिए अपने व्यवहार को कठोर बनाना पड़ा था।

उत्तर—12. (*i*) यशोधर बाबू सचिवालय में सेशन ऑफ़िसर हैं। वे अपने काम के प्रति सचेत एवं समय के पाबंद हैं। काम के समय वे अपने सह कर्मचारियों के साथ गंभीर व्यवहार करते हैं जबकि छुट्टी के बाद उनके साथ दोस्तों की तरह व्यवहार करते हैं। ये सभी आदर्श एवं संस्कार उन्हें अपने आदर्श कृष्णानंद से मिले हैं जिन्हें यशोधर आदर से किशनदा कहकर पुकारते हैं। किशन के संस्कारों और आपसी व्यवहार ने यशोधर बाबू को गहरा प्रभावित किया है। वे प्रत्येक बात किशनदा के नज़रिए से देखते हैं। किशनदा पहाड़ से आए युवाओं की समस्याओं को समझते हैं। यशोधर बाबू भी अल्मोड़ा से आकर दिल्ली में किशनदा के घर रहे थे। जब उनकी आयु नौकरी के लिए पूरी नहीं हुई तब तक वे किशनदा के यहाँ रसोइया के रूप में कार्य करते थे। जब आयु पूरी हो गई तो किशनदा ने यशोधर बाबू को अपने नीचे नौकरी दिलवा दी। इसलिए यशोधर बाबू किशनदा की अपनी ज़िंदगी में अहम भूमिका मानते हैं। उन्हीं के नक्शे-कदम पर चलते हुए यशोधर बाबू ने भी किशनदा की भाँति अपना घर नहीं बनाया। वे दिल्ली (पहाड़गंज) में किराए के मकान में रहते हैं। घर बनाने के संदर्भ में किशनदा का मानना था कि ''मूर्ख लोग घर बनाते हैं जबकि सयाने उन घरों में बसते हैं।'' इसलिए किशनदा से प्रभावित होकर यशोधर बाबू भी घर नहीं बनवाते हैं। उन्हें यह बात बिल्कुल भी पसंद नहीं आती कि उनके बच्चे उनकी सालगिरह को 'सिल्वर वैडिंग' के रूप में मनाएँ। वे इस आयोजन को फिजूल खर्ची मानते हैं। उनके बच्चे यशोधर बाबू के इसी दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं। दूसरी ओर यशोधर बाबू की पत्नी अपने बेटों और आधुनिक बेटी के साथ अधिक समय व्यतीत करती है। वह यशोधर बाबू के साथ इसलिए भी सामंजस्य नहीं बिठा पाती क्योंकि उसका मानना है कि यशोधर बाबू के संस्कारों की वजह से ही वह अपने जीवन को सुखमय ढंग से व्यतीत नहीं कर सकी। जेठानियाँ और बड़े बूढ़ों के दबाव में यशोधर बाबू की पत्नी स्वयं को असहज एवं असुरक्षित महसूस करती थी। एक बार जब यशोधर बाबू अपनी बेटी को जीन्स और बिना बाजू का टॉप पहनने से मना करते हैं तो वह उनका विरोध करते हुए कहती है—''वह सिर पर पल्लू-वल्लू मैंने कर लिया बहुत तुम्हारे कहने पर समझे, मेरी बेटी वही करेगी जो दुनिया कर रही है।'' इस प्रकार कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध हैं जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित है। इसलिए यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित होती है लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं।

(*ii*) सिंधु घाटी की खुदाई से मिले अवशेषों से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि सिंधु सभ्यता एक नगर संस्कृति थी। जिस योजना के अनुसार मुअनजो-दड़ो नगर बसा हुआ था। यह योजना अपने आप में एक अनूठी योजना थी। यहाँ की सभी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी। इस नगर में प्रशासनिक इमारतें, सभा भवन, ज्ञानशाला और कोठार हैं। सड़क के दोनों ओर घर हैं, लेकिन सड़क की ओर किसी भी घर का दरवाज़ा नहीं खुलता। सभी घर सड़क की ओर पीठ करके बनाए गए हैं। यही शैली आधुनिक काल में चंडीगढ़ शहर को बसाने में इस्तेमाल की गई है। आपको किसी के घर जाने के लिए मुख्य सड़क से पहले सेक्टर के भीतर दाखिल होना पड़ता है; फिर गली में और फिर घर में प्रवेश किया जा सकता है। घर छोटे भी और बड़े भी हैं, लेकिन सभी घर कतार में खड़े हैं। अधिकतर घरों का आकार तीस गुणा तीस फ़ुट का है। कुछ घर इससे बड़े भी हो सकते हैं। ये सभी घर नियोजित एवं व्यवस्थित थे। नगर में एक बड़ा घर भी है शायद यह घर 'मुखिया' का घर रहा होगा। इस घर में दो आँगन और लगभग बीस कमरे रहे होंगे। इस नगर में उपासना केंद्र भी है और 'रंगरेज़ का कारखाना' भी। दो मंज़िला घरों की संख्या भी काफ़ी है। यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि भूमि तल के मकानों में मज़दूर आदि रहते थे और प्रथम तल पर मकान मालिक रहा करते थे। कुछ बड़े घरों में छोटे कमरे भी हैं। इसका अर्थ यह हो सकता है कि शहर की जनसंज्या काफ़ी रही होगी। बड़े घरों के आँगन में चौड़ी सीढ़ियाँ हैं। कुछ घर दो मंज़िला तो दिखते हैं, परंतु उन पर सीढ़ियों के निशान नहीं हैं शायद ऊपर चढ़ने के लिए लकड़ी की सीढ़ियों का प्रयोग किया जाता होगा जो कालांतर में नष्ट हो गई होंगी।' छोटे घरों की बस्ती में छोटी सँकरी सीढ़ियाँ हैं। उनके पायदान ज़रा ऊँचे हैं। ऐसा शायद जगह की कमी के कारण किया गया होगा। इस प्रकार सिंधु सयता एक नगर संस्कृति पर आधारित सयता थी।

(*iii*) 'मुअनजो-दड़ो' और 'हड़प्पा' भारत के वे प्राचीन शहर हैं जो दुनिया के सबसे पुराने शहरों में प्रमुख स्थान रखते हैं। ये दोनों सिंधु घाटी के परिपव दौर केशहर हैं। मुअनजो-दड़ो ताम्र युग के शहरों में सबसे बड़ा है। इसकी खुदाई से बड़ी संज्या में इमारतें, सड़कें, धातु-पत्थर की मूर्तियाँ, मुहरें, खिलौने, चाक पर बने चित्रित भांडे, साज़ो-सामान आदि मिलते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–8

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं
विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (घ) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

(2) (ख) पाने के लिए भरसक प्रयास किया हो

(3) (ख) संध्यावेला

(4) असफलता का कारण ढूँढ़कर पुन: आगे बढ़ने का प्रयास करता है।

(5) जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला साहस की जिन्दगी जीता है।

(6) मेहनत करने वाले व्यक्तियों को सुख का स्वाद मिलता है।

(7) विवश्ता और अभाव में जीने वाले लोग।

उत्तर—2. (1) (ग) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

(2) दृढ़ होकर

(3) अनजान स्थान पर रहना

(4) ब्राह्मण रूप में।

(5) विपत्ति से कायर और डरपोक व्यक्ति को घबराहट होती है।

(6) पांडवों के अज्ञातवास से हमें प्यार, सम्मान, एकजुटता, सकारात्मकता और सबके प्रति विनम्र रहने की शिक्षा मिलती है।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) भारतीय पर्व-परंपरा में होली एक रंगोत्सव है। यह मुक्त हास-परिहास का पर्व है। इस पर्व को नृत्य, हँसी-ठिठोली और मौज-मस्ती की त्रिवेणी कहना उपयुक्त होगा। सुप्त निराशावादी विचार वाले व्यक्ति रंग महोत्सव में परस्पर मिलन हेतु आतुर दिखाई देते हैं। मनुष्यों में ईर्ष्या-द्वेज़ जैसे निकृष्ट विचार निकलकर प्रेम-मिलन के विचारों का सूत्रपात होता है। होली वसंत ऋतु का यौवनकाल है। ग्रीष्म के आगमन की सूचना मिलती है। वनश्री के साथ-साथ खेतों की श्री एवं हमारे तन-मन की श्री भी फाल्गुन माह के ढलते-ढलते पूर्ण आभा में दमक उठती है। यही कारण है कि होली पर्व को उमंग, हर्ज़ का पर्व कहा जाता है। यह पखवाड़ा पर्व-त्योहारों से भरा पड़ा है। महीने की शुरुआत ही पर्व त्योहारों को लेकर होती है। पर्व त्योहार को लेकर जहाँ बाज़ारों में रौनक बढ़ी हुई है, पूरी चहलकदमी है। वहीं प्रशासन के लिए शांति एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में यह पर्व संपन्न कराना किसी चुनौती से कम नहीं है। बाज़ार रंगीन टोपियों, पिचकारियों, गुलाल, रंग और परिधानों से सज्जित हैं। बाज़ार में लोग पैकेटबंद गुलाल को खरीदकर त्योहार के लिए रख लेते हैं। पकवान बनाने के लिए लोग खाद्य-सामग्री खरीद रहे हैं और उल्लास प्रकट कर रहे हैं।

(*ii*) नए तथा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को सरल बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान करना चाहिए—

(i) किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रुककर एक रूपरेखा प्रदान करें। उसके पश्चात ही शानदार ढंग से अपने विषय की शुरुआत करें।

(ii) विषय को आरंभ करने के साथ ही उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाए, यह भी मस्तिष्क में पहले से होना आवश्यक है।

(iii) जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है।

(iv) सुसंबद्धता के साथ-साथ विषय से जुड़ी बातों का सुसंगत होना भी ज़रूरी होता है। अत: किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ-साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक होता है।

(v) नए तथा अप्रत्याशित विषयों के लेखन में आत्मपरक 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है। यद्यपि निबंधों और अन्य आलेखों में 'मैं' शैली का प्रयोग लगभग वर्जित होता है किंतु नए विषय पर लेखन में 'मैं' शैली के प्रयोग से लेखक के विचारों और उसके व्यतित्व की झलक प्राप्त होती है।

(*iii*) लोगों का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को नेता कहते हैं। आदर्श नेता एक मार्गदर्शक के समान है जो दूसरों को सुमार्ग की ओर ले जाता है। आदर्श नागरिक ही आदर्श नेता बन सकता है। आज के नेताओं में सद्गुणों का अभाव है। वे जनता के शासक बनकर रहना चाहते हैं, सेवक नहीं। उनमें अहं एवं स्पर्धा का भाव भी पाया जाता है। वर्तमान भारत की राजनीति इस तथ्य की परिचायक है कि नेता बनने की होड़ ने आपसी राग-द्वेष को ही अधिक बढ़ावा दिया है। इसीलिए यह कहा गया है—नेता नहीं, नागरिक चाहिए। नागरिक को अपने कर्तव्य एवं अधिकारों के बीच समन्वय रखना पड़ता है। यदि नागरिक अपने समाज के प्रति अपने कर्तव्य का समुचित पालन करता है तो राष्ट्र किसी संकट का सामना कर ही नहीं सकता। नेता बनने की तीव्र लालसा ने नागरिकता के भाव को कम

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

कर दिया है। नागरिक के पास राजनीतिक एवं सामाजिक दोनों अधिकार रहते हैं। अधिकार की सीमा होती है। हमारे ही नहीं दूसरे नागरिकों के भी अधिकार होते हैं। अत: नागरिक को अपने कर्तव्यों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। नेता अधिकारों की बात ज़्यादा जानता है, लेकिन कर्तव्यों के प्रति उपेक्षा भाव रखता है। उत्तम नागरिक ही उत्तम नेता होता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने आपको एक अच्छा नागरिक बनाए। नागरिक में नेतृत्व का भाव अपने आप आ जाता है। नेता का शाब्दिक अर्थ है जो दूसरों को आगे ले जाए अर्थात अपने साथियों के प्रति सहायता एवं सहानुभूति का भाव अपनाए। अत: देश को नेता नहीं नागरिक चाहिए।

4. (*i*) हम अपनी अवश्यकता के अनुसार जनसंचार चुनते हैं तथा अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने में इसका इस्तेमाल करते हैं अपनी स्थिति के अनुसार जनसंचार माध्यम चुनना और उसका लाभ प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है।

(*ii*) वह सुव्यवस्थित, सृजनात्मक एवं उभयनिष्ठ लेखन जिसके माध्यम से सूचनाओं के साथ-साथ मनोरंजन पर भी ध्यान दिया जाता है, उसे फ़ीचर कहते हैं।

(*iii*) किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहन छानबीन और विश्लेषण को विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

(*iv*) पत्र-पत्रिकाओं और अखबारों में प्राय: विशेष रिपोर्टें दिखाई देती हैं जो गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या का परिणाम होती हैं। इन्हें

किसी विशेष समस्या, मुद्दे या घटना की छानबीन के बाद लिखा जाता है। यह लेखन-कार्य तथ्यों पर पूरी तरह से आधारित होता है।

खोजी रिपोर्ट, इन-डेह्रश्वथ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट में विशेष तथ्यों को सामने लाया जाता है, जो पहले उपल8ध

नहीं थे। खोजी रिपोर्ट में प्राय:-भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर किया जाता है। इन-डेह्रश्वथ रिपोर्ट में किसी घटना,

समस्या या मुद्दे को सामने लाया जाता है। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या से जुड़ी तथ्यात्मक व्याख्या की जाती है और

विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना का बारीक और विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाता है। किसी भी विशेष रिपोर्ट के लेखन में निम्नलिखित

बातों की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है—

(क) विशेष रिपोर्ट का लेखन-कार्य उलटा पिरामिड-शैली में किया जाता है।

(ख) कभी-कभी रिपोर्ट को फ़ीचर-शैली में भी लिखा जाता है।

(ग) बहुत विस्तृत रिपोर्ट में उलटा पिरामिड और फ़ीचर शैली को कभी-कभी आपस में मिला लिया जाता है।

(घ) कई बार लंबी रिपोर्ट को शृंखलाबद्ध करके कई दिन छापा जाता है।

(ङ) रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होती है।

(*v*) (i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

(ii) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

(iii) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

(iv) ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

(v) कथावस्तु के अनुरूप मंच-सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

(vi) पात्रों के द्वद्वंव को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

(vii) संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(viii) कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

5. (*i*) समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्व है। पत्रकार साक्षात्कार के माध्यम से ही समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट तथा दूसरे कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्ची सामग्री एकत्रित करते हैं। पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बोलचाल में यह अंतर होता है कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यति से तथ्य, उसकी राय तथा भावनाएँ जानने के लिए प्रश्न पूछता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए केवल ज्ञान का होना ज़रूरी नहीं, ज्ञान के साथ-साथ संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए। एक अच्छे और कुशल साक्षात्कार के लिए आवश्यक है कि जिस विषय और जिस व्यति के साथ साक्षात्कार करना हो उसके बारे में पर्याह्रश्वत जानकारी हो। साक्षात्कार से या निकालना है इसके बारे में स्पष्ट रहना आवश्यक है। प्रश्न केवल वही पूछे जाने चाहिए जो समाचार-पत्र के एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं। साक्षात्कार की अगर रिकाWर्डिंग करना संभव हो तो अच्छा है, नहीं तो साक्षात्कार के समय नोट्स लेते रह सकते हैं। साक्षात्कार को लिखते समय दो तरीकों में से कोई भी एक तरीका सुविधानुसार अपनाया जा सकता है। साक्षात्कार को प्रश्न और फिर उत्तर के रूप में लिखा जा सकता है या फिर उसे एक आलेख की तरह भी लिखा जा सकता है।

(*ii*) नाट्य-रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है—

(a) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।

(b) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।

(c) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।

(d) संगीत ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।

(e) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

(*iii*) नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार हैं—

(i) सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अयास नहीं करता।

(ii) लेखक में मौलिक प्रयास तथा अयास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।

(iii) लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।

(iv) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।

(v) लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है।

(vi) लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (ख)

(2) (ख)

(3) (क)

(4) (घ)

(5) (ग)

उत्तर—7. (*i*) शीतल वाणी में आग—के होने का अभिप्राय यह है कि कवि अपनी वाणी की शीतलता में वियोग की आग लिए जीवन जी रहा है। यहाँ आग से अभिप्राय कवि की आंतरिक पीड़ा से है। कवि प्रिया से वियोग होने पर उस विरह-वेदना को अपने हृदय में दबाए फिर रहा है। अत: जहाँ उनकी संवेदनाओं में शीतलता का भाव है तो वहीं विराग और क्रोध का भाव भी निहित है। यही वियोग उसके हृदय को निरंतर जलाता रहता है जिससे उनके हृदय में आग पैदा होती है।

(*ii*) 'परदे पर वत की कीमत है' कहकर कवि ने बताया है कि दूरदर्शन वाले यह चाहते हैं कि अपंग व्यति को दुखी देखकर दर्शकगण भी रोने लगे। इस तरह के दृश्य को वे अधिक समय तक दिखाना नहीं चाहते योंकि उन्हें वत की कीमत का अहसास है। शायद इसीलिए वे सभी कार्यक्रम समयानुसार प्रदर्शित करते हैं तथा समय के अनुरूप अपने कार्यक्रमों को बाँट लेते हैं।

(*iii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता अपनी व्यंजना में ऐसे व्यतियों की ओर इशारा करती है, जो अपने दुख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहते हैं। उनकी स्थिति महामारी की कामना करने वाले चिकित्सक के समान होती है।

उत्तर—8. (*i*) आत्म परिचय कविता में परस्पर विपरीत कथनों से कवि यह कहना चाहता है कि मनुज्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से मनुज्य का नाता खट्टा-मीठा होता है। उसके जीवन में दुख-सुख दोनों ही आते हैं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण और ष्टासन-प्रष्टासन से मनुज्य को अनेक कज़्टों के रूप में जीवन-भार प्रदान करती है। चाहकर भी मनुज्य इस जीवन-भार से अलग नहीं हो सकता। इस जीवन-भार को उसे आजीवन ढोना ही पड़ता है। लेकिन दूसरी ओर कवि का यह कहना है कि जीवन इस जग को देखकर नहीं जीता क्योंकि वह इसे हृदयहीन और स्वार्थी मानता है। वह तो केवल संसार के वैभव से अलग अपनी मस्ती में मस्त होकर जीवन जीना चाहता है। इसलिए वह कहता है कि मैं कभी भी जग का ध्यान नहीं करता।

(*ii*) 'कविता के बहाने' कुँवर नारायण के 'इन दिनों' काव्य-संग्रह से ली गई है। कविता के बहाने कविता में कवि ने चिड़िया तथा फूल से लेकर बच्चे तक की यात्रा है। एक तरफ प्रकृति है तो दूसरी तरफ भविष्य की ओर कदम बढ़ाता हुआ बच्चा है। यह स्पष्ट है कि चिड़िया के उड़ान की एक सीमा है। फूल के खिलने के साथ ही उसकी परिणति निश्चित है लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी भी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं है। कविता भी शज़्दों का एक खेल है जिसमें जड़-चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य साधन मात्र हैं। अत: जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होती है वहाँ सीमाओं के बंधन स्वयं ही टूट जाते हैं।

(*iii*) कवि प्रात:कालीन आसमान के रंगों को देखते हुए धरती के हलचल भरे जीवन से जुड़ा हुआ है। वह किसी गाँव की सुबह को अपनी मन की आँखों से देख रहा है जहाँ सूर्य उदित होने से पहले की सुबह का अँधेरा काली सिल के समान है और कुछ समय बाद वही राख से लीपे हुए चौके की तरह है। वही स्लेट के काले रंग-बिरंगे चॉक के समान है। कवि के मन में भविष्य का वह छिपा हुआ उजाला जो रात के अँधेरे को चीरकर उजाले की ओर आगे बढ़ने का अहसास-सा करता है।

उत्तर—9. (1) (ग)

(2) (ख)

(3) (घ)

(4) (घ)

(5) (ख)

उत्तर—10. (*i*) पहलवान की ढोलक फणीश्वर नाथ 'रेणु' द्वारा रचित एक प्रमुख आंचलिक कहानी है। इसके माध्यम से लेखक ने नि:स्वार्थ भाव से देश-सेवा का संदेश दिया है। लुट्टन सिंह की ढोलक की आवाज़ पूरे गाँववालों में धैर्य, साहस और स्फूर्ति थी। रात्रि की विभीषिका में तथा सन्नाटे को ललकार चुनौती देती थी। जब पूरा गाँव महामारी के कारण मलेरिया और है" जिसे त्रस्त होकर अधमरा, निर्बल और निस्तेज हो गया था तब इस भयंकर वातावरण में ढोलक की आवाज़ गाँववालों को संजीवनी प्रदान किया करती थी। उपचाराधीन और पथ्यविहीन लोगों में संजीवनी शति भरती थी। बच्चे, जवान और बूढ़ों की आँखों के आगे दंगल का दृश्य पैदा कर देती थी। ढोल की आवाज़ सुनकर शतिहीन शिराओं में बिजली-सी दौड़ पड़ती थी। मरते हुए प्राणियों को भी आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी तथा लोग मृत्यु से भी नहीं डरते थे। इसे सुनकर लोगों के मन में जीने की नई उमंग जागृत हो जाती थी।

(*ii*) वर्तमान समाज में चारों ओर मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खराबा का बोलबाला है। मानव सयता घोर संकट से परिव्याप्त है। सत्य, अहिंसा आदि आदर्श कहीं भी दिखाई नहीं देते। जन-जन आतंक की छाया में जी रहा है। वर्तमान सयता में मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में अविलंब हिंसा, मारकाट, लूट-पाट पर उतावला हो उठता है। वह सत्य-अहिंसा की अपेक्षा असत्य, हिंसा, मार-काट का पालन करता है। निजी स्वार्थों की पूर्ति करने में उसे किसी का भी अहित दिखाई नहीं देता। लेखक ने ऐसे संकट के समय सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को याद किया है। वे दोनों बाहर से कठोर और दृढ़ थे लेकिन दोनों ही भीतर से कोमल थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में वे अविचल थे। उन दोनों को हानि-लाभ से कोई मतलब ही नहीं था।

(*iii*) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में पानी की बरबादी होने को लेखक ने सही ठहराया है। यही सही है कि इस प्रकार की लोक-मान्यताओं से देश की अमूल्य संपत्ति पानी की बरबादी हो रही है। जो उचित नहीं है। यह देश की अमूल्य धरोहर है जिसे बचाकर रखना चाहिए। दूसरा पानी की बरबादी न होने को जीजी सही मानती हैं जो उचित नहीं है क्योंकि ऐसी आस्था से केवल भ्रम, अंध -विश्वास ही पनप सकता है। धर्म के प्रति आस्था ठीक है किंतु उस आस्था के नाम पर अमूल्य वस्तु का बरबाद करना औचित्यपूर्ण नहीं।

उत्तर—11. (*i*) गांधी जी के व्यक्तित्व में कोमल एवं कठोर दोनों गुणों का समन्वय था। वे जहाँ अपने देशवासियों के प्रति कोमल थे वहीं अंग्रेज़ों और सामाजिक कुरीतियों के प्रति कठोर हृदय थे।

(*ii*) कवि एक अनासक्त योगी और विदग्ध प्रेमी की भाँति होता है। वह युगीन समाज में जीवन यापन करते हुए समाज के आकर्षण और ऐश्वर्य से आसत नहीं होता। उसे सुख, आनंद, भोग-विलास अच्छा नहीं लगता। वह तो इन सबके आकर्षण से दूर रहकर जीवन जीता है। वह समाज के कोलाहल, संघर्ष, उठापटक और प्रतिकूल परिस्थितियों से निरंतर जूझता रहता है।

© HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

(*iii*) लड़के समूह में एकत्रित होकर नंगे शरीर उछलते-कूदते तथा अत्यधिक शोर-शराबा करते हुए गलियों में कीचड़ करते हुए घूमते थे। ये गलियों में इधर-उधर दौड़ा करते थे, इसी आधार पर लोगों ने लड़कों को मेढक-मंडली नाम दे दिया था। यह टोली अपने आपको इंदर सेना इसलिए कहकर पुकारती थी योंकि यह अनावृष्टि से छुटकारा पाने हेतु लोक-आस्था के कारण इंद्र महाराज को खुश करने के लिए ऐसा कार्य करती थी। इनका मानना था कि उनके इसी कार्य से प्रसन्न होकर इंद्र देवता वर्षा करेंगे जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहान खिल उठेंगे।

उत्तर—12. (*i*) किशनदा यशोधर बाबू के आदर्श थे। उनकी संपूर्ण शैली किशनदा से अधिक प्रभावित है। वे किशनदा से इतने अधिक प्रभावित हैं कि अपने परिवार से भी सामंजस्य नहीं बिठा पा रहे हैं। घर में छोटी-छोटी बातों को लेकर तनाव की स्थिति उत्पन्न होना कहीं-न-कहीं विचारों में सामंजस्य की कमी को दर्शाता है। कहानी के अंत में यह तथ्य भी उजागर होता है कि यशोधर बाबू संस्कारों और मर्यादाओं से जुड़े हैं। उनका मन भारतीय परिवेश के अनुकूल सोचता है परंतु यह भी सत्य है कि वे कहीं-न-कहीं इस बात से भी खुश हैं कि उनके बच्चे उनसे अधिक सुलझे हुए हैं। जहाँ तक मेरे जीवन को दिशा देने में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उसके लिए तीन बातें बड़ी महत्वपूर्ण हैं—माता-पिता के द्वारा दिए गए संस्कार, गुरुजनों द्वारा दी गई शिक्षाएँ और आदर्श तथा साहित्य के साथ जुड़ाव व साहित्यिक वातावरण में जीवन की लालसा। सर्वप्रथम माता-पिता उसकी पाठशाला के अध्यापक होते हैं। जैसे शिक्षा और संस्कार माँ-बाप देते हैं वैसी व्यति की जीवन-शैली हो जाती है। भावुकता, संवेदना और पारिवारिक भाईचारा माँ और पिता के साथ जीने वाले पारिवारिक सदस्यों से जुड़कर पैदा होता है। माता-पिता के सानिध्य में जीकर मैं अधिक संवेदनशील एवं भावुक बना हूँ। गुरुजनों के आदर्श और शिक्षाएँ व्यति को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। चरित्रवान अध्यापक आपके चरित्र को भी प्रभावित करता है। अध्यापक के सुच्चरित्र और परिश्रमी होने से विद्यार्थी भी चरित्रवान एवं परिश्रम करने लगता है। देश-प्रेम, विश्व बंधुत्व और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को याद रखना शायद मैंने गुरुजनों की शिक्षाओं और आदर्शों से जाना है। मैं साहित्य का विद्यार्थी हूँ इसलिए समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझता हूँ। साहित्य और समाज में एक सुमेल होता है। साहित्य समाज से प्रभावित भी होता है और समाज को प्रभावित करता है। इसलिए मेरी साहित्यिक अभिरुचियाँ मुझे समाज के प्रति जागरूक एवं सचेत बनाती हैं।

(*ii*) लेखक 'ओम थानवी' ने अपनी यात्रा के समय जब सिंधु घाटी की सयता से जुड़े दो महानगरों मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा के घरों, गलियों, सड़कों और खुदाई में वास्तुशिल्प से जुड़े सामान को देखा तो यह निष्कर्ष निकाला कि अगर सिंधु घाटी की सयता के साथ विश्व की अन्य सयताओं की तुलना की जाए तो सिंधु घाटी की सयता साधन संपन्न थी उसमें कृत्रिमता एवं आडंबर नहीं था। इस निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं—

जब मुअनजो-दड़ो स्थित एक छोटा-सा संग्रहालय देखने गए तो वहाँ उन्होंने एक अलग बात अनुभव की कि इस संग्रहालय में औज़ार तो हैं परंतु हथियार कोई नहीं है। अगर सिंधु से लेकर हरियाणा तक खुदाई में मिले अवशेषों पर गौर किया जाए तो हथियार कहीं भी नहीं हैं। जिस प्रकार प्रत्येक राजा के पास हथियारों की एक बड़ी खेप होती है परंतु यहाँ हथियार नाम की चीज़ नहीं है। पुरातात्विक विद्वानों के लिए यह बड़ा प्रश्न है कि सिंधु सयता में शासन और सामाजिक प्रबंध के तौर-तरीके या रहे होंगे? यहाँ की सयता में अनुशासन तो है परंतु किसी सत्ता के बल के द्वारा नहीं है। यह अनुशासन वहाँ की नगर-योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ़-सफ़ाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता में देखी जा सकती है। दूसरी सयताओं में प्रशासन राजतंत्र और धर्मतंत्र द्वारा संचालित है। वहाँ बड़े-बड़े सुंदर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मंदिर मिले हैं। राजाओं और धर्माचार्यों की समाधियाँ भी दूसरी सयताओं में भरपूर मात्रा में मौजूद हैं। सिंधु घाटी सयता की खुदाई में छोटी-छोटी नावें मिली हैं जबकि मिस्र की सयता में बड़ी नावों का प्रचलन था। सांस्कृतिक धरातल पर यह तथ्य सामने आता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता दूसरी सयताओं से अलग एवं स्वाभाविक, साधारण जीवन-शैली पर आधारित थी। सिंधु सयता के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं आडंबर दिखाई नहीं पड़ता जबकि अन्य सयताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते अनेक प्रमाण मौजूद हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिंधु सयता संपन्न थी परंतु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। इसलिए इसे 'लो प्रोफ़ाइल सयता' भी कहा जाता है।

(*iii*) यशोधर बाबू एक मर्यादित एवं संस्कार प्रिय व्यक्ति हैं, इसलिए जब आधुनिक परिवेश में ढले लोग उनसे आधुनिकता के साथ व्यवहार करते हैं या आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यवहार करते हैं तो वे 'समहाउ इंप्रापर' कहकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं। यह वाक्य उनका तकिया कलाम बन गया है। यशोधर बाबू जिस कार्यालय में सेशन ऑफिसर हैं उसी में एक नौजवान, जिसे सहकर्मी चड्ढा कहकर पुकारते हैं, वह चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले -फैशनेबल जूते पहने हुए है। इसकी यही आधुनिक वेशभूषा यशोधर बाबू को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होती है। नई पीढ़ी के नए लोग जो आधुनिकता के रंग में रंगे हुए हैं, यशोधर बाबू को बिलकुल भी ठीक नहीं लगते। इन्हें ही देखकर वे 'समहाउ इंप्रापर' जुमले का प्रयोग करते हैं। उनके व्यक्तित्व में यह जुमला पूरी तरह फिट हो गया है। वे यदा-कदा इस वाक्य को ज़रूर बोलते हैं। यशोधर बाबू अपने पारिवारिक जीवन में अपने बीवी-बच्चों के साथ ठीक से तालमेल नहीं बैठा पा रहे हैं योंकि उनके दृष्टिकोण में आधुनिकता हमारे संस्कारों और मर्यादाओं को समाह्श्वत कर देती है। उनके बेटे और बेटियाँ अपने जीवन में स्वतंत्र हैं। उनकी बेटी जीन्स और बिना बाजुओं वाला टॉप पहनती है। यशोधर बाबू उसके लिए अनेक वर ढूँढ़ चुके हैं परंतु वह उन सबको अस्वीकार कर चुकी है और पिता को यह धमकी देती है अगर आपने मेरे रिश्ते की बात की तो वह मेडिकल की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली जाएगी। यशोधर बाबू अपने बच्चों की तरकी से खुश तो हैं परंतु उन्हें यह बात 'समहाउ इंप्रापर' नहीं लगती कि यह खुशहाली किस काम की जो अपनों में परायापन पैदा कर देती है! कहानी में यशोधर बाबू का अपने बीवी-बच्चों एवं नई पीढ़ी की सोच के साथ सामंजस्य न बिठा पाना ही मुख्य कथ्य है। संपूर्ण कथ्य में यशोधर बाबू का व्यक्तित्व नई पीढ़ी की नई सोच का विरोधी है। इस प्रकार यशोधर बाबू का यह तकिया कलाम 'समहाउ इंप्रापर' उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य को और अधिक प्रभावशाली बना देता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–9

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं
विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (ख)अपने विवेक में दिन-प्रतिदिन बढ़ोतरी करने
(2) (ग) निरंतर अपनी क्षमताओं का विकास करना
(3) (ख) कथन (I) सही और कथन (II) उसका सही परिणाम है।
(4) शक्ति संचयन का एक रूप है
(5) ज्ञान से शक्ति संचित होती है।
(6) विषम परिस्थितियों के रक्षा करती है
(7) ज्ञान कभी खर्च या समाप्त नहीं होता।

उत्तर—2. (1) (ख) समर्पण की भावना
(2) सभी सही हैं।
(3) (क) शुभ्र मानस से छलक आए तरल ये ज्वाल मोती
(4) सरस्वती, लाभकारी
(5) त्याग की भावना से
(6) स्वावलंबी व्यक्ति कभी भी किसी से कुछ नहीं मांगता।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) विद्यार्थी स्वयं करें।

(*ii*) भारतीय पर्व-परंपरा में होली एक रंगोत्सव है। यह मुक्त हास-परिहास का पर्व है। इस पर्व को नृत्य, हँसी-ठिठोली और मौज-मस्ती की त्रिवेणी कहना उपयुक्त होगा। सुप्त निराशावादी विचार वाले व्यक्ति रंग महोत्सव में परस्पर मिलन हेतु आतुर दिखाई देते हैं। मनुष्यों में ईर्ष्या-द्वेज़ जैसे निकृष्ट विचार निकलकर प्रेम-मिलन के विचारों का सूत्रपात होता है। होली वसंत ऋतु का यौवनकाल है। ग्रीष्म के आगमन की सूचना मिलती है। वनश्री के साथ-साथ खेतों की श्री एवं हमारे तन-मन की श्री भी फाल्गुन माह के ढलते-ढलते पूर्ण आभा में दमक उठती है। यही कारण है कि होली पर्व को उमंग, हर्ज़ का पर्व कहा जाता है। यह पखवाड़ा पर्व-त्योहारों से भरा पड़ा है। महीने की शुरुआत ही पर्व त्योहारों को लेकर होती है। पर्व त्योहार को लेकर जहाँ बाज़ारों में रौनक बढ़ी हुई है, पूरी चहलकदमी है। वहीं प्रशासन के लिए शांति एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में यह पर्व संपन्न कराना किसी चुनौती से कम नहीं है। बाज़ार रंगीन टोपियों, पिचकारियों, गुलाल, रंग और परिधानों से सज्जित हैं। बाज़ार में लोग पैकेटबंद गुलाल को खरीदकर त्योहार के लिए रख लेते हैं। पकवान बनाने के लिए लोग खाद्य-सामग्री खरीद रहे हैं और उल्लास प्रकट कर रहे हैं।

(*iii*) वन जीवन का प्रतीक है। वन है तो जीवन है। वन नहीं तो जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वनों से हमें अनेक बहुमूल्य एवं जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। वनों से हमें ऑक्सीजन प्राप्त होती है। यही वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। यदि वन नहीं रहेंगे तो हमारा जीवन भी नष्ट हो जाएगा। वनों के न रहने से जीवन का क्रम भी डगमगा जाएगा। वनस्पतियाँ नष्ट हो जाएँगी। वर्ज़ा का संतुलन बिगड़ जाएगा। ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने से भयंकर परिस्थितियाँ बन जाएँगी। नदियाँ अपने स्थान पर नहीं रहेंगी। वातावरण का संतुलन असामान्य हो जाएगा। वातावरण संतुलन बिगड़ने से जीवन का भी संतुलन बिगड़ जाएगा। यदि वातावरण ही जीवनोनुकूल न होगा तो जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वनों पर हमारा जीवन निर्भर है। यदि वन रहेंगे तो हम रहेंगे। वन नहीं रहेंगे तो हम भी नहीं रहेंगे।

4. (*i*) समाचार-पत्र या अन्य समाचार माध्यमों द्वारा अपने संवाददाता को किसी क्षेत्र या विषय यानी बीट की दैनिक रिपोर्टिंग की ज़िम्मेदारी दी जाती है। यह एक तरह के रिपोर्टर का कार्यक्षेत्र निश्चित करना है।

(*ii*) कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।

(*iii*) अवकाश के दिन की हर किसी को प्रतीक्षा होती है। विशेषकर विद्यार्थियों को तो इस दिन की प्रतीक्षा बड़ी बेसबसी से होती है। उस दिन न तो जल्दी उठने की चिंता होती है, न स्कूल जाने की। स्कूल में भी छुट्टी की घंटी बजते ही विद्यार्थी कितनी प्रसन्नता से कक्षाओं से बाहर आ जाते हैं। अध्यापक महोदय के भाषण का आधा वाय ही उनके मुँह में रह जाता है और विद्यार्थी कक्षा छोड़कर बाहर की ओर भाग जाते हैं। जब यह पता चलता है कि आज दिनभर की छुट्टी है तो विद्यार्थियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वे उस दिन खूब जी भरकर खेलते हैं, घूमते हैं। कोई सारा दिन क्रिकेट के मैदान में बिताता है तो कोई पतंगबाज़ी में सारा

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

दिन बिता देते हैं। सुबह के घर से निकले तो शाम को ही घर लौटते हैं। कोई कुछ कहे तो उत्तर मिलता कि आज तो छुट्टी है। लड़कियों के लिए छुट्टी का दिन घरेलू काम-काज का दिन होता है। छुट्टी के दिन मुझे सुबह-सवेरे उठकर अपनी माता जी के साथ कपड़े धोने में सहायता करनी पड़ती है। मेरी माता जी एक स्कूल में पढ़ाती हैं अत: उनके पास कपड़े धोने के लिए केवल छुट्टी का दिन ही उपयुत होता है। कपड़े धोने के बाद मुझे अपने बाल धोने होते हैं, बाल धोकर स्नान करके फिर रसोई में माता जी का हाथ बँटाना पड़ता है। इस दिन ही हमारे घर में विशेष व्यंजन पकते हैं। दूसरे दिनों में तो सुबह-सवेरे सबको भागम-भाग लगी होती है। किसी को स्कूल जाना होता है तो किसी को दफ़्तर। दोपहर के भोजन के पश्चात थोड़ा आराम करते हैं। फिर माता जी मुझे लेकर बैठ जाती हैं। कुछ सिलाई, बुनाई या कढ़ाई की शिक्षा देती हैं। शाम होते ही शाम की चाय का समय हो जाता है। अवकाश के दिन शाम की चाय में कभी समोसे, कभी पकौड़े बनाए जाते हैं। चाय पीने के बाद फिर रात के खाने की चिंता होने लगती है और इस तरह अवकाश का दिन अवकाश का नहीं बल्कि अधिक काम का दिन होता है।

(*iv*) (*a*) मंत्रालय के सूत्र

(*b*) प्रेस कॉफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ

(*c*) साक्षात्कार

(*d*) सर्वे

(*e*) जाँच समितियों की रिपोर्ट

(*f*) क्षेत्र विशेष में सक्रिय संस्थाएँ और व्यति

(*g*) संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यति

(*h*) इंटरनेट और दूसरे संचार के माध्यम

(*i*) स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

(*v*) (a) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

(b) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

(c) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

(d) ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

(e) कथावस्तु के अनुरूप मंच-सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

(f) पात्रों के द्वद्वं को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

(g) संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(h) कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

5. (*i*) टेलीविज़न जनसंचार माध्यमों में देखने और सुनने का माध्यम है। टेलीविज़न के लिए खबर या स्क्रिप्ट लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि शब्द परदे पर दिखाई देने वाले दृश्य के अनुकूल हों। टेलीविज़न लेखन प्रिंट और रेडियो माध्यम के लिए लेखन से काफ़ी भिन्न है। इसके द्वारा कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक समाचार बताया जाता है।

दूरदर्शन के लिए समाचार दृश्यों के आधार पर लिखे जाते हैं। कैमरे से लिए गए शॉट्स को आधार बनाकर समाचार तैयार किए जाते हैं। दूरदर्शन पर समाचार दो तरह से पेश किए जाते हैं। इसका प्रारंभिक हिस्सा, जिसमें मुख्य समाचार होते हैं, रीडर या एंकर दृश्यों के बिना पढ़ता है। दूसरे हिस्से में परदे पर एंकर के स्थान पर समाचार से संबंधित दृश्य प्रस्तुत किए जाते हैं। अत: दूरदर्शन पर समाचार दो हिस्सों में विभाजित होते हैं। समाचार के साथ-साथ दृश्य प्रस्तुत होने के कारण दूरदर्शन (टेलीविज़न) का जनसंचार माध्यमों में महत्वपूर्ण स्थान है।

(*ii*) कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।

(*iii*) प्राचीन काल में मौखिक कहानी की लोकप्रियता के कई कारण थे, जो इस प्रकार हैं—

(i) प्राचीन काल में संचार के साधनों की कमी थी] इसलिए मौखिक कहानी ही संचार का सबसे बड़ा माध्यम थी।

(ii) प्राचीन काल में मौखिक कहानी धर्म प्रचारकों और संतों के सिद्धांतों और विचारों को लोगों तक पहुँचाने का माध्यम थी।

(iii) मौखिक कहानी ही समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का साधन थी।

(iv) प्राचीन काल में मौखिक कहानी ही मनोरंजन का प्रमुख साधन थी।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (ख)

(2) (ग)

(3) (घ)

(4) (घ)

(5) (ख)

उत्तर—7. (*i*) यह कविता प्राकृतिक सौंदर्य से ओत-प्रोत है। सबसे तेज़ बौछारें तथा भादों के जाने के बाद सवेरा हुआ जो अत्यंत लालिमा युत और सुंदरता से परिपूर्ण था। वह सवेरा खरगोश की आँखों के समान लाल रंग का था। अर्थात शरद अनेक बौछारों और झाड़ियों को चीरता हुआ आया। कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए कहा है कि शरद अपनी चमकीली साइकिल पर सवार होकर घंटी बजाता हुआ आया। उसने चमकीले संकेतों के द्वारा पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूह को अपने पास बुलाया। उसने आकाश को इतना मुलायम और सुंदर बना दिया जिसमें पतंग उड़ सके। साथ ही संसार का पहला पतला कागज़, बाँस की कमानी और रंग-बिरंगी वस्तु उड़ सके। जब बच्चे रंग-बिरंगी पतंग आकाश में

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

उड़ाने लगे तो चारों ओर सीटियों और किलकारियों की आवाज़ गूँज उठी तथा तितलियों ने मधुर गुंजार शुरू कर दिया।

(*ii*) कवि का मानना है कि जब अपनी बात को सहज और स्पष्ट रूप से न कहकर तोड़-मरोड़, उलट-पुलट अथवा घुमा-फिराकर कहते हैं तो कही हुई बात उलझती चली जाती है। ऐसी उलझन-भरी बात श्रोता अथवा पाठक समझ नहीं पाता। वह सोचता ही रह जाता है कि कहने वाला कह या रहा था? इस प्रकार की उलझी हुई बात प्रभावहीन हो जाती है।

(*iii*) उपर्युक्त पंक्ति के माध्यम से तुलसीदास ने यह वर्णित किया है कि युद्ध-क्षेत्र में लक्ष्मण को मूर्च्छित पड़ा देखकर श्रीराम एक साधारण व्यक्ति की तरह व्याकुल हो उठे और लक्ष्मण को गले लगाकर विलाप करने लगे। वे एक साधारण व्यक्ति की भांति अपने भ्राता से कहते हैं, हे भाई! तुम मुझे कभी दुखी नहीं देख सके, तुमने मेरे हित के लिए माता-पिता, भाई-बंधु व पत्नि को छोड़ दिया और मेरे साथ वन-वन भटकते रहे तथा सरदी, गरमी, वर्षा, आंधी सबको सहन किया।

उत्तर—8. (*i*) प्रेम करने वाला

(*ii*) प्रात:काल का दृश्य बड़ा मोहक होता है। उस समय श्यामलता, श्वेतिमा तथा लालिमा का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। रात्रि की नीरवता समाप्त होने लगती है। प्रकृति में नया निखार आ जाता है। आकाश में स्वच्छता, निर्मलता तथा पवित्रता व्याप्त दिखाई देती है। सरोवरों तथा नदियों के स्वच्छ जल में पड़ने वाले प्रतिबिंब बड़े आकर्षक तथा मोहक दिखाई देते हैं। आकाश लीपे हुए चौके के समान पवित्र, हलकी लाल केसर से युक्त सिल के समान तथा जल में झलकने वाली गोरी देह के समान दिखाई देता है।

(*iii*) तुलसी ने गृहस्थ जीवन त्याग दिया था। उनका कोई भी अपना-पराया नहीं था। उन्हें सांसारिक मान-मर्यादाओं से कुछ लेना-देना नहीं था। उन्हें जात-पात की कोई परवाह नहीं थी। उन्हें समाज से रिश्ते नहीं बनाने थे, इसलिए वे किसी की कोई परवाह नहीं करते थे। वे खुलेआम कहते थे—'जाको ऊँचै सो कहै कछु ओऊ'।

उत्तर—9. (1) (ग)

(2) (घ)

(3) (ग)

(4) (घ)

(5) (क)

उत्तर—10. (*i*) चांद सिंह

(*ii*) लड़के समूह में एकत्रित होकर नंगे शरीर उछलते-कूदते तथा अत्यधिक शोर-शराबा करते हुए गलियों में कीचड़ करते हुए घूमते थे। ये गलियों में इधर-उधर दौड़ा करते थे, इसी आधार पर लोगों ने लड़कों को मेढक-मंडली नाम दे दिया था। यह टोली अपने आपको इंदर सेना इसलिए कहकर पुकारती थी योंकि यह अनावृष्टि से छुटकारा पाने हेतु लोक-आस्था के कारण इंद्र महाराज को खुश करने के लिए ऐसा कार्य करती थी। इनका मानना था कि उनके इसी कार्य से प्रसन्न होकर इंद्र देवता वर्षा करेंगे जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहान खिल उठेंगे।

(*iii*) डॉ० आंबेडकर ने एक स्वस्थ आदर्श समाज की संकल्पना की है। इस समाज में स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व का साम्राज्य होगा। इसमें इतनी गतिशीलता होगी कि कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सकेगा। समाज के बहुविधि हितों में सबका समान भाग होगा तथा सब उन हितों की रक्षा हेतु सजग रहेंगे। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपल8ध होंगे। दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा होगा। हर कोई अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और समान की भावना रखेगा।

उत्तर—11. (*i*) उसका गुरु कोई पहलवान नहीं यही ढोल है' लुट्टन पहलवान ने ऐसा इसलिए कहा होगा, योंकि उसने किसी पहलवान से कुश्ती के दाँव-पेंच नहीं सीखे थे और न ही उसका लक्ष्य एक पहलवान बनना था। वह तो बचपन में गाय चराता हुआ गायों की धार का गरम दूध पीता था। इसी से उसका शरीर हट्टा-कट्टा हो गया था। वह लोगों से बदला लेने के लिए कसरतें करता था। जब श्यामनगर में वह मेला देखने गया, तो वहाँ के दंगल में ढोल बज रहा था; पहलवान कुश्ती कर रहे थे। अचानक ही वह पहलवान से लड़ने हेतु अखाड़े में कूद पड़ा और अंत में उसने ढोल से प्रेरणा लेते हुए प्रसिद्ध चाँद सिंह पहलवान को हरा दिया।

(*ii*) लेखक के अनुसार 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता से नहीं है, बल्कि दासता में वह स्थिति भी सज़्मिलित है जिससे कुछ व्यतियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

(*iii*) लड़के समूह में एकत्रित होकर नंगे शरीर उछलते-कूदते तथा अत्यधिक शोर-शराबा करते हुए गलियों में कीचड़ करते हुए घूमते थे। ये गलियों में इधर-उधर दौड़ा करते थे, इसी आधार पर लोगों ने लड़कों को मेढक-मंडली नाम दे दिया था। यह टोली अपने आपको इंदर सेना इसलिए कहकर पुकारती थी योंकि यह अनावृष्टि से छुटकारा पाने हेतु लोक-आस्था के कारण इंद्र महाराज को खुश करने के लिए ऐसा कार्य करती थी। इनका मानना था कि उनके इसी कार्य से प्रसन्न होकर इंद्र देवता वर्षा करेंगे जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहान खिल उठेंगे।

उत्तर—12. (*i*) मास्टर सौंदलगेकर लेखक को पाँचवीं कक्षा में मराठी पढ़ाते थे। कविता पढ़ाते समय वे स्वयं भी उसमें डूब जाते थे। उनके पास सुरीला गला और छंद की बढ़िया चाल भी थी। उन्हें मराठी के साथ-साथ अंग्रेज़ी की भी कुछ कविताएँ कंठस्थ थीं। जब वे कविता सुनाते थे तब साथ-साथ अभिनय भी किया करते थे। लेखक उनकी कविताएँ पूरी तल्लीनता से सुनते थे। वे अपनी आँखों और कानों की पूरी शति लगाकर दम रोककर मास्टर जी के हाव-भाव, ध्वनि, यति, गति, चाल और रसों का आनंद लिया करते थे। लेखक खेतों में पानी लगाते समय खुले गले से मास्टर जी के हाव-भाव और आरोह-अवरोह के अनुसार कविताएँ गाया करते थे। जिस प्रकार मास्टर जी अभिनय करते थे उसी प्रकार लेखक भी अभिनय करते थे। इस प्रकार लेखक भी कविताओं के साथ खेलने लगे। इन कविताओं के माध्यम से लेखक में नई रुचियाँ पैदा होने लगीं। पहले जब वे खेतों में पानी लगाते थे उस समय उन्हें अकेलापन खटकता था। अगर काम करते समय कोई साथ नहीं है तो उन्हें बोरियत होती थी, इसलिए कोई-न-कोई साथ होना चाहिए। लेकिन कविता के प्रति लगाव होने के पश्चात उन्हें अकेलापन नहीं खटकता था।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

बल्कि अब उन्हें अकेलापन अच्छा लगता था क्योंकि अकेलेपन में कविता ऊँची आवाज़ में गाई जा सकती थी। कविता के भाव के अनुसार अभिनय भी किया जा सकता था। लेखक अब कविता गाते-गाते नाचने भी लगाते थे। इस प्रकार कविता के प्रति लगाव ने लेखक की अकेलेपन की धारणा को बदल दिया।

(*ii*) लेखक 'ओम थानवी' अपनी यात्रा के समय मुअनजो-दड़ो नगर की सड़कों, गलियों और घरों में घूमते हैं। वे वहाँ की एक-एक चीज़ को देखकर तत्कालीन समय की अनुभूतियों से जुड़ना चाहते हैं। बौद्ध स्तूप, गढ़, महाकुंड और स्नानागार को देखने के पश्चात जब वे घरों में प्रवेश करते हैं तो टूटे-फूटे घरों को देखकर भावुक हो जाते हैं। मुअनजो-दड़ो में सड़कें, बाज़ार, रईसों और कामगारों की बस्तियाँ हैं। सड़क के दोनों तरफ़ घर हैं। ये घर एक व्यवस्थित नगर-योजना के अनुसार बनाए गए हैं। इन एक मंज़िला घरों में प्रवेश करते हुए, लेखक कहते हैं, ''यहाँ की सभ्यता और संस्कृति का सामान भले ही अजायबघरों की शोभा बढ़ा रहा हो, शहर जहाँ था अब भी वहीं है। आप इसकी किसी भी दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। वह एक खंडहर क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं। रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं। या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर उस बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं जिसे आपने पुरातत्व की तसवीरों में मिट्टी के रंग में देखा है। सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आपको कहीं नहीं ले जाती; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर; वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रहे हैं।'' इस कथन के पीछे लेखक का आशय है कि इन टूटे-फूटे घरों की सीढ़ियों पर खड़े होकर आप दुनिया (विश्व) को देख सकते हैं अर्थात विश्व सयता के दर्शन कर सकते हैं। योंकि सिंधु सयता विश्व की महान सयताओं में से एक है। सिंधु सयता आडंबर रहित एवं अनुशासन प्रिय है इसलिए सिंधु सयता के माध्यम से विश्व सयता को देखा जा सकता है। खंडहरों से मिले अवशेषों और इन टूटे-फूटे घरों से केवल सिंधु सयता का इतिहास ही देखा जा सकता है बल्कि उससे कहीं आगे मानवता को भी देखा जा सकता है। ऐसे कौन-से कारण रहे होंगे कि ये महानगर आज केवल खंडहर बनकर रह गए हैं अथवा ये बड़े महानगर यों उजड़ गए। इस प्रकार इन सीढ़ियों पर चढ़कर किसी इतिहास की ही खोज नहीं करना चाहते बल्कि सिंधु सयता के सय मानवीय समाज को देखना चाहते हैं।

(*iii*) 'मुअनजो-दड़ो' और 'हड़प्पा' भारत के वे प्राचीन शहर हैं जो दुनिया के सबसे पुराने शहरों में प्रमुख स्थान रखते हैं। ये दोनों सिंधु घाटी के परिपव दौर केशहर हैं। मुअनजो-दड़ो ताम्र युग के शहरों में सबसे बड़ा है। इसकी खुदाई से बड़ी संख्या में इमारतें, सड़कें, धातु-पत्थर की मूर्तियाँ, मुहरें, खिलौने, चाक पर बने चित्रित भांडे, साज़ो-सामान आदि मिलते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Model Test Paper (Solved)–10

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं
विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (ख) भारत
(2) (घ) भविष्य
(3) (घ) केवल कथन (III) और (IV) सही हैं।
(4) हिंदी पत्रकारिता को
(5) पत्रकारिता
(6) हिन्दी
(7) जहाँ हर सूचना शीघ्रता से पहुंच जाती है।

उत्तर—2. (1) (घ) केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।
(2) (घ) पति को अपनी ही आवाज़ व्यंग्यपूर्ण लगती है।
(3) (ग) घर का कौन-सा सामान कहाँ रखा है ?
(4) घर का काम करने को तैयार
(5) काम काजी महिला
(6) घर के काम में बराबर सहयोग करना।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) बदलती जीवन शैली स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव है। हालांकि इस जीवन शैली को हासिल करने में ज्यादा मेहनत नहीं लगती बल्कि कई लोग व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं, दृढ़ संकल्प की कमी और अन्य कारणों द्वारा इसका पालन नहीं कर पाते। स्वस्थ रहने के लिए किस प्रकार की शैली को अपनाना है यह जानना ज्यादा जरूरी है।

आजकल की पीढ़ी कम्प्यूटर मोबाइल, बर्गर, पिज्जा और देर रात की पार्टियों पर आधारित है—मूल रूप से ये सब अस्वास्थ्यकर है। पेशेवर प्रतिबद्धताओं और व्यक्तिगत मुद्दों ने सभी को जकड़ लिया है और इन सभी आवश्यकताओं के बीच वे अपना स्वास्थ्य खो रहे हैं। इन दिनों लोग अपने दैनिक जीवन में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे भूल गए हैं कि एक स्वस्थ जीवन जीने के क्या मायने हैं।

हम स्वस्थकर आदतें अपनाकर अपनी जीवन शैली को सुधार सकते हैं यदि हम प्रात: भ्रमण, योगा व मेडिटेशन का जीवन में समावेश करें तो हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो पाएगा। शरीर में अनेक शक्तियाँ निहित हैं, यदि हम उन शक्तियों को पहचान लेगं तो हम निरोग रहेंगे।

(*ii*) वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का कद निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह सर्वविदित है कि आज भारत के नाम का डंका विश्व के तमाम देशों में बज रहा है। प्राचीन काल में हमारे देश भारत को सपेरों का देश कहा जाता था और पश्चिमी देश भारत को हेय नज़र से देखते थे, लेकिन आज सभी पश्चिमी देशों में भारत के विज़य में धारणा बिलकुल बदल गई है। आज भारत विश्व के अनेक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंचों की अगुवाई कर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री का आज हर देश का राष्ट्राध्यक्ष बड़ी गर्मजोशी से अभिनंदन करता है। भारत अनेक अंतरराष्ट्रीय समूह का प्रमुख सदस्य है। इसी वर्ज़ 2023 में भारत में होने वाली जी-20 की बैठक भारत के बढ़ते महत्व को स्पष्ट करती है। भारत क्वाड जैसे प्रमुख संगठन का सदस्य है। भारत के कुशल युवा आईटी के क्षेत्र में विश्व के हर देश में अपना परचम लहरा रहे हैं। अमेरिका की सिलिकॉन वैली भारत की युवा प्रतिभा से भरी पड़ी है। अलग-अलग क्षेत्र में अनेक कुशल भारतीय व्यक्ति विश्व की अनेक प्रमुख कंपनियों के सीईओ हैं, जिनमें गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, यूट्यूब जैसी बड़ी कंपनियों के नाम शामिल हैं। इस बात से स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का कद निरंतर बढ़ता जा रहा है। अब का भारत आईटी के युवा पेशेवरों का देश बन चुका है। भारत से अनेक तरह की प्रतिभाएँ निकलकर पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन कर रही हैं। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था स्थापित हो चुकी है। इन सब बातों से स्पष्ट हो रहा है कि भारत का कद नि:संदेह बढ़ा है।

(*iii*) आज यदि हम भारत की विभिन्न समस्याओं पर विचार करें तो हमें लगता है कि हमारा देश अनेक समस्याओं के चक्रव्यूह में घिरा हुआ है। एक ओर भूखमरी, दूसरी ओर बेरोज़गारी, कहीं अकाल तो कहीं बाढ़ का प्रकोप है। इन सबसे भयानक समस्या आतंकवाद की समस्या है जो देश रूपी वट वृक्ष को दीमक के समान चाट-चाट कर खोखला कर रही है। कुछ अलगाववादी शक्तियां तथा पथ-भ्रष्ट नवयुवक हिंसात्मक रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों में दंगा-फसाद करा कर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं।

आतंकवाद से तात्पर्य है—''देश में आतंक की स्थिति उत्पन्न करना'' इसके लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर हिंसात्मक उत्पात मचाये जाते हैं जिससे सरकार उनमें उलझ कर सामाजिक जीवन के विकास के लिए कोई कार्य न कर सके। कुछ विदेशी शक्तियाँ भारत की विकास दर को देख कर जलने लगी थीं। वे भी भारत के कुछ स्वार्थी लोगों को धन-दौलत का लालच देकर उन में उपद्रव कराती हैं जिससे भारत विकसित न हो सके। आतंकवादी रेल पटरियां उखाड़ कर, बस यात्रियों को मार कर, बैंकों को लूट कर, सार्वजनिक स्थलों पर बम फेंक कर आदि कार्यों द्वारा आतंक फैलाने में सफल होते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

भारत में आतंकवाद के विकसित होने के अनेक कारण हैं जिनमें से प्रमुख गरीबी, बेरोज़गारी, भुखमरी तथा धार्मिक उन्माद हैं। इनमें से धार्मिक कट्टरता आतंकवादी गतिविधियों को अधिक प्रोत्साहित कर रही है। लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे का गला काटने के लिए तैयार हो जाते हैं। धार्मिक उन्माद अपने विरोधी धर्मावलंबी को सहन नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप हिंदू-मुस्लिम, हिंदू-सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्म के नाम पर अनेक दंगे भड़क उठते हैं। इतना ही नहीं धर्म के नाम पर अलगाववादी अलग राष्ट्र की माँग भी करने लगते हैं। इससे देश की एकता भी खतरे में पड़ जाती है।

यदि आतंकवाद की समस्या का गंभीरता से समाधान न किया गया तो देश का अस्तित्व खतरे में पड़ा जायेगा। सभी लड़ कर समाप्त हो जायेंगे। जिस आज़ादी को हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर प्राप्त किया उसे हम आपसी वैर-भाव से समाप्त कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेंगे। देश पुनः परतंत्रता के बंधनों से जकड़ जाएगा। आतंकवादी हिंसा के बल से हमारा मनोबल तोड़ रहे हैं। हमें संगठित होकर उसकी ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। जिससे उनका मनोबल समाप्त हो जाए तथा वे जान सकें कि उन्होंने गलत मार्ग अपनाया है। वे आत्मग्लानि के वशीभूत होकर जब अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे तभी उन्हें देश की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सकता है। अतः आतंकवाद की समस्या का समाधान जनता एवं सरकार दोनों के मिले-जुले प्रयासों से ही संभव हो सकता है।

4. (*i*) आज के दौर मं किसी भी खेल से खलने वाले या खेल को देखने वालों से ज्यादा फायदा आयोजकों और प्रमोटर को होता है। हर तरह के सामान और उत्पादन को बेचने के लिए खिलाड़ियों का और खेल का इस्तेमाल किया जाता है। एक समय था जब युवाओं के अनुरणीय आदर्श रूप स्वामी विवेकानंद या गांधी जी जैसे महानायक हुआ करते थे।

(*ii*) खेल के चाहने वाले प्रशंसक खबरों के अपडेटस और खबर की जानकारी के लिए इन माध्यमों का उपयोग करते हैं। खेल से सम्बन्धित हर अखबार और पत्रिका में कॉलम लिखे जाते हैं और उनके लिए अलग-अलग पन्ने भी समर्पित होते हैं। भारत में लोग ना सिर्फ खेल के बारे में पढ़ने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं, बल्कि इस खंड का एक सार्वभौमिक पाठक वर्ग भी है।

(*iii*) सामान्य लेखन की अपेक्षा किसी विशेष विषय पर किए गए लेखन को विशेष लेखन कहते हैं। समाचार-पत्रों में विशेष लेखन की महत्वपूर्ण भूमिका है। अधिकांश अखबारों और पत्रिकाओं के अतिरिक्त दूरदर्शन और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग बॉक्स होता है और उस विशेष बॉक्स पर काम करने वाले पत्रकारों का समुदाय भी अलग होता है। इसी प्रकार खेल के समाचारों और फ़ीचर के लिए बॉक्स अलग होता है। इन बॉक्सों पर काम करने वाले उपसंपादक और संवाददाता संबंधित विषय या क्षेत्र में विशेषज्ञ होते हैं। वास्तव में खबरें कई प्रकार की होती हैं—राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान और किसी भी अन्य विषय से संबंधित। संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा विशेषकर उनकी रुचियों और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे 'बीट' कहा जाता है। एक संवाददाता यदि अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करता है, तो उसकी बीट अपराधी मानी जा सकती है। समाचार-पत्र की तरफ़ से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए उत्तरदायित्व तथा ज़वाबदेह भी होता है। इसी प्रकार यदि संवाददाता की रुचि और जानकारी खेल से संबंधित है तो उसे खेल बीट मिल सकती है और यदि उसकी आर्थिक या कारोबार जगत से जुड़ी खबरों में रुचि और जानकारी है, तो उसे आर्थिक रिपोर्टिंग का उत्तरदायित्व मिल सकता है। प्रकृति और पर्यावरण से संबंधित जानकारी रखने वाले को पर्यावरण बीट मिल सकती है। परंतु विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग न होकर एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है। इसमें उस विषय की संपूर्ण जानकारी होने के साथ-साथ उस रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।

(*iv*) उत्तर प्रिंट अर्थात मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे प्राचीन है। वास्तव में आधुनिक युग का आरंभ ही मुद्रण अर्थात छपाई के आविष्कार से हुआ। वैसे तो मुद्रण का आरंभ चीन से हुआ लेकिन इसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है। छापाखाना अर्थात प्रेस के आविष्कार से जनता को काफ़ी लाभ हुआ। यूरोप में पुनर्जागरण के 'रेनेसाँ' के आरंभ में छापेखाने की महत्वपूर्ण भूमिका थी। भारत में प्रथम छापाखाना सन 1556 में गोवा में स्थापित हुआ। इसकी स्थापना मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए की थी। इसके पश्चात मुद्रण तकनीक में ज़्यादा बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का विस्तार व्यापक रूप से हुआ है। मुद्रित माध्यमों के अंतर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि आते हैं, जिनका हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्व है। मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता उसमें छपे हुए शब्दों के स्थायित्व में है, जिसे आराम से धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं। समझ में न आने पर उसे दुबारा तब तक पढ़ सकते हैं, जब तक वह हमारी समझ में न आ जाए। समाचार-पत्र अथवा पत्रिका पढ़ते समय यह आवश्यक नहीं कि उसे पहले पृष्ठ और पहली खबर से ही पढ़ना शुरू किया जाए। मुद्रित माध्यमों के स्थायित्व का एक लाभ यह है कि इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। मुद्रित माध्यमों की दूसरी बड़ी विशेषता लिखित भाषा का विस्तार है। लिखित समाचार में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और श8दों का उपयुत प्रयोग किया जाता है। लिखे हुए को प्रकाशित करने तथा ज़्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए प्रचलित लिखित भाषा का होना आवश्यक है, जिससे उसे अधिक लोग समझ सकें। मुद्रित माध्यम की तीसरी विशेषता यह है कि यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है, जिसके द्वारा गूढ़ एवं गंभीर बातें लिखी जा सकती हैं। साक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम बहुत महत्वपूर्ण होते हैं किंतु निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम व्यर्थ हैं। मुद्रित माध्यमों के लेखकों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ शैक्षिक ज्ञान एवं योग्यता का ध्यान रखना पड़ता है। मुद्रित माध्यम रेडियो, टेलीविज़न एवं इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। ये एक निश्चित समय पर प्रकाशित होती हैं जिस प्रकार समाचार-पत्र 24 घंटे में एक बार या साहश्वताहिक पत्रिका सहश्वताह में एक बार प्रकाशित होती है। कुछ अपवादों को छोड़कर समय-सीमा समाहश्वत होने के पश्चात कोई भी सामग्री प्रकाशन के लिए स्वीकार नहीं की जाती। अतः मुद्रित माध्यमों के लेखकों एवं पत्रकारों को प्रकाशन की सीमा का ध्यान रखना पड़ता है। मुद्रित माध्यम के अंतर्गत छपने वाले आलेख में सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर करके प्रकाशित किया जाता है। समाचार-पत्र अथवा पत्रिका में यह प्रयास किया जाता है कि कोई गलती या अशुद्धि प्रकाशित न हो जाए। इसके लिए समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में संपादक के साथ एक पूरी संपादकीय टीम होती है, जिसका मुख्य उत्तरदायित्व प्रकाशन के लिए जा रही सामग्री को गलतियों और अशुद्धियों से रहित प्रकाशित करने योग्य बनाना है।

(*v*) बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता का उस क्षेत्र के बारे में पर्याप्त जानकारी तथा दिलचस्पी होनी चाहिए। विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विज़य से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विष्ठलेज़ण करने वाला होना चाहिए।

5. (*i*) स्तंभ लेखन भी विचारपरक लेखन का पक प्रमुख रूप है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपन एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें दिन नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं। लेकिन नए लेखकों को स्तंभ लेखन का मौका नहीं मिलता है।

(*ii*) (i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

(ii) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

(iii) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

(iv) ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

(v) कथावस्तु के अनुरूप मंच-सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

(vi) पात्रों के द्वद्वंव को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

(vii) संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(viii) कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(*iii*) नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार हैं—

(i) सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।

(ii) लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।

(iii) लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।

(iv) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।

(v) लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है।

(vi) लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (घ)

(2) (ग)

(3) (घ)

(4) (घ)

(5) (ख)

उत्तर—7. (*i*) यह कविता प्राकृतिक सौंदर्य से ओत-प्रोत है। सबसे तेज़ बौछारें तथा भादों के जाने के बाद सवेरा हुआ जो अत्यंत लालिमा युत और सुंदरता से परिपूर्ण था। वह सवेरा खरगोश की आँखों के समान लाल रंग का था। अर्थात शरद अनेक बौछारों और झाड़ियों को चीरता हुआ आया। कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए कहा है कि शरद अपनी चमकीली साइकिल पर सवार होकर घंटी बजाता हुआ आया। उसने चमकीले संकेतों के द्वारा पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूह को अपने पास बुलाया। उसने आकाश को इतना मुलायम और सुंदर बना दिया जिसमें पतंग उड़ सके। साथ ही संसार का पहला पतला कागज़, बाँस की कमानी और रंग-बिरंगी वस्तु उड़ सके। जब बच्चे रंग-बिरंगी पतंग आकाश में उड़ाने लगे तो चारों ओर सीटियों और किलकारियों की आवाज़ गूँज उठी तथा तितलियों ने मधुर गुंजार शुरू कर दिया।

(*ii*) असीमित दायरा।

(*iii*) अपाहिज कैमरे के सामने इसलिए रो पड़ता है क्योंकि संचार माध्यम वाले लोग उसकी भावनाओं एवं संवेदनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं। कारोबारी दबाव के कारण उनका रवैया संवेदनहीन बन जाता है, जिससे उनका कार्यक्रम रोचक एवं प्रभावशाली बन सके। इस उद्देश्य के लिए वे मानवता को भी तार-तार कर देते हैं।

उत्तर—8. (*i*) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से कविता की विशेषता का पता चलता है कि समय परिवर्तनशील है, जो सतत चलायमान है। यह कभी भी नहीं रुकता, न ही यह किसी की प्रतीक्षा करता है। जीवन क्षणभंगुर है, अत: कब जीवन समाप्त हो जाए किसी, को नहीं पता। इसलिए मनुष्य को अपने लक्ष्य को अतिशीघ्रता से प्राप्त कर लेना चाहिए। मनुष्य में वह विश्वास होना चाहिए कि वह कम-से-कम समय में अपनी मंज़िल को प्राप्त कर लेगा।

(*ii*) छत्तों पर कूदते हुए।

(*iii*) इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने टेलीविज़न कैमरा तथा दूरदर्शन वालों पर व्यंग्य किया है जो अपने-आपको हर तरह से समर्थ मानकर किसी अपाहिज व्यक्ति की संवेदनाओं से खिलवाड़ करते हैं। ये शारीरिक चुनौती झेलते लोगों को दुर्बलता का बार-बार अहसास कराकर उन्हें कुंठित करते हैं जो अपनी प्रसिद्धि के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हैं।

उत्तर—9. (1) (ख)

(2) (क)

(3) (ख)

(4) (ग)

(5) (घ)

उत्तर—10. (*i*) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में पानी की बरबादी होने को लेखक ने सही ठहराया है। यही सही है कि इस प्रकार की लोक-मान्यताओं से देश की अमूल्य संपत्ति पानी की बरबादी हो रही है। जो उचित नहीं है। यह देश की अमूल्य धरोहर है जिसे बचाकर रखना चाहिए। दूसरा पानी की बरबादी न होने को जीजी सही मानती हैं जो उचित नहीं है क्योंकि ऐसी आस्था से केवल भ्रम, अंध -विश्वास ही पनप सकता है। धर्म के प्रति आस्था ठीक है किंतु उस आस्था के नाम पर अमूल्य वस्तु का बरबाद करना औचित्यपूर्ण नहीं।

(*ii*) जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं—

(*i*) जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(*ii*) श्रम-विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती।

(*iii*) भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती, बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

(*iv*) जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

(*iii*) गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है क्योंकि अनावृष्टि के कारण चारों तरफ सूखा पड़ जाता है। कुएँ, तालाब नदियाँ सूख जाते हैं। कहीं भी पानी का नामो-निशान नहीं रहता। पीने का पानी बिलकुल नहीं रहता, जिससे पशु-पक्षी प्यास के कारण व्याकुल होकर मरने लगते हैं।

उत्तर—11. (*i*) लट्टन पहलवान ने जब राजा के दरबार में बहुत नामी पहलवानों को हराया वहीं से उसके अच्छे दिन शुरू हो गए। वह राजा का दरबारी पहलवान बन गया। आस-पास के सभी पहलवानों को हरा कर वह पूरी मस्ती से अपना जीवन जीने लगा इस दौरान उसके दो पत्र भी पैदा हुए उसका यह सुख चैन भरा जीवन राजा की मृत्यु तक रहे।

(*ii*) बाज़ार में भगत जी का स्वाभिमानी, निश्चेष्ट, आत्मसंयमी, मितव्ययी, दृढ़-निश्चयी आदि विशेषताओं से परिपूर्ण व्यतित्व उभरकर सामने आता है। भगत जी एक स्वाभिमानी और निश्चेष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं जिन्हें बाज़ार का आकर्षण, सौंदर्य, चहल-पहल, बड़ी-बड़ी दुकानें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकतीं और न ही उसके स्वाभिमान को डिगा सकती हैं। वे आत्मसंयमी और मितव्ययी पुरुष हैं। धन की कमी न होने के कारण भी वे बाज़ार में फिजूलखर्ची पर विश्वास नहीं करते। केवल उतनी ही वस्तुएँ खरीदते हैं जितनी उनकी आवश्यकता है और वे भी केवल अच्छे मूल्य में खरीदते हैं। बाज़ारू आकर्षण में फँसकर धन को नहीं लुटाते।

(*iii*) लेखिका ने भक्तिन के सेवक-धर्म की तुलना हनुमान जी से की है। यह इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार हनुमान अपने प्रभु राम की तन-मन और पूर्ण निष्ठा से सेवा किया करते थे। ठीक उसी प्रकार भक्तिन अपनी मालकिन लेखिका की सेवा करती है। वह उनके प्रति पूर्ण समर्पण भाव से सेवा भाव रखती है।

उत्तर—12. (*i*) 'जूझ' उपन्यास आनंद यादव द्वारा रचित बहुचर्चित उपन्यास है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास के कथा-नायक स्वयं लेखक (आनंद) हैं। वे आनंद नामक कथा-नायक के संघर्षपूर्ण जीवन-गाथा का वर्णन करते हैं। 'जूझ' शब्द का अर्थ 'संघर्ष' है। कथा-नायक का जो चरित्र 'जूझ' उपन्यास के प्रस्तुत पाठ में दर्शाया गया है उसमें उनकी पाठशाला जाने की प्रबल इच्छाशक्ति और इच्छापूर्ति के लिए संघर्ष-गाथा है। संपूर्ण उपन्यास कथा-नायक के संघर्ष को रेखांकित करता है। 'जूझ' उपन्यास का कथा-नायक आनंद फिर से पाँचवीं कक्षा में प्रवेश चाहता है। पिछले वर्ष उसके पिता ने परीक्षा देने से पूर्व ही उसे स्कूल से निकाल लिया था। इस वर्ष फिर उसका मन स्कूल जाने के लिए बेचैन रहता है। वह अपनी माँ से बार-बार प्रार्थना करता है कि वह मुझे स्कूल में पढ़ने के लिए पिता जी को मनाए। परंतु उसकी माँ भी पिता जी से डरी-सहमी रहती है। पिछले वर्ष जब आनंद ने स्कूल छोड़ा था तो वह सारा दिन अकेला खेतों में काम करता रहता है जबकि उसका पिता सारा दिन गाँव में घूमता रहता है। माँ को बार-बार कहकर वह गाँव के मुखिया दत्ता जी राव के माध्यम से पिता जी पर दबाव डलवाने में सफल हो जाता है। उसकी माँ और वह स्वयं दत्ता जी राव को प्रार्थना करते हैं कि वह पिता जी पर बाव डाले ताकि मैं स्कूल में पढ़-लिखकर कोई नौकरी प्राप्त कर सकूँ अथवा कोई व्यापार शुरू कर सकूँ। दत्ता जी राव पिता जी को अपने बाड़े में बुलाकर खूब खरी-खोटी सुनाते हैं तथा उन्हें बाध्य करते हैं कि वह स्वयं खेतों में काम करे और बेटे को स्कूल भेजे। घर आकर पिता जी ने आनंद को खूब डाँटने के बाद आनंद को स्कूल जाने की अनुमति दे दी। आनंद खुशी-खुशी स्कूल जाने लगा। आनंद जब पहली बार कक्षा में गया तो वहाँ केवल गली के दो लड़के ही उसे पहचानते थे। अब इस कक्षा में सभी उससे छोटे बच्चे थे जिन्हें वह कम अक्लवाला समझा करता था। आज उनके साथ बैठकर उसे बहुत बुरा लग रहा था परंतु वह मजबूर था। उसकी कक्षा में एक शरारती लड़का चह्वाण था जो उसकी धोती को बार-बार खींचता था तथा उसके गमछे को इधर-उधर फेंकता था। आनंद बहुत दुखी था। आधी छुट्टी में भी कुछ शरारती लड़कों ने उसे खूब तंग किया। एक बार तो उसे लगा कि इस कक्षा से बढ़िया तो वे खेत थे जहाँ कोई दूसरा तंग तो नहीं करता था। धीरे-धीरे उसका मन कक्षा में रमने लगा। वह वसंत पाटील नामक लड़के के पास बैठने लगा जो गणित विषय में बहुत होशियार था। आनंद को भी लगा कि वह भी गणित के सवाल निकालकर वसंत पाटील की तरह होशियार बन जाए इसलिए वह घर जाकर खूब मेहनत करता और स्कूल में वसंत पाटील के साथ दोस्ती का फ़ायदा उठाकर गणित विषय में होशियार हो गया। अब वह भी पाटील की तरह जल्दी-जल्दी गणित के सवाल हल करने लगा।

(*ii*) लेखक 'ओम थानवी' अपनी यात्रा के समय मुअनजो-दड़ो नगर की सड़कों, गलियों और घरों में घूमते हैं। वे वहाँ की एक-एक चीज़ को देखकर तत्कालीन समय की अनुभूतियों से जुड़ना चाहते हैं। बौद्ध स्तूप, गढ़, महाकुंड और स्नानागार को देखने के पश्चात जब वे घरों में प्रवेश करते हैं तो टूटे-फूटे घरों को देखकर भावुक हो जाते हैं। मुअनजो-दड़ो में सड़कें, बाज़ार, रईसों और कामगारों की बस्तियाँ हैं। सड़क के दोनों तरफ़ घर हैं। ये घर एक व्यवस्थित नगर-योजना के अनुसार बनाए गए हैं। इन एक मंज़िला घरों में प्रवेश करते हुए, लेखक कहते हैं, ''यहाँ की सभ्यता और संस्कृति का सामान भले ही अजायबघरों की शोभा बढ़ा रहा हो, शहर जहाँ था अब भी वहीं है। आप इसकी किसी भी दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। वह एक खंडहर क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं। रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं। या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर उस बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं जिसे आपने पुरातत्व की तसवीरों में मिट्टी के रंग में देखा है। सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आपको कहीं नहीं ले जाती; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर; वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रहे हैं।'' इस कथन के पीछे लेखक का आशय है कि इन टूटे-फूटे घरों की सीढ़ियों पर खड़े होकर आप दुनिया (विश्व) को देख सकते हैं अर्थात विश्व सयता के दर्शन कर सकते हैं।

POLY PATHINTERNATIONAL (P) LTD.

योंकि सिंधु सयता विश्व की महान सयताओं में से एक है। सिंधु सयता आडंबर रहित एवं अनुशासन प्रिय है इसलिए सिंधु सयता के माध्यम से विश्व सयता को देखा जा सकता है। खंडहरों से मिले अवशेषों और इन टूटे-फूटे घरों से केवल सिंधु सयता का इतिहास ही देखा जा सकता है बल्कि उससे कहीं आगे मानवता को भी देखा जा सकता है। ऐसे कौन-से कारण रहे होंगे कि ये महानगर आज केवल खंडहर बनकर रह गए हैं अथवा ये बड़े महानगर यों उजड़ गए। इस प्रकार इन सीढ़ियों पर चढ़कर किसी इतिहास की ही खोज नहीं करना चाहते] बल्कि सिंधु सयता के सय मानवीय समाज को देखना चाहते हैं।

(*iii*) यशोधर बाबू सचिवालय में सेशन ऑफ़िसर हैं। वे अपने काम के प्रति सचेत एवं समय के पाबंद हैं। काम के समय वे अपने सह कर्मचारियों के साथ गंभीर व्यवहार करते हैं जबकि छुट्टी के बाद उनके साथ दोस्तों की तरह व्यवहार करते हैं। ये सभी आदर्श एवं संस्कार उन्हें अपने आदर्श कृष्णानंद से मिले हैं जिन्हें यशोधर आदर से किशनदा कहकर पुकारते हैं। किशन के संस्कारों और आपसी व्यवहार ने यशोधर बाबू को गहरा प्रभावित किया है। वे प्रत्येक बात किशनदा के नज़रिए से देखते हैं। किशनदा पहाड़ से आए युवाओं की समस्याओं को समझते हैं। यशोधर बाबू भी अल्मोड़ा से आकर दिल्ली में किशनदा के घर रहे थे। जब उनकी आयु नौकरी के लिए पूरी नहीं हुई तब तक वे किशनदा के यहाँ रसोइया के रूप में कार्य करते थे। जब आयु पूरी हो गई तो किशनदा ने यशोधर बाबू को अपने नीचे नौकरी दिलवा दी। इसलिए यशोधर बाबू किशनदा की अपनी ज़िंदगी में अहम भूमिका मानते हैं। उन्हीं के नशे-कदम पर चलते हुए यशोधर बाबू ने भी किशनदा की भाँति अपना घर नहीं बनाया। वे दिल्ली (पहाड़गंज) में किराए के मकान में रहते हैं। घर बनाने के संदर्भ में किशनदा का मानना था कि ''मूर्ख लोग घर बनाते हैं जबकि सयाने उन घरों में बसते हैं।'' इसलिए किशनदा से प्रभावित होकर यशोधर बाबू भी घर नहीं बनवाते हैं। उन्हें यह बात बिल्कुल भी पसंद नहीं आती कि उनके बच्चे उनकी सालगिरह को 'सिल्वर वैडिंग' के रूप में मनाएँ। वे इस आयोजन को फिज़ूल खर्ची मानते हैं। उनके बच्चे यशोधर बाबू के इसी दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं। दूसरी ओर यशोधर बाबू की पत्नी अपने बेटों और आधुनिक बेटी के साथ अधिक समय व्यतीत करती है। वह यशोधर बाबू के साथ इसलिए भी सामंजस्य नहीं बिठा पाती योंकि उसका मानना है कि यशोधर बाबू के संस्कारों की वजह से ही वह अपने जीवन को सुखमय ढंग से व्यतीत नहीं कर सकी। जेठानियाँ और बड़े बूढ़ों के दबाव में यशोधर बाबू की पत्नी खुद को असहज एवं असुरक्षित महसूस करती थी। एक बार जब यशोधर बाबू अपनी बेटी को जीन्स और बिना बाजू का टॉप पहनने से मना करते हैं तो वह उनका विरोध करते हुए कहती है—''वह सिर पर पल्लू-वल्लू मैंने कर लिया बहुत तुज़्हारे कहने पर समझे, मेरी बेटी वही करेगी जो दुनिया कर रही है।'' इस प्रकार कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध हैं जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित है। इसलिए यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित होती है लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–11

(Based on the Latest Design & Sample Paper Issued by CBSE)

कक्षा—बारहवीं
विषय—हिंदी (कोर)

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : इसके लिए **Holy Faith New Style Model Test Paper—1** देखें।

खंड—क
(अपठित बोध)

उत्तर—1. (1) (ग)मशीनीकरण से मनुष्य का दुख दिन-पर-दिन बढ़ रहा है।

(2) (ग) अमीर लोग मानसिक तनावों से पीड़ित हैं।

(3) (घ) केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।

(4) मशीनों से

(5) मशीनों का

(6) मनुष्य का महत्त्व मशीनों से अधिक

(7) मशीनों के महत्त्व को कम करें।

उत्तर—2. (1) (ग) केवल कथन (I), व (III) सही हैं।

(2) (ख) दूसरे का हिस्सा दबाकर रखते हैं

(3) (क) उद्यम और परिश्रम से

(4) निरुदयमी

(5) भाग्य के बल से

(6) विद्यार्थी स्वयं करें।

खंड—ख
पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

उत्तर—3. (*i*) भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का रूप माना जाता है। हमारे प्राचीन वेदों से हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय समाज मातृ-सत्तात्मकता था। नारी यह समाज का मूल आधार है तथा ईश्वर द्वारा समाज को दिया गया खूबसूरत उपहार है। जो समाज में नारी, बहन, मां, पत्नी बेटी का रिश्ता निभाती है। सुन्दरता का दूसरा नाम स्त्री है। जब कभी भी सुन्दरता की बात आती है, तो हमेशा उनका वर्णन किये बगैर रह नहीं सकते। नारी की सुन्दरता को भी नहीं नकारा जा सकता। अक्सर सुना है एक सफल व्यक्ति के पीछे एक औरत का हाथ होता है। वह अपने कार्यों को ईमानदारी व जिम्मेदारी के साथ करती है। वही पुरुष के साथ हर सुख-दुख में साथ खड़े रहती है।

आधुनिक काल में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जाग्रत होने के कारण वर्तमान दशा में नारियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। राजाराम मोहन राय, और दयानन्द सरस्वती ने भारतीय नारियों को पुरुषों के समकक्ष बैठाने का कार्य किया है। उनके लिए शिक्षा के द्वारा खोले है। आज की नारी पूरे तरकी से पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। शिक्षा और विकास के फलस्वरूप भारतीय नारी ने प्राचीन आदर्शों और मान्यताओं की तिलांजली दे दी है। आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के कारण वो करुणा, ममता, कोमलता, स्नेह को छोड़तर वह विलासिता की ओर जा रही है। उन्हें अब पुरुषों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। आज महिलाएं हर पेशे से जुड़ी हुई है। कोई सफल डॉक्टर है, तो कोई वकील, पुलिसकर्मी, शिक्षक, राजनेता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है।

(*ii*) आज यदि हम भारत की विभिन्न समस्याओं पर विचार करें तो हमें लगता है कि हमारा देश अनेक समस्याओं के चक्रव्यूह में घिरा हुआ है। एक ओर भूखमरी, दूसरी ओर बेरोज़गारी, कहीं अकाल तो कहीं बाढ़ का प्रकोप है। इन सबसे भयानक समस्या आतंकवाद की समस्या है जो देश रूपी वट वृक्ष को दीमक के समान चाट-चाट कर खोखला कर रही है। कुछ अलगाववादी शक्तियां तथा पथ-भ्रष्ट नवयुवक हिंसात्मक रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों में दंगा-फसाद करा कर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं।

आतंकवाद से तात्पर्य है—''देश में आतंक की स्थिति उत्पन्न करना'' इसके लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर हिंसात्मक उत्पात मचाये जाते हैं जिससे सरकार उनमें उलझ कर सामाजिक जीवन के विकास के लिए कोई कार्य न कर सके। कुछ विदेशी शक्तियाँ भारत की विकास दर को देख कर जलने लगी थीं। वे भी भारत के कुछ स्वार्थी लोगों को धन-दौलत का लालच देकर उन में उपद्रव कराती हैं जिससे भारत विकसित न हो सके। आतंकवादी रेल पटरियां उखाड़ कर, बस यात्रियों को मार कर, बैंकों को लूट कर, सार्वजनिक स्थलों पर बम फेंक कर आदि कार्यों द्वारा आतंक फैलाने में सफल होते हैं।

भारत में आतंकवाद के विकसित होने के अनेक कारण हैं जिनमें से प्रमुख गरीबी, बेरोज़गारी, भुखमरी तथा धार्मिक उन्माद हैं। इनमें से धार्मिक कट्टरता आतंकवादी गतिविधियों को अधिक प्रोत्साहित कर रही है। लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे का गला काटने के लिए तैयार हो जाते हैं। धार्मिक उन्माद अपने विरोधी धर्मावलंबी को सहन नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप हिंदू-मुस्लिम, हिंदू-सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्म के नाम पर अनेक दंगे भड़क उठते हैं। इतना ही नहीं धर्म के नाम पर अलगाववादी अलग राष्ट्र की माँग भी करने लगते हैं। इससे देश की एकता भी खतरे में पड़ जाती है।

यदि आतंकवाद की समस्या का गंभीरता से समाधान न किया गया तो देश का अस्तित्व खतरे में पड़ा जायेगा। सभी लड़ कर समाप्त हो जायेंगे। जिस आज़ादी को हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर प्राप्त किया उसे हम आपसी वैर-भाव से समाप्त कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

मार लेंगे। देश पुन: परतंत्रता के बंधनों से जकड़ जाएगा। आतंकवादी हिंसा के बल से हमारा मनोबल तोड़ रहे हैं। हमें संगठित होकर उसकी ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। जिससे उनका मनोबल समाप्त हो जाए तथा वे जान सकें कि उन्होंने गलत मार्ग अपनाया है। वे आत्मग्लानि के वशीभूत होकर जब अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे तभी उन्हें देश की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सकता है। अत: आतंकवाद की समस्या का समाधान जनता एवं सरकार दोनों के मिले-जुले प्रयासों से ही संभव हो सकता है।

(*iii*) मौसम की मेहरबानी से धान की फसलें लहलहा उठी हैं। अपने खेत में लहलहाते धान की फसल देखकर किसानों के चेहरे पर खुशी साफ झलक रही है। किसानों को पिछले दस वर्ष के बाद अच्छे से पकी फसल को देखने का मौका मिला। कृषि विभाग की कृपा से किसान शत-प्रतिशत धान की बेहतर फसल लेने में सक्षम दिख रहे हैं। अच्छी फसल होने की उम्मीद से किसान की खुशी का ठिकाना नहीं है। धान के निकल रहे कल्लों से खेत भर गए थे। मानो मौसम के बदलाव ने किसानों की किस्मत बदल दी हो। रोपनी से ऊबर चुके किसान पहली निराई को अंतिम रूप दे चुके थे। अब बारिश ने खेतों को नमी दी। तदन्तर परिपक्वावस्था का समय गुजरा। अब फसल स्वर्ण रंग से लहलहाती हुई दिखाई दे रही हैं। सुनहरी धान की बालियाँ झूम-झूमकर मानो किसानों के मधुरिम संगीत के साथ नर्तन का संकेत दे रही हैं। किसानों के साथ बल खाती नाजुक बालियाँ उनके साथ अठखेलियाँ कर रही हैं। फसल के घर आते ही किसान समृद्धि के पल भोगने की उम्मीद कर रहा है। उसका भरा-पूरा परिवार आनंदमय होने वाला है।

4. (*i*) इस शैली के द्वारा समाचार-पत्रों की उपयोगिता बढ़ जाती है। उनके पाठकों की संख्या में वृद्धि होने लगती है। पाठक अत्यधिक आनंद और रोचकता से समाचारों को पढ़ने लगते हैं। इस शैली से समाचारों का स्वरूप निखर जाता है। उनमें रोचकता का समावेश हो जाता है। सहज आकर्षण पैदा होता है। विशेष लेखन की भाषा और शैली निम्नलिखित प्रकार की होनी चाहिए—

(*a*) विशेष लेखन की भाषा-शैली सरल, साधारण और सहज होनी चाहिए।

(*b*) इसमें जटिल शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(*c*) इसमें रोचक शैली का प्रयोग करना चाहिए।

(*d*) इसमें सामान्य लेखन की सामान्य शैली की अपेक्षा विशेष भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए।

(*e*) इसमें प्रासंगिक लेखन से जुड़ी भाषा-शैली को अपनाना चाहिए।

(*ii*) (a) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

(b) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

(c) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

(d) ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

(e) कथावस्तु के अनुरूप मंच-सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

(f) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

(g) संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(h) कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

(*iii*) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में महत्वपूर्ण अंतर है। अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और रुचियों का होना अति आवश्यक है। एक बीट रिपोर्टर को अपने बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। विशेषीकृत रिपोर्टिंग सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र विशेष या विषय से जुड़ी घटनाओं से संबंधित हैं। इसमें वहाँ के मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करना होता है और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए यदि शेयर मार्किट में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाले संवाददाता को तथ्य पर आधारित एक रिपोर्ट तैयार करनी पड़ेगी जिसमें सभी आवश्यक सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे। परंतु विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके बाज़ारों में आई गिरावट के यों और या कारणों को स्पष्ट करने की कोशिश करेगा और साथ ही यह भी देखेगा कि इसका आम लोगों पर या प्रभाव पड़ेगा? इसी कारण बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा प्राप्त है।

(*iv*) सामान्य लेखन की अपेक्षा किसी विशेष विषय पर किए गए लेखन को विशेष लेखन कहते हैं। समाचार-पत्रों में विशेष लेखन की महत्वपूर्ण भूमिका है। अधिकांश अखबारों और पत्रिकाओं के अतिरिक्त दूरदर्शन और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग बॉक्स होता है और उस विशेष बॉक्स पर काम करने वाले पत्रकारों का समुदाय भी अलग होता है। इसी प्रकार खेल के समाचारों और फ़ीचर के लिए बॉक्स अलग होता है। इन बॉक्सों पर काम करने वाले उपसंपादक और संवाददाता संबंधित विषय या क्षेत्र में विशेषज्ञ होते हैं। वास्तव में खबरें कई प्रकार की होती हैं—राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान और किसी भी अन्य विषय से संबंधित। संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा विशेषकर उनकी रुचियों और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे 'बीट' कहा जाता है।

5. (*i*) रेडियो और टेलीविज़न का संबंध देश के प्रत्येक स्तर के व्यक्ति से है। इनके श्रोता और दर्शक पढ़े-लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान-मज़दूर तक सभी हैं। रेडियो और टी० वी० को इन सभी की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है इसलिए इनकी भाषा-शैली ऐसी होनी चाहिए जो सभी वर्गों और सभी स्तरों को सरलता से समझ आ सके। साथ ही साथ भाषा के स्तर और गरिमा के साथ भी कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में भाषा और शैली संबंधी निम्नलिखित विशेषताएँ अनिवार्य

रूप से होनी चाहिए—

(*a*) भाषा अति सरल होनी चाहिए।

(*b*) वाय छोटे, सीधे और स्पष्ट लिखे जाने चाहिए।

(*c*) भाषा में प्रवाहमयता होनी चाहिए।

(*d*) भ्रामक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(*e*) तथा, एवं, अथवा, व, किंतु, परंतु, यथा आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। इनकी जगह और, या, लेकिन आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

(*ii*) आज हमारे देश में दहेज प्रथा, बाल विवाह, जनसंख्या वृद्धि, कन्या भ्रूण हत्या आदि अनेक समस्याएँ हैं जिनमें कन्या भ्रूण हत्या एक भयंकर समस्या है। यह एक ऐसा जघन्य अपराध है जो देश की महानता और गौरव-गरिमा को धूमिल कर रहा है। वैज्ञानिक उन्नति ने इस अपराध को बढ़ावा देने का कार्य किया है। मेडिकल क्षेत्र में नवीन खोज से जो बड़ी-बड़ी और अति आधुनिक अल्ट्रासाउंड मशीनें आई हैं जिनका उपयोग जनकल्याण कार्यों के लिए किया जाना था। आज कुछ स्वार्थी लोग अपनी

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

स्वार्थपूर्ति हेतु उनका उपयोग गलत कार्यों के लिए कर रहे हैं। वे माता-पिता को जन्म से पूर्व ही अल्ट्रासासंड के माध्यम से यह बता देते हैं कि गर्भ में पल रहा भ्रूण बेटा है अथवा बेटी। हालाँकि ऐसा करना हमारे देश में कानूनी अपराध है किन्तु फिर भी कुछ लोग अपने लालच के कारण ऐसा कर रहे हैं जिससे माता-पिता एक बेटे की चाह में उस कन्या को जन्म से पहले ही गर्भ में मरवा देते हैं। इसका दुष्परिणाम यह है कि देश में लड़कियों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए। इसके लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति को कड़ी सजा देनी चाहिए।

(*iii*) नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार हैं—

(i) सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।

(ii) लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।

(iii) लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।

(iv) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।

(v) लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है।

(vi) लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।

खंड—ग

(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

उत्तर—6. (1) (घ)

(2) (क)

(3) (क)

(4) (घ)

(5) (ख)

उत्तर—7. (*i*) कवि बच्चन अपने जीवन का बोध कराते हुए कहते हैं कि मैं इस सांसारिक जीवन के भार को निरंतर वहन करता हुआ जीवनयापन कर रहा हूँ। मेरे जीवन पर इस जग का बहुत भार है लेकिन मैं इस भार को देख दुखी नहीं होता और न ही कभी विचलित होता हूँ। मैं अपने जीवन में असीम प्यार लिए घूम रहा हूँ। अपने विगत जीवन का स्मरण करते हुए कवि कहता है कि मेरे जीवन में किसी ने पदार्पण किया था तथा प्रेम-भरे हाथों से मेरी हृदय रूपी वीणा को झंकृत कर दिया था। आज मैं उनकी यादों के रूप में अपनी साँसों के दो तार लिए जी रहा हूँ। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि एक प्रिया का मेरे जीवन में आगमन हुआ था। उसने मुझे प्यार से छुआ था लेकिन उसका साथ नहीं रहा। बस यादों के रूप में उसके कोमल हाथों से झंकृत साँसों के तार लिए जीवन जी रहा हूँ। कवि कहता है कि मैं प्रेम रूपी मदिरा को पीने वाला हूँ। मैं इसी प्रेमरूपी मदिरा को पीकर इसी की मस्ती में डूबा रहता हूँ। मैं केवल अपने में मग्न रहता हूँ। मैं कभी भी संसार का ध्यान नहीं करता। कवि कहता है कि यह संसार स्वार्थी है। यह केवल उसको पूछता है, जो इसका बखान करते हैं और उसके अनुकूल कार्य करते हैं। अपने प्रतिकूल कार्य करने वालों को यह संसार कभी नहीं पूछता। कवि कहता है कि मैं तो अपनी मस्ती में डूबकर अपने मन का बखान करता हूँ, अपने मन की भावनाओं तथा संवेदनाओं को सुनाता रहता हूँ।

(*ii*) छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में यह अर्थ निहित है कि जिस प्रकार कागज़ का पन्ना चौकोर होता है उसी प्रकार खेत भी चौकोर होता है। खेत में बीज बोया जाता है फिर उसमें रसायन तत्व, पानी आदि डाले जाते हैं। तत्पश्चात उसमें से बीज अंकुरित होते हैं। वे अंकुर पत्तों और फूलों के रूप में पल्लवित होकर एक दिन पूर्णत: फ़सल बन जाते हैं। फिर एक दिन उस फ़सल की कटाई कर दी जाती हैं। ठीक इसी प्रकार कागज़ के पन्ने पर किसी कल्पना के सहारे कवि द्वारा अभिव्यक्ति रूपी बीज बोया जाता है। फिर वह बीज मूल कल्पना से विकसित होकर इस प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है, उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: वह एक पूर्ण कृति का स्वरूप ग्रहण कर लेता है उसमें से एक ऐसी अमृत रस-धारा निकलती है जो अनंतकाल तक समाप्त नहीं होती है।

(*iii*) इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने टेलीविज़न कैमरा तथा दूरदर्शन वालों पर व्यंग्य किया है जो अपने-आपको हर तरह से समर्थ मानकर किसी अपाहिज व्यति की संवेदनाओं से खिलवाड़ करते हैं। ये शारीरिक चुनौती झेलते लोगों की दुर्बलता का बार-बार अहसास कराकर उन्हें कुंठित करते हैं जो अपनी प्रसिद्धि के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हैं।

उत्तर—8. (*i*) **भाव सौंदर्य—**श्री हरिवंश राय बच्चन ने प्रस्तुत काव्यांश में संसार को स्वयं से भिन्न स्थापित किया है। कवि का मंतव्य है कि यह संसार उससे बिलकुल भिन्न है। उसके विचार, उसकी भावनाएँ इस क्रूर संसार से समन्वय स्थापित नहीं कर सकतीं। इसका दृष्टिकोण उससे बिलकुल अलग है अत: इस संसार के साथ उसका कोई संबंध नहीं हो सकता। यह संसार तो केवल एक परिपाटी पर अपना जीवनयापन कर रहा है, जबकि वह प्रतिदिन ऐसे अनेक लोक बनाकर उन्हें नष्ट कर देता है।

काव्य सौंदर्य—

(*a*) प्रस्तुत अवतरण श्री हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित 'आत्म-परिचय' नामक कविता से अवतरित है। इसमें कवि ने संसार को स्वयं से बिलकुल भिन्न स्थापित किया है।

(*b*) खड़ी बोली की भाषा सरल, सरस एवं भावमयी है।

(*c*) शैली अत्यंत गंभीर एवं रोचक है।

(*d*) तत्सम, तद्भव एवं उर्दू व फ़ारसी के श8दों का समन्वय है।

(*e*) 'और-और' में भिन्नार्थक आपूर्ति होने से यमक अलंकार की शोभा है।

(*f*) 'बना-बना' में पुनरुतिप्रकाश की छटा है।

(*g*) इसके साथ इसमें अनुप्रास, पदमैत्री अलंकारों का प्रयोग भी हुआ है।

(*h*) शैली गीतिमयता से परिपूर्ण है।

(*i*) माधुर्य गुण का समावेश है।

(*j*) शांत रस है।

(*k*) बिंब योजना सार्थक एवं सारगर्भित है।

(*ii*) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कवि ने अपंग व्यति के प्रति करुणा-भाव प्रकट किए हैं लेकिन टेलीविज़न-कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तथा अपने कारोबार के कारण उस अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैये को अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनहीनता का रवैया अपनाता है जिस कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूर भाव पनप जाते हैं।

(*iii*) भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। सदियों से यहाँ विवाह की परंपरा रही है कि बेटी के माँ-बाप को बेटे के माँ-बाप के यहाँ हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक रस्म अदा करते हैं। अत: बेटे के घरवालों को बेटी के घरवाले अधिक समान और इज़्ज़त देते हैं। इस प्रकार यदि इस सवैये में कवि का बेटा सों बेटी न ज़्हायब कहते तो सामाजिक अर्थ

HOLY FAITH INTERNATIONAL

बिलकुल विपरीत हो जाता अर्थात बेटे की जगह बेटी अर्थात पुरुष की जगह स्त्री का वर्चस्व प्रकट होता जिससे भारतीय समाज की परंपरा भी टूट जाती।

उत्तर—9. (1) (ग)
(2) (ख)
(3) (ग)
(4) (क)
(5) (ख)

उत्तर—10. (*i*) गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है क्योंकि अनावृष्टि के कारण चारों तरफ सूखा पड़ जाता है। कुएँ, तालाब भी सूख जाते हैं। कहीं भी पानी का नामो-निशान नहीं रहता। पीने का पानी बिलकुल नहीं रहता, जिससे पशु-पक्षी प्यास के कारण व्याकुल होकर मरने लगते हैं।

(*ii*) श्रम-विभाजन को निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता माना गया है। परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं है। श्रम-विभाजन से अभिप्राय है—अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण, जबकि श्रमिक-विभाजन से तात्पर्य है—जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निर्धारित करना। भारत जैसे देश में जाति-प्रथा के आधार पर ही श्रम-विभाजन किया जाता है।

(*iii*) हाँ, हम इस बात से सहमत हैं कि बाज़ार किसी का लिंग, जाति-धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, बल्कि वह सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शक्ति को देखता है। बाज़ार एक ऐसा स्थल है जहाँ पर हर जाति, लिंग, धर्म का व्यक्ति जाता है। वहाँ किसी को भी धर्म-जाति के आधार पर नहीं पहचाना जाता बल्कि प्रत्येक निम्न, उच्च, अमीर-गरीब की पहचान वहाँ एक ग्राहक के रूप में होती है। इस दृष्टि से इस स्थल पर पहुँचकर प्रत्येक धर्म, जाति, मज़हब का मनुष्य केवल ग्राहक कहलाता है। बाज़ार की दृष्टि में यहाँ सब उसके ग्राहक होते हैं और वह ग्राहक का कभी धर्म, जाति या मज़हब देखकर व्यवहार नहीं करता बल्कि वह तो सिर्फ़ ग्राहक की क्रय-शति देखकर ही उसके साथ व्यवहार करता है। यानी जो मनुष्य जितनी क्रय-शक्ति रखता है बाज़ार उसे उतना ही महत्व देता है, उतना ही सम्मान देता है। इस प्रकार बाज़ार एक प्रकार से सामाजिक समता की रचना कर रहा है। जहाँ पहुँचकर प्रत्येक धर्म, जाति, मज़हब, अमीर-गरीब, निम्न-उच्च व्यक्ति केवल ग्राहक कहलाता है।

उत्तर—11. (*i*) डॉ० आंबेडकर ने एक स्वस्थ आदर्श समाज की संकल्पना की है। इस समाज में स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व का साम्राज्य होगा। इसमें इतनी गतिशीलता होगी कि कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सकेगा। समाज के बहुविधि हितों में सबका समान भाग होगा तथा सब उन हितों की रक्षा हेतु सजग रहेंगे। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपल8ध होंगे। दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा होगा। हर कोई अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और समान की भावना रखेगा।

(*ii*) वर्तमान समाज में चारों ओर मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खराबा का बोलबाला है। मानव सभ्यता घोर संकट से परिव्याप्त है। सत्य, अहिंसा आदि आदर्श कहीं भी दिखाई नहीं देते। जन-जन आतंक की छाया में जी रहा है। वर्तमान सभ्यता में मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में अविलंब हिंसा, मारकाट, लूट-पाट पर उतावला हो उठता है। वह सत्य-अहिंसा की अपेक्षा असत्य, हिंसा, मार-काट का पालन करता है। निजी स्वार्थों की पूर्ति करने में उसे किसी का भी अहित दिखाई नहीं देता। लेखक ने ऐसे संकट के समय सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को याद किया है। वे दोनों बाहर से कठोर और दृढ़ थे लेकिन दोनों ही भीतर से कोमल थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में वे अविचल थे। उन दोनों को हानि-लाभ से कोई मतलब ही नहीं था।

(*iii*) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा योंकि कभी-कभी भक्तिन उसके घर में इधर-उधर पड़े पैसों को भंडारघर की मटकी में छिपा देती थी। जिस बात से लेखिका को क्रोध आ जाता था उसे वह बदलकर इधर-उधर करके बताया करती थी। वह ऐसी बात को अपनी ओर से और चुटीली बनाकर कहा करती तथा थोड़ा झूठ-सच का मिश्रण कर बात को बदल देती थी।

उत्तर—12. (*i*) श्री सौंदलगेकर कथा-नायक के पाँचवीं कक्षा में मराठी के मास्टर थे। वे कविता के अध्यापन के साथ कविता गाया भी करते थे। जब वे कक्षा में कोई कविता पढ़ाया करते तो उसे गाने के साथ, हाव-भाव के अनुसार अभिनय भी किया करते थे। वे कविता को गाते समय ताल, छंद, लय, गति और यति का पूरा ध्यान रखते थे। जब कक्षा में मास्टर जी कविता गाते तो लेखक उन्हें खूब ध्यान लगाकर सुना करते थे। मास्टर जी कक्षा में कवि यशवंत, बा०भ० बोरकर, भा०रा० ताँबे, गिरीश तथा केशव कुमार आदि कवियों की कविताएँ सुनाते तथा उनके साथ अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाया करते थे। मास्टर जी स्वयं भी कविता किया करते थे। कभी-कभी वे अपनी कोई कविता कक्षा में सुनाते थे। लेखक मास्टर जी से इतने प्रभावित हुए कि वे कविता को गाने लगे तथा साथ ही अभिनय करने लगे। उन्होंने बड़ी कक्षाओं के बच्चों के सामने लेखक को कविता सुनाने के लिए प्रेरित किया। जब लेखक कोई कविता बनाते तो अगले दिन मास्टर जी को दिखाया करते थे। मास्टर जी उनकी कविता को ध्यान से पढ़ते और उन्हें शाबाशी दिया करते थे। उन्होंने लेखक को छंद, लय, अलंकार, भाषा-शैली और शुद्ध लेखन के बारे में समझाया। उनके अध्यापन की इन्हीं विशेषताओं के कारण कवि के मन में कविता के प्रति रुचि पैदा होने लगी।

(*ii*) मुअनजो-दड़ो की सयता के भग्न अवशेषों में से 50,000 से अधिक वस्तुएँ प्राप्त हो चुकी हैं। पर उनसे हथियार एक भी प्राप्त नहीं हुआ। साथ ही राजसत्ता या स्वामित्व प्रदर्शित करने वालों को अवशेष प्राह्वश्वत हुए हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि सिंधु घाटी सभ्यता का समाज अति अनुशासित और मज़बूत था जिसे राजसत्ता की आवश्यकता ही नहीं थी। सबका समाज न तो धर्म द्वारा शासित था और न ही राजनीति के द्वारा चालित। वह अपने ही बल पर अनुशासित था।

(*iii*) लेखक ओम थानवी जब मुअनजो-दड़ो की यात्रा पर गए तो उनके गाइड ने एक छोटा अजायबघर भी दिखाया था। लेखक के अनुसार—''यह अजायबघर छोटा है जैसे किसी कस्बाई स्कूल की इमारत हो, सामान भी ज़्यादा नहीं है।'' इस अजायबघर में रखी चीज़ों की संख्या पचास हज़ार से अधिक रही होगी। मुअनजो-दड़ो की खुदाई से मिली अहम चीज़ें अब कराची, दिल्ली और लंदन के अजायबघरों में रखी हुई हैं। इस अजायबघर में जो चीज़ें रखी गई हैं वे सिंधु सभ्यता के साक्षात दर्शन करवा देती हैं। काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बरतन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद-भांड, उनपर काले-भूरे चित्र, दो ताँबे के आइने, कंघी, मिट्टी के बरतन, दो पाटन की चकी, मिट्टी की बैलगाड़ी और दूसरे खिलौने। रंग-बिरंगे पत्थरों के मनकों वाले हार, चौपड़ की गोटियाँ, कंगन और सोने के कंगन। सोने के कंगन अब शायद चोरी हो गए हैं। इस प्रकार सभ्य समाज का जो साजो-सामान होता है वह सब सिंधु घाटी की सभ्यता में देखने को मिलता है। इस प्रकार सिंधु सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में सबसे अनूठी एवं संस्कृति प्रधान सभ्यता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL